कर्मभूमि

हिन्दी यू. एस. ए. की त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष ७ अंक ११

हिन्दी USA

ग्यारहवें हिन्दी महोत्सव पर

हिन्दी भाषा विशेषांक

मई २०१२

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

To Find Out How You Can Bring Your Career to **LIFE** Contact me Today

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 319-8758

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 399 Thornall Street, 7th Floor Edison, NJ 08837

EOE.M/F/D/V

454352 CV 8/19/2013

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

अर्चना कुमार (सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका) - 732-372-1911

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (तकनीकी संयोजक) - 908-361-0220

हिन्दी भवन समिति

संजय गुप्ता (संयोजक) - 646-228-1002

सुमन दाहिया शाह (प्रचार एवं प्रसार संयोजिका)-732-429-2134

सूर्य नारायण सिंह (तकनीकी संयोजक) - 732-648-3150

शिक्षण समिति

रचिता सिंह - कनिष्ठा 1, वरिष्ठ स्तर 2

धीरज बंसल - कनिष्ठा 2

मोनिका गुप्ता - प्रथमा 1 स्तर

अर्चना कुमार - प्रथमा 2 एवं मध्यमा 2

रश्मि सुधीर - मध्यमा 1

सुशील अग्रवाल - वरिष्ठ स्तर 1

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडीसन: राज मित्तल (732-423-4619),

माणक काबरा (718-414-5429), गोपाल चतुर्वेदी (908-720-7596)

सा. ब्रुंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733),

पंकज जैन (908-930-6708), प्रतीक जैन (646-389-5246)

मॉटगोमरी: सुधा/शिव अग्रवाल (908-359-8352)

पिस्कैटवे: दीपक/नूतन लाल (732-763-3608)

ई. ब्रुंस्विक: मैनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: अर्चना कुमार (732-372-1911)

जर्सी सिटी: मुरली/संध्या तुल्शियान (201-533-9296)

प्लेंसबोरो: रॉबिन दाश (609-275-7121), गुलशन मिर्ग (917-597-5443)

लावरेंसविल: रत्ना पाराशर (609-584-1858), मीना राठी (609-273-8737)

ब्रिजवाटर: राज बंसल (732-947-4369)

चैरी हिल: देवेन्द्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

फ्रैंक्लिन: दलवीर राजपूत (732-422-7828)

होमडेल: सुषमा कुमार (732-264-3304)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉरवॉक: बलराज सुनेजा (203-613-9257), विक्रम भंडारी (203-434-7463)

नॉर्थ ब्रुंस्विक: गीता टंडन (732-789-8036), माला महाराणा (848-248-2716),

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

सभी पाठकों के समक्ष ग्यारहवें हिंदी महोत्सव के अवसर पर 'कर्मभूमि' का **हिंदी भाषा विशेषांक** प्रस्तुत है। जो यात्रा कुछ गिने-चुने व्यक्तियों द्वारा 12 वर्ष पहले प्रारंभ हुई थी, वह अब एक कारवाँ बन कर और अनगिनत लोगों का योगदान पाकर, हिंदी भाषा के बोल कितनी ही गलियों, कूचों, और शहरों में गुँजायमान कर चुकी है। हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं से सैकड़ों विद्यार्थी हिंदी भाषा की शिक्षा ग्रहण करके अपने माता-पिता की इच्छाओं की पूर्ति करते हुए एक ऐसे पुल का निर्माण कर रहे हैं, जिससे आने वाली पीढ़ी यशस्वी इतिहास से अपना अनवरत संबंध बनाए रख सकेंगी।

मैंने स्वयं देखा है कि जो बच्चे हिंदी में संवाद कर लेते हैं, और हिंदी भाषा में लिपिबद्ध कहानियाँ और कविताएँ पढ़ लेते हैं, वे हिंदू संस्कृति और भारतीय सभ्यता को ज्यादा अच्छी तरह से समझ पाते हैं, और उनसे स्वाभाविक रूप से जुड़े रहते हैं। हिंदी भाषा हिंदू संस्कृति का अभिन्न अंग होने के साथ-साथ प्रमाणित वैज्ञानिक भाषा है, जो मस्तिष्क के दोनों भागों को पूर्ण रूप से विकसित करती है, जिससे हमारी मानसिक चिंतन की क्षमता और तकनीकी विषयों की जटिलता को हल करने में वृद्धि होती है। सभी भारतीय भाषाएँ हमारे मस्तिष्क और चरित्र का उचित विकास करने में पूर्णतया समृद्ध हैं, और हिंदी को सभी भाषाओं की राजधानी के रूप में स्वीकार करके हमें उसके गौरव को बढ़ाना चाहिए। इससे हमें अपनी खोई हुई पहचान फिर से वापस मिलेगी।

हिंदी भाषा से भी अधिक महत्वपूर्ण है भारतीय संस्कृति और सभ्यता। यदि हमारी सभ्यता नष्ट होती है तो उसका सीधा प्रभाव हिंदी भाषा पर पड़ेगा, क्योंकि वह समृद्ध संस्कृति का एक हिस्सा है। यदि बच्चे को बचाना है तो गर्भ को बचाना अनिवार्य है। यदि हम गंगा नदी के उद्गम स्थल की रक्षा कर पाए तो यह पवित्र नदी अवश्य बचेगी।

पाश्चात्य सभ्यता के अधिक विकसित होने से भारतीय सभ्यता क्षीण होती है। इन सभ्यताओं का मेल वैसे ही असंभव है, जैसे तेल और पानी के मिश्रण का। इसलिए कॉनवेंट या अंग्रेजी माध्यम की पाठशालाओं में भारतीय सभ्यता की झलक उतनी स्पष्ट नहीं दिखती, जितनी की वह गुरुकुल पद्धति द्वारा संचालित पाठशालाओं में दिखती है।

भारतीय सभ्यता में क्या विशेषताएँ हैं, और यह पाश्चात्य सभ्यता से किस तरह भिन्न तथा असंगत है, इसका सटीक चित्रण डॉ. राजीव मलहोत्रा जी की पुस्तक, 'Being Different', में बहुत ही वैज्ञानिक और यथार्थपूर्ण ढंग से किया गया है। मैंने आज तक जितनी पुस्तकें पढ़ी हैं, उनमें 'Being Different' का स्थान सबसे ऊपर वाली पायदानों में से एक है। इस पुस्तक में पाश्चात्य सभ्यता को भारतीय दृष्टिकोण की कसौटी पर रख कर तौला गया है, और भारतीय संस्कृति की ऐसी विशेषताओं को उजागर किया गया है, जिन्हें बचाना अति आवश्यक है। मुझे आशा है कि हिंदी महोत्सव के सभी दर्शक हिंदी विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम से तैयार किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों, हास्य कवि सम्मेलन, और राजीव मलहोत्रा जी के व्याख्यान का आनंद उठाने के साथ-साथ 'Being Different' की कम से कम एक प्रति अवश्य खरीदेंगे, और उसे पढ़ेंगे। आपके द्वारा भारतीय संस्कृति के उत्थान में दिए जाने वाले योगदान का यह श्रीगणेश होगा।

देवेंद्र सिंह, स्वयंसेवक, हिंदी यू.एस.ए.

कर्मभूमि

लेख–सूची

संपादकीय -	देवेन्द्र सिंह	2
आपके पत्र -		4
हिंदी यू.एस.ए. के प्रमुख उद्देश्य -		5
हिंदी यू.एस.ए. का परिचय -		7
कविता पाठ प्रतियोगिता -		8
वार्षिक गतिविधियाँ -		9
हिंदी भाषा का प्रचार करें -	रितु जग्गी	11
आदर्श शिक्षक एवं विद्यार्थी -	गीता टंडन	12
हिंदी की सच्ची तस्वीर -	वंदना गुप्ता	13
मोसे छल किए जाय -	रवींद्र अग्निहोत्री	15
हमारे अतिथि -		23
शिक्षिकाओं की परिचर्चा -		25
विदेशों में हिंदी शिक्षण -	अनीता कपूर	29
भले-बुरे का निर्णायक कौन -	सविता नायक	33
इसलिए मेरा भारत महान -	अर्चना कुमार	35
हिन्दी क्यों सीखनी चाहिए -	डॉ. मधुसूदन	37
आशा भोंसले का तमाचा -	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	41
देवनागिरी लिपि -	शिवसागर सिंह	42
ग्लोबल विलेज की नई परिभाषा -	निरुपमा कपूर	44
धर्म निरपेक्षता किधर -	जगदीश चंद्र पंत	46
बचपन की यादें -	मोनिका मिर्ग	52
शोषण से लेकर सशक्तीकरण -	प्रीत अरोड़ा	53
भाषा का सही प्रयोग -	श्वेता सीकरी	56
शृंगार है हिंदी -	रामेश्वर काम्बोज	58
संगीत का महत्व -	हरप्रीत कलसी	59
महाभारत के प्रश्न उत्तर -	सुधा अग्रवाल	61
भारतीय किसान -	अनीता दानी	68
हनुमान चालीसा चौपाई -	अर्चना कुमार	69
हिंदी कविता -	कमला निपुर्खा	70
गजलें -	सूबे सिंह 'सुजान'	71
Being Different का सारांश -		72
कविता -	पुनीता वोहरा	74
न्यू ब्रुंस्विक होली -		75
कविताएँ -	शानू सिन्हा	77
तीन वैदिक कविताएँ -	प्रभु मिश्रा	79

संपादक

देवेंद्र सिंह, सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

माणक काबरा
अर्चना कुमार
राज मित्तल

कार्टून चित्र -	यश मिर्ग	81
शब्द पहेली -		82
विद्यार्थियों के चित्र, लेख व कविताएँ -		84
हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाएँ -		102

लिखना एक कला है, जो हमारे मस्तिष्क, व्यक्तित्व, और चरित्र का विकास करती है। इसे जीवित रखें।

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

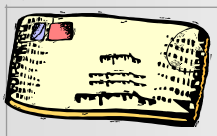

आपके पत्र

भाई देवेन्द्र सिंह जी इतना खूबसूरत अंक निकालने के लिए बहुत- बहुत बधाई !

आपका

हिमांशु काम्बोज

श्रीमान

देवेन्द्र जी

जय हिंद !

कर्मभूमि का नया अंक पढ़ा, अत्यंत प्रशंसनीय! पेज ७९ एवं ८० पढ़कर बेहद ख़ुशी हुई, मेरी कविताओ को प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद!

पत्रिका की अन्य सामग्री भी बेहद रोचक है! संपादकीय बहुत सुन्दर लिखा है, और बहुत प्रभावित करता है, कर्मभूमि को मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाये !

मनोज चौधरी

आओ चुनाव करें कि मैं प्रार्थना के रास्ते पर खड़ा होऊँगा। मेरे जीवन की लकड़ियाँ जलेंगी, पर चूल्हे की राख में जलकर राख नहीं बनेंगी। सेवा के हवनकुण्ड में जलकर विभूति बनेंगी....

के प्रमुख उद्देश्य

हिन्दी यू.एस.ए. पिछले बारह वर्षों से निम्न उद्देश्यों की पूर्ति में संलग्न है।

1. अमेरिका में जन्मी प्रवासी पीढ़ी को हिन्दी का बुनियादी ज्ञान देना, जिसके लिए हिन्दी यू.एस.ए. निम्न कार्य कर रहा है:
   - अमेरिका के विभिन्न राज्यों में हिन्दी पाठशालाओं की स्थापना करना।
   - विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम तैयार करना।
   - शिक्षकों को स्तरों के अनुसार प्रशिक्षित करना।
   - हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन तथा चयन करना जो कि विदेशी बच्चों के लिए उपयोगी हो सकें|
   - समय-समय पर नूतन शिक्षण सामग्री को पाठ्यक्रम में शामिल करना और बनवाना।
   - प्रतिवर्ष मौखिक तथा लिखित परीक्षा का आयोजन करना।
   - प्रोत्साहन के लिए बच्चों को पदक प्रदान करना।
   - बच्चों को हिन्दी ज्ञान प्रदर्शन के लिए विशाल मंच उपलब्ध करवाना।
2. अमेरिका के स्कूलों में हिन्दी को एक एच्छिक भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास करना।
3. अमेरिका के स्कूल में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षिकों को तैयार करना।
4. हिन्दी के प्रति जन मानस की जागरुकता को बढ़ाना तथा आने वाली पीढ़ी के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम जागृत करना -

   इसके लिए हिन्दी यू.एस.ए.:
   - प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव का आयोजन करता है, इसमें 2,000 से अधिक बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं तथा नृत्य में भाग लेते हैं।
   - भारत से कवियों को आमंत्रित कर हिन्दी साहित्य को मनोरंजन, शिक्षा, और हिन्दी प्रेम से जोड़ना।
   - हिन्दी महोत्सव द्वारा विभिन्न प्रांत के लोगों को आपस में जोड़ना।

- पुस्तकों की प्रदर्शनी द्वारा हिन्दी साहित्य तथा लेखन का प्रचार करना। हिन्दी सीखने व अभ्यास करने की सामग्री उपलब्ध कराना।
- प्रतिवर्ष प्रवासी कवियों को प्रोत्साहन एवं सम्मान देने हेतु "स्थानीय कवि सम्मेलन" को हिन्दी दिवस के रूप में मनाना।

5. भारतीय बाजारों में दुकानों के नामों को हिन्दी में लिखवा कर भारतीयों में से हीन भावना को निकाल कर अपनी भाषा के प्रति गर्व का रोपण करना।

6. भाषा के प्रति जागरुकता, लेखन के प्रति सक्रियता, काव्य के प्रति रचनात्मकता को जीवित रखने तथा हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लेखन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए हिन्दी यू.एस.ए. की ई-पत्रिका "'कर्मभूमि'" प्रकाशित करना।
7. हिन्दी भवन के निर्माण के लिए सक्रिय अभियान प्रारंभ करना।
8. बच्चों के कार्यक्रम रेडियो पर करवा कर उन्हें हिन्दी बोलने के लिए प्रोत्साहित करना।
9. भारतीय संस्कृति संबंधित कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना, और भारतीय त्योहारों और परम्पराओं से अमेरिकी समाज को परिचित कराना।
10. भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म की रक्षार्थ कार्य कर रहे विशेष व्यक्तियों को सम्मानित करना।
11. भारतीय समाज के लिए उपयोगी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद करवाना।
12. बड़े नगरों के पुस्तकालयों में हिन्दी पुस्तकें उपलब्ध करवाना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति आपके सहयोग के बिना असंभव है।

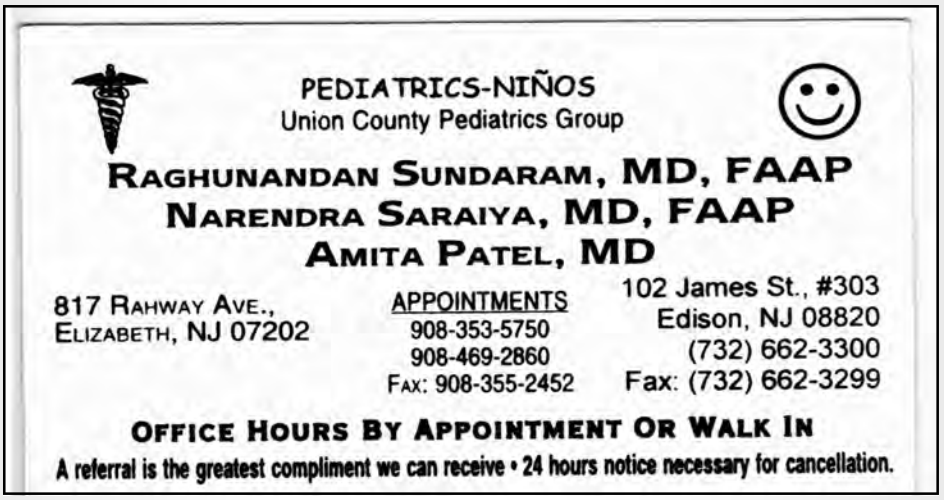

ग्यारहवें हिंदी महोत्सव में आपका स्वागत है

एक परिचय

हिन्दी यू.एस.ए. हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी की सेवा करने वाले स्वयंसेवकों का एक ऐसा संघ है, जिसके प्रत्येक कार्यकर्ता का केवल एक ही सपना है कि हमारी प्यारी हिन्दी भाषा अपने स्वाभिमानी सिंहासन पर पुन: सत्तारूढ़ हो सके। अपने इस स्वप्न को पूरा करने के लिए सभी कार्यकर्ता वर्ष में 365 दिन कार्यरत रहते हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसा संघ है, जिसमें कोई पदाधिकारी नहीं है। सभी कार्यकर्ता केवल स्वयंसेवक हैं, तथा अपनी-अपनी कार्यक्षमता के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इस समूह की एक और विशेषता है कि इसका सदस्य बनने के लिए कोई सदस्यता शुल्क राशि के रूप में निर्धारित नहीं है। हिन्दी यू.एस.ए. का सदस्य बनने का अर्थ है कि आप तन मन और धन से हिन्दी के बढ़ाने के कार्यों में अपना पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. में 50 मुख्य स्वयंसेवकों के अतिरिक्त 250 शिक्षक-शिक्षिकाएँ, 4,000 विद्यार्थी गण, तथा लगभग 6,000 अभिभावक शामिल हैं, जो भारतीय संस्कृति के उत्थान, धर्म की रक्षा, तथा हिन्दी की उन्नति के प्रति पूर्ण जागरूक हैं, और नियमित रूप से विभिन्न सभाओं, कार्यक्रमों, तथा विपत्रों द्वारा अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहते हैं। क्या आप भी इस समूह के साथ मिल कर भारत की राष्ट्र-भाषा के लिए काम करना चाहेंगे? यदि हाँ, तो आज ही इस विशिष्ठ व अनोखे समूह के सदस्य बनें।

अधिक जानकारी के लिए आप हमारी वेबसाईट www.hindiusa.org देख सकते हैं, या हमें 877-HINDIUSA अथवा hindiusa@hindiusa.org पर संपर्क कर सकते हैं। अपनी जन्मभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों से अवगत होइये और एक जागरूक नागरिक बनिए। यही हमारा स्वप्न है।

२०१२- सेमी-फ़ाइनल कविता प्रतियोगिता

"चमक उठी सन ५७ में यह **तलवार पुरानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी", "सिलवा दो माँ मुझे उन का मोटा एक झिंगोला", "पन्ना धाय का बलिदान", "हिंदी माथे की बिंदी", "जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है" , "लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"**:

ये सभी प्रसिद्ध कविताएँ कई-कई बार बच्चों द्वारा सुनाई गयीं, सुनकर बचपन की समस्त यादें ताजा हो आती हैं, और मन मयूर नाचने लगता है| पिछले कई वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. अपनी समस्त पाठशालाओं में विभिन्न स्तरों में बालकों की कविता पाठ प्रतियोगिताएँ आयोजित करता आया है| इस वर्ष (२०१२) की सेमी-फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता फरवरी ११ को न्यू जर्सी की मोनरो टाउनशिप मिडल स्कूल में आयोजित हुई| यह अपने आप में एक भव्य आयोजन था, जिसमे संस्था की समस्त पाठशालाओं के ४०० से अधिक पाठशाला स्तर पर विजेता छात्रों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया| प्रतियोगिता सुबह १० बजे से प्रारंभ हुई और रात्रि ९ बजे तक निर्विराम चलती रही| बच्चों में अपार जोश था, तथा उन्होंने पूर्ण तैय्यारी, लगन तथा उत्साह के साथ आपनी अपनी कविताओं का पाठ किया |

किसी ने समझाया है कि कविता क्या है: "किसी देश के बाहरी हाल तो हम इतिहास से जान सकते हैं...लेकिन उस समय के आंतरिक भाव, उस समय की कविताओ से ही जाने जा सकते हैं, अतः उस समय अगर ह्रदय उल्लसित होगा तो खुशी की कवितायें मानव ह्रदय गायेगा..और इसी प्रकार दुखी मन की छाया भी स्पष्ट रूप से उस समय के कविता सृजन से जानी जा सकती है| सुभद्रा कुमारी चौहान की सर्वलोकप्रिय कविता "झाँसी की रानी" अपने आप में एक महान कविता है, जिसे कई बच्चों ने सुनाकर वातावरण को ओजस्वी बना दिया| श्रोताओं में ऐसा कोई बिरला ही होगा जिसमें यह कविता सुनकर राष्ट्रप्रेम और सम्मान न जागा हो| एक छात्र ने पन्ना धाय के बलिदान की गाथा उसी प्रकार की वेशभूषा धारण करके सुनायी, जिसे सुन और देखकर रोंगटे खड़े हो गए| धन्य हैं ये सभी छात्र, इनके अभिभावक एवं अध्यापक जिन्होंने इतना श्रम करके छात्रों को इन कविताओं के लिए प्रेरित किया| जैसा कि कहा जाता है "एक चित्र हजार शब्दों के बराबर अभिव्यक्ति करने में सक्षम होता है, इसी मंतव्य से मेरा यह भी मानना है कि कविता की एक पंक्ति, कई हज़ार शब्दों की अभिव्यक्ति कभी- कभी कर देती है, यदि इसे अंतर्मन से पढ़ा और समझा जाये तो |

छोटे- छोटे बच्चों का मंच पर आकर लम्बी बड़ी तथा जटिल शब्दों में बुनी कविताओं का धाराप्रवाह वाचन, विभिन्न मुद्राओं तथा भावों के साथ करना अपने आप में एक शौर्यपूर्ण कार्य है| सभी बच्चे इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं |

हिंदी यू.एस.ए. की वार्षिक गतिविधियाँ

हिंदी यू.एस.ए. का सत्र 2011-12 विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से भरपूर रहा। हिंदी यू.एस.ए. की विभिन्न पाठशालाओं में वर्ष भर अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलते रहे। हिंदी यू.एस.ए. का सत्र प्रति वर्ष सितंबर माह के द्वितीय शुक्रवार से प्रारंभ होता है। अप्रैल माह से ही हिंदी कक्षाओं के लिए पंजीकरण प्रारंभ हो जाता है, किंतु सबसे अधिक प्रवेश सितंबर माह में होते हैं। विद्यार्थियों के साथ-साथ अनेक नए स्वयंसेवकों तथा शिक्षकों का भी संस्था में प्रवेश होता है। अनेक शिक्षिकाओं के हिंदी कक्षा के स्तरों में भी परिवर्तन होता है। इन सभी को हिंदी यू.एस.ए. की कार्यप्रणाली तथा शिक्षण विधि से अवगत कराने के लिए सितंबर तथा अक्टूबर के माह में विभिन्न स्तरों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में स्तर से संबंधित पुस्तकों, शिक्षण सामग्री का उपयोग, शिक्षण विधियाँ, समस्याएँ, तथा उनके समाधानों के बारे में चर्चा हुई।

अक्टूबर के माह में सभी पाठशालाओं में दशहरा मनाया गया। एडिसन हिंदी पाठशाला के कुछ विद्यार्थियों ने एडिसन के दशहरा समारोह की झाँकियों में सक्रिय भाग लिया। इसी दशहरा समारोह में हिंदी यू.एस.ए. ने प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी हिंदी पुस्तकों तथा सामग्रियों का स्टॉल लगाया।

नवम्बर के माह में सभी पाठशालाओं ने विभिन्न प्रकार से दीपावली का त्यौहार मनाया। कुछ पाठशालाओं ने दिवाली शिल्प करवाया, रांगोली बनवाई, भारतीय वेशभूषा, भोजन, मिठाइयों, आदि के बारे में चर्चा की। हम दिवाली क्यों और कैसे मनाते हैं, यह बताया। कुछ पाठशालाओं ने दिवाली भोज तथा रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया। सभी विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को हिंदी यू.एस.ए. की ओर से दिवाली की मिठाई बाँटी गई।

दिसंबर माह में सभी शिक्षकों तथा उनके परिवारों को हिंदी यू.एस.ए. ने धन्यवाद देने के लिए प्रतिवर्ष की तरह शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया, जिसमें 200 से अधिक शिक्षकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में शिक्षकों ने अपने कौशल को दिखाते हुए अनेक स्मरणीय रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत लिए। हिंदी यू.एस.ए. ने सभी शिक्षकों को रात्रिभोज के साथ-साथ उपहार प्रदान किए, तथा मंच पर बुला कर सम्मानित किया। दिसंबर माह में सभी पाठशालाओं के सभी स्तरों की प्रथम जाँच परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी यू.एस.ए. द्वारा बनाए प्रश्न पत्र सभी पाठशालाओं को भेजे गए, तथा सभी ने लिखित और मौखिक जाँच परीक्षाएँ लीं।

जनवरी माह में सभी पाठशालाओं ने अपनी-अपनी पाठशालाओं में कविता पाठ प्रतितोगिता का आयोजन किया, तथा अपनी पाठशाला के कुछ श्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुना, जो दूसरी पाठशालाओं के चुने हुए प्रतियोगियों से प्रतिस्पर्धा कर सकें। इसमें सभी पाठशालाओं के लगभग 2,000 बच्चों ने भाग लिया।

फरवरी माह में चुने हुए विद्यार्थियों के बीच सेमी फाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन मोनरो मिडिल स्कूल के सभागार में किया गया, जिसमें आठ स्तरों के लगभग 450 विद्यार्थियों ने भाग लिया। ये विद्यार्थी हिंदी यू.एस.ए. की सत्रह पाठशालाओं से चुने गए थे। यह प्रतियोगिता सुबह 10 बजे से रात के 8 बजे तक चली, तथा प्रत्येक स्तर से 10 सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को अंतिम प्रतियोगिता के लिए चुना गया, जो प्रतिवर्ष हिंदी महोत्सव में होती है।

मार्च के माह में सभी स्कूलों में तथा स्वयंसेवक सभा में 'होली मिलन' का आयोजन किया गया। सबने एक दूसरे को गुलाल लगाया, गले मिले, तथा मिठाइयाँ खायीं। इसी माह में हिंदी यू.एस.ए. द्वारा द्वितीय जाँच परीक्षा का आयोजन किया गया।

अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं ने वार्षिक मौखिक परीक्षा का आयोजन किया। इस माह से सभी पाठशालाओं में पाठ्यक्रम का दोहराव तथा महोत्सव के कार्यक्रमों का अभ्यास जोरों पर रहा।

मई में हिंदी यू.एस.ए. द्वारा दसवाँ हिंदी महोत्सव आयोजित किया गया, जो द्विदिवसीय कार्यक्रम होता है। इस वर्ष इस कार्यक्रम में लगभग 2,000 बच्चों ने भाग लिया। पहले दिन बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, नाटक, गीत, नृत्य नाटिका आदि प्रस्तुत किए गए, जो सुबह 10 बजे से रात को 9 बजे तक चले। दूसरे दिन पुन: 10 बजे से कार्यक्रम कविता पाठ से प्रारंभ हुआ। कविता पाठ के बाद इस वर्ष स्नातक हुए विद्यार्थियों को पदक प्रदान किए गए, और फिर शानदार कवि सम्मेलन चला, जिसमें दर्शक पूरी तरह डूब गए।

जून में हिंदी यू.एस.ए. अपना इस सत्र का अंतिम पड़ाव पूरा करेगा। वार्षिक हिंदी परीक्षा का आयोजन तथा प्रगति-पत्र वितरण समारोह के साथ ही हिंदी यू.एस.ए. यह सत्र सफल वर्ष के रूप में समाप्त होगा।

ये तो वर्ष भर की वे गतिविधियाँ थीं जो सबको प्रत्यक्ष दिखाई दीं, पर इन गतिविधियों के पीछे अनेक अप्रत्यक्ष गतिविधियाँ छुपी रहीं, जैसे मासिक सभाएँ, दूरभाष सभाएँ, विपत्रों के आदान-प्रदान, विशेष सभाएँ, आदि।

हिंदी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देता है, जिनके कारण सत्र 2011-12 एक सफल सत्र बन सका।

रितु जग्गी जी चैरी हिल पाठशाला में मध्यमा 1 की शिक्षिका हैं। ये हिन्दी यू.एस.ए. से 4 वर्षों से जुड़ी हैं। इनके बच्चे भी चैरी हिल पाठशाला में पढ़ते हैं। पढ़ाने के अतिरिक्त रितु जी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करने में भी सहायता करती हैं। पिछले वर्ष शिक्षक अभिनन्दन समारोह में इनका नृत्य 'मोरनी बागाँ माँ नाची...' काफी लोकचर्चित रहा।

हम सब यह प्रण करें

हिंदी भाषा का प्रचार करें

रितु जग्गी

अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर या पढ़कर प्रकट करने के साधन को भाषा कहते हैं। विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, जैसे चीनी, जापानी, रूसी, अंग्रेजी इत्यादि। भारत में भी अनेक भाषाएँ बोली तथा पढ़ी जाती हैं, जैसे हिंदी, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, बंगला, मलयालम, गुजरती इत्यादि। परन्तु हमारे भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। हिंदी प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, इतिहास, कला, विज्ञान आदि विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। इस भाषा में परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा के भावों की अजस्त्र धारा प्रवाहित है। अतः राष्ट्रीय अखंडता की भावना को सशक्त करने के लिए हिंदी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। इस भाषा में मानवीय गुणों को विकसित करने की अपूर्व क्षमता है।

जैसे हम भारतीय दूसरी भाषाओं का सम्मान करते हैं विशेष रूप से अंग्रेजी भाषा को सीखते हैं, और सीखकर अपने को गोरवान्वित समझते हैं, उसी प्रकार हमारी भाषा हिंदी का भी विदेशों में सम्मान होना चाहिए और वहां के बच्चों को भी इस भाषा का ज्ञान होना चाहिए। आज भारत भी संसार के विकासशील देशों में से एक है। आजकल तो विदेशों से लोग पढ़ने और काम करने हेतु भारत आते हैं, और यहाँ आ कर हिंदी भाषा का ज्ञान प्रप्त करते हैं। आज के युग में मात्र भाषा के अतिरिक्त जितनी भी भाषाएँ आयें उतना अच्छा है। वैसे भी हिंदी भाषा का इतिहास सब भाषाओँ से अधिक प्राचीन है।

प्रत्येक प्रवासी भारतीय का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपनी मात्र भाषा हिंदी के प्रचार के लिए जितना भी हो सके प्रयास करे। हिंदी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता यहाँ अमेरिका में हिंदी प्रचार हेतु अत्यधिक उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। जब तक हम बड़े लोग इस दिशा में कदम नहीं उठाएंगे तब तक हम अपनी आगामी पीड़ी से कैसे यह आशा कर सकते हैं कि वह हमारी भारतीय संस्कृति की धारा को अग्रिम करेंगे।

वर्तमान समय में पूरे विश्व में हिंसा और दूसरे घ्रणित कार्यों की जैसे बाढ़ आई है। इस स्थिति में भारतीय प्राचीन संस्कृति की पुनरावृति अत्यधिक आवश्यक है, जिसका ज्ञान हमें प्राचीन ग्रंथों जैसे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत और उपनिषदों से मिलता है और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा को जानना आवश्यक है।

अगर आज अमेरिका में रहने वाले सभी भारतीय यह संकल्प कर लें कि वे अपने बच्चों को हिंदी भाषा सीखाएँगे, और स्वयं भी हिंदी भाषा प्रचार हेतु संकल्प कर लें, तो वह दिन दूर नहीं जब यहाँ के ८०% विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अपनी हिंदी भाषा भी सम्मिलित हो जाए। इस कार्य का आरम्भ एडिसन के विद्यालयों में तो हो ही चुका है। हिंदी भाषा की मशाल जो जल चुकी है, उसे हम प्रवासी भारतियों को और अधिक प्रज्वलित करना है।

आओ हम सब मिल कर यह संकल्प करें

हिंदी भाषा को पूरे विश्व में गोरवान्वित करें

मेरा नाम गीता टंडन है| मैं पिछले ४ वर्षों से हिदीं यू. एस. ए. के अंतर्गत ईस्ट ब्रुंस्विक स्कूल में हिंदी शिक्षिका के कार्य में संलग्न हूँ| जबकि पेशे से मैं आई.टी. के क्षेत्र में न्यू योर्क में कार्यरत हूँ| चूँकि बच्चों के साथ समय व्यतीत करने का मेरा शौक है, और पढ़ाने में रूचि मुझे इस कार्य के लिए मेरा निरंतर प्रेरणा स्त्रोत्र है|

आदर्श शिक्षक एवं विद्यार्थी

आदर्श शिक्षक वह है जो ज्ञान या विद्या को अपनी पूर्ण लगन एवं सच्चाई से विद्यार्थियों में बाँटता है। विद्या मानुषी को नम्र, सरल, सहनशील, गुणवान व चरित्रवान बनाती है, और यही गुण एक अच्छे शिक्षक की वेश-भूषा है। शिक्षक पुस्तक ज्ञान के अतिरिक्त गुण-ज्ञान, भाषा-ज्ञान, व्यवहार-ज्ञान, चरित्र-ज्ञान जैसे बहुत ज्ञानों को अपने शिष्यों को सिखाकर एक अच्छा एवं मज़बूत नागरिक बनाने में सहायता करता है। समय का सदुपयोग, बड़ों का सम्मान, उचित सलाह, देश एवं भाषा प्रेम, व्यायाम, भक्ति आदि व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाल कर एक सच्चा इंसान बनाने में सहायक भूमिका अदा करता है।

वहीं एक अच्छा शिष्य गुरु के द्वारा दिये गए इन सभी गुणों पर अमल करके अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। पुस्तकों से प्रेम, अच्छी संगत, देश एवं सभी प्राणियों के लिए सदभाव, लगन व परिश्रम उसे एक सफल नागरिक, नेक इंसान बनाता है, और अपने माता-पिता गुरु एवं देश के लिए गर्व बनता है।

यही गुरु एवं शिष्य का प्रगाढ़ संबंध है और दोनों का एक दूसरे के लिए कर्तव्य भी।

अगर सोच और समझ की दिशा सही हो तो एक सुंदर महोत्सव का जन्म हमारे मानस पटल पर होता है....

वंदना गुप्ता एक गृहणी होने के साथ-साथ एक ब्लॉग लेखिका तथा कवियत्री भी हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण होने के कारण ये ब्लॉग पर कृष्ण लीला, भजन, एवं कहानियाँ भी लिखती हैं। इसके अतिरिक्त ये ब्लॉग चर्चा सजा कर नए-नए रचनाकारों की रचनाओं से पाठकों को अवगत कराती हैं। ये ऑल इंडिया ब्लॉगर समिति की अध्यक्षा हैं। इनको अनेक पुरुस्कार मिल चुके हैं। इनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं- 'टूटे सितारों की उडान', और 'स्त्री होकर सवाल करती है'। इसके अतिरिक्त हिंदी ब्लॉगिंग की पुस्तकें 'हिंदी ब्लॉगिंग: 1. अभिव्यक्ति की नई क्रांति तथा 2. स्वरूप, व्याप्ति और संभावनाएँ

हिंदी की सच्ची तस्वीर

वंदना गुप्ता

हिंदी आज भी हमारी राजभाषा है। इतने वर्ष हो गए हमें आजाद हुए, और संविधान बने, परंतु अभी तक हम इसे अपनी राष्ट्रभाषा घोषित नहीं करा पाए। यह हमारी ही कमी का परिणाम है। हम सबने आज तक अपनी भाषा का महत्त्व ही नहीं समझा है। यदि हमें अपनी भाषा का महत्त्व पता होता तो आज यह बैसाखियों पर ना चल रही होती .....इसे अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता ना होती।

हम सब कहने को तो स्वयं को भारतीय कहते हैं, परंतु कभी दिल से भारत को अपना नहीं माना, और जब भारत को अपना नहीं माना तो इसकी भाषा को कैसे अपना मान सकते हैं। हमने तो हमेशा पश्चिम का अन्धानुकरण किया है, फिर चाहे स्वयं को कितना ही अपमानित होना पड़ा हो .....हमारे दिल दिमाग पर पश्चिम इस तरह हावी होगया है कि हम अपने आप को भूल चुके हैं। वहाँ की बुराई भी हमें अच्छी लगती है, और हमारे यहाँ की अच्छाइयों में भी हम कमी निकालने लगते हैं। जब हमारी ऐसी सोच होगी तो कैसे हम आशा कर सकते हैं कि हमारे जैसे लोग अपनी भाषा को सम्मान दे सकते हैं?

हम सब अंग्रेजी भाषा को तो सिर माथे पर बिठाते हैं, और यदि कोई अंग्रेजी में बात ना करे तो उसे अपमानित करते हैं, हेय दृष्टि से देखते हैं, परंतु क्या कभी हमने ऐसा सोचा कि हम अपनी भाषा को भी उसी तरह आदर दें। आज हम अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़वाकर खुश होते हैं, और जो हिंदी माध्यम से पढ़े बच्चे होते हैं, उन्हें निकृष्ट दृष्टि से देखते हैं, जैसे उन्होंने हिंदी माध्यम से पढ़कर कोई अपराध किया हो .....मैं मानती हूँ कि आज अंग्रेजी समस्त विश्व में मान्य भाषा गिनी जाती है, और उसका ज्ञान अति आवश्यक है, परंतु केवल ज्ञान आवश्यक है, उसके लिए स्वयं के देश और उसकी भाषा को छोड़ना कहाँ तक उचित है?

यदि हम देखें तो पाएंगे कि कितने ही देश ऐसे हैं जहाँ वे सिर्फ अपनी ही भाषा में बात करते हैं, और उसके बाद उस भाषा का अनुवाद किया जाता है। उन्होंने अपने देश की भाषा को कभी हेय दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसे समस्त विश्व में उच्च दर्जा दिलाया है। आज हम सब भी वे भाषाएँ सीखने को आतुर होते हैं, ताकि जब आवश्यकता हो तो उसका उपयोग किया जा सके। परंतु यह नहीं सोच पाते कि जैसे हम दूसरी भाषाओँ को अपनाते हैं, वैसे ही क्यों नहीं अपनी भाषा को भी समस्त विश्व की मान्य भाषाओँ की सूची में शामिल करवाएं, और अपने देश और भाषा का गौरव बढ़ाएँ।

इसके लिए पहल तो हमारे देश के मान्य नेताओं और सरकार को करनी चाहिए। अब हमारे देश में जब भी दूसरे देश के राजनेता या प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति आते हैं तो वे अपनी भाषा में ही बोलते हैं, और उसके बाद उनकी भाषा का अनुवाद किया जाता है, तो क्या हमारे देश के कर्णधार ऐसा नहीं कर सकते? हमने आज तक यही देखा कि हमारे देश के

कर्णधार स्वयं अंग्रेजी को महत्व देते हैं, क्यों नहीं वे किसी भी पत्रकार सम्मेलन में हिंदी में बोलते? अगर वे ऐसा करने लगें तो हमारी भाषा को सम्मान मिले, और दूसरे देश भी उसे सीखने को प्रेरित हो सकें।

वैसे आज हमारी भाषा ने पश्चिमी देशों में घुसपैठ तो बनाई है, परंतु वह भी केवल इसलिए कि भारत में रोजगार की संभावनाएं बहुत हैं, और विदेशों से आने वालों को भी लगता है कि हमें भी उनकी भाषा सीखनी चाहिए, तभी वहाँ के लोगों की मानसिकता को समझा जा सकता है। केवल इसीलिए आज वे लोग हिंदी सीख रहे हैं, परंतु हमने अपनी भाषा के विकास के लिए कोई कदम नहीं उठाये हैं .....हमारे ही देश में हमारी भाषा आज भी बेरुखी का शिकार है .....हमारे ही देश में कई जगह ऐसी हैं जहाँ हिंदी भाषा अतिरिक्त भाषा के रूप में पढाई जाती है। अब इससे बढ़कर और क्या अपमान होगा हमारी भाषा का? जिस भाषा को हम पूरे देश में राष्ट्रभाषा घोषित नहीं करवा सकते उसका क्या भविष्य होगा?

आज हम केवल वर्ष में एक दिन हिंदी पखवाड़ा मनाते हैं, तब जाकर कुछ कार्यालयों में हिंदी में काम होता है। बस केवल इतने ही दिन, उसके बाद फिर उसी ढर्रे पर काम होने लगता है .....जब हम पखवाड़ा मना सकते हैं, तो क्या भाषा को सर्वमान्य नहीं करवा सकते?

आज अंतर्जाल के आने से हिंदी को कुछ पहचान तो मिली है, और बहुत से लोग अंतर्जाल पर हिंदी में काम करना पसंद करते हैं, परंतु अंतर्जाल पर काम करने वाला वर्ग एक सीमित वर्ग है, और भाषा के विकास के लिए देश में जन जागृति आवश्यक है, तभी हमारी भाषा का उचित मूल्यांकन हो सकेगा, और वह अपना स्वरुप पा सकेगी।

हमें हर दिल में अपनी भाषा के लिए सम्मान पैदा करना होगा। इसके लिए अपनी भाषा की उपयोगिया समझनी होगी, तभी हिंदी को उसकी सही मंजिल मिल सकेगी, नहीं तो हमारी भाषा उपेक्षित ही रहेगी। जैसा आज तक सहती आई है, वैसा ही आगे भी सहेगी।

यह है हमारे देश में हिंदी की सच्ची तस्वीर.....कहानी , आलेख, कविताओं से इतर .....

पुरुषार्थ की ज़मीन पर भाग्य की फसल होती है, और प्रणाम की ज़मीन पर आशीर्वादों की फसल होती है....

प्रभु की जब कृपा होती है, तब हम धन्यता का अनुभव कर पाते हैं....

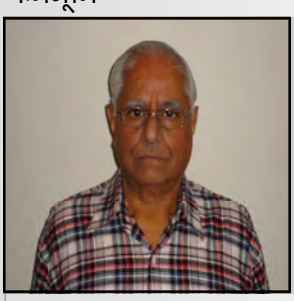

लखनऊ में जन्म, पर बचपन जबलपुर में बीता। अनेक विश्वविद्यालयों एवं बैंकिंग उद्योग की विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध; हिंदी –अंग्रेजी - संस्कृत में 500 से अधिक लेख - समीक्षाएं, 10 शोध - लेख एवं 40 से अधिक पुस्तकों के लेखक - अनुवादक; कई पुस्तकों पर अखिल भारतीय पुरस्कार; राष्ट्रपति से सम्मानित; विद्या वाचस्पति, साहित्य शिरोमणि जैसी मानद उपाधियाँ / पुरस्कार/ सम्मान; राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर का प्रतिष्ठित लेखक सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का मदन मोहन मालवीय पुरस्कार, एन सी ई आर टी की शोध परियोजना निदेशक एवं सर्वोत्तम शोध पुरुस्कार। वर्तमान निवास–आस्ट्रेलिया

मोसे छल किए जाय

डा. रवीन्द्र अग्निहोत्री

हिंदी के साथ एक लम्बे समय से छल-कपट का व्यवहार किया जा रहा है| और अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से फैलाए कतिपय भ्रमों से इस व्यवहार को बल मिलता जा रहा है| " राष्ट्रभाषा / राजभाषा " के रूप में हिंदी की चर्चा छिड़ते ही कुछ लोग देश में अनेक भाषाओं की चर्चा कुछ इस अंदाज़ में करने लगते हैं कि एक सूत्र में बांधने वाली अखिल भारतीय भाषा की संभावना ही धूमिल पड़ जाती है। आग में घी का काम करती है अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से फैलाई आर्य और द्रविड़ प्रजाति की संकल्पना, और उनका काल्पनिक इतिहास .. यूरोपीय जातियों के आगमन से पहले के इतिहास से अनभिज्ञ लोग इस भ्रम का भी शिकार हो जाते हैं कि अंग्रेजों के आने के बाद ही पहली बार पूरे देश में एक भाषा का (अर्थात अंग्रेजी का) अध्ययन / व्यवहार शुरू हुआ है। अतः वही सही अर्थ में अखिल भारतीय भाषा है। “हमारी अपनी" कही जाने वाली कोई अखिल भारतीय भाषा न पहले थी, न अब है। वे भारत के भाषाई इतिहास में संस्कृत की भूमिका को एकदम भूल जाते हैं। इसीलिए हिंदी को भी ऐसी भाषा मान लेते हैं, जो उत्तर भारत के एक भाग की भाषा है, जो देश की अन्य अनेक भाषाओं की भांति पिछले लगभग एक हज़ार साल में बनी है, और राजकाज में जिसका व्यवहार कभी हुआ ही नहीं, क्योंकि पिछले एक हज़ार साल में उत्तर भारत में मुसलमानों का शासन रहा और `उनकी भाषा अरबी/फारसी/उर्दू रही। वे कहते हैं कि सांस्कृतिक जागरण काल (19 वीं शताब्दी) की शुरुआत बंगाल में हुई और वहीं के नेताओं ने इसे "राष्ट्र भाषा" नाम दे दिया। दक्षिण भारत में तो इसका प्रचार करने का काम पिछली ही शताब्दी में महात्मा गाँधी ने शुरू किया।

पर वास्तविकता यह है कि न तो हिंदी का इतिहास केवल एक हज़ार वर्ष का है, न वह केवल उत्तर भारत की भाषा है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा. हरदेव बाहरी के शब्दों में, "हिंदी का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरम्भ होता है। उससे पहले इस आर्यभाषा का स्वरूप क्या था, यह सब कल्पना का विषय बन गया है। कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। आर्य चाहे कहीं बाहर से आए हों, अथवा यहीं सप्त सिन्धु प्रदेश के मूल निवासी हों, यह निश्चित और निर्विवाद सत्य है कि वर्तमान हिंदी प्रदेश में आने से पहले उनकी भाषा वही थी जिसका साहित्यिक रूप ऋग्वेद में प्राप्त होता है। एक तरह से यह कहना ठीक होगा कि वैदिक भाषा ही प्राचीनतम हिंदी है। इस भाषा के इतिहास का यह दुर्भाग्य है कि युग-युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा है, कभी वैदिक, कभी संस्कृत, कभी प्राकृत, कभी अपभ्रंश और अब हिंदी। (हिंदी - उद्भव, विकास और रूप; किताब महल, इलाहाबाद; अष्टम संस्करण 1984 ; पृष्ठ 15) पाठकों को यह लग सकता है कि वैदिक संस्कृत और हिंदी में तो ज़मीन- आसमान का अंतर है, पर ध्यान दीजिए कि हिब्रू, रूसी, चीनी, जर्मन, तमिल जैसी विश्व की जिन भाषाओं को बहुत पुराना बताया जाता है, उनके भी पुराने और वर्तमान रूपों में वैसा ही ज़मीन-आसमान का अंतर है, पर लोगों ने उनके नाम नहीं बदले। उनके परिवर्तित रूपों को प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक आदि कहा गया, जबकि हिंदी के सन्दर्भ में प्रत्येक युग की भाषा का नया नाम रखा जाता रहा। यही कारण है कि हिंदी

के विकास के सन्दर्भ में ध्वनि, शब्द, अर्थ, व्याकरण आदि की चर्चा करते समय प्रायः सभी भाषा-वैज्ञानिक मूल स्रोत के रूप में संस्कृत की ओर देखते हैं। डा. बाहरी ने अपनी उक्त पुस्तक में हिंदी के विकास के अंतर्गत शब्द भण्डार की चर्चा में ऐसे शब्दों की लम्बी-लम्बी सूचियाँ दी हैं जो वैदिक वांग्मय से हिंदी में आए हैं। जैसे, यजुर्वेद से आए हुए "क" अक्षर से आरम्भ होने वाले शब्द (उदाहरणार्थ - कक्षा, कंठ, कथा, कनिष्ठ, कर्ता, कलश, कल्याण, कवि, केश, क्रोध आदि) या ऐतरेय ब्राह्मण के "अ" वर्ण से शुरू होने वाले कुछ शब्द (जैसे अकाल, अक्षर, अंक, अंग, अन्यत्र, अभिभूत, अन्यथा, अलंकार आदि), और अंत में लिखा है , " वेद में इस प्रकार के हज़ारों शब्द हैं जो आज अक्षुण्ण रूप में हिंदी -- कम से कम साहित्यिक हिंदी -- की निधि हैं। संसार की किसी भाषा में 3 - 4 हज़ार वर्ष से चले आते हुए शब्द अविकृत रूप में इतनी बड़ी संख्या में नहीं मिलेंगे (पृष्ठ 130 - 132)। "ऋग्वेद का पहला ही मन्त्र है, "अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्" पाठक स्वयं देख सकते हैं कि इस मन्त्र में आए अग्नि, पुरोहित, यज्ञ, देव, आदि शब्द आज भी प्रयोग में आ रहे हैं। अतः डा. बाहरी का यह कहना सर्वथा उचित है कि हिंदी का इतिहास केवल एक हज़ार साल से नहीं, हज़ारों साल पहले की वैदिक भाषा से शुरू होता है।

हिंदी को जब उत्तर भारत की भाषा बताया जाता है तो आशय यह होता है कि इसे शेष भारत, विशेष रूप से दक्षिण भारत में कोई नहीं जानता। प्रचारित यह भी किया जाता है कि दक्षिण में तो हिंदी का प्रचार महात्मा गाँधी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान ही "शुरू" किया। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि पिछली शताब्दी में केवल दक्षिण में नहीं, पूरे भारत में हिंदी प्रचार का जितना काम महात्मा गाँधी ने किया उतना किसी ने नहीं किया। पर यह प्रचार किसी नई चीज़ का नहीं, अपनी पुरानी परम्परा के उद्धार के लिए था, जिसे अंग्रेज़ी शासन और अंग्रेजी शिक्षा ने विच्छिन्न कर दिया था। यही कारण था कि जब उनके पास कोई व्यक्ति जाकर यह कहता था कि मैं भी देशसेवा करना चाहता हूँ, मुझे काम बताइये; तो उनका पहला प्रश्न यह होता था 'आपको हिंदी आती है? 'उत्तर 'न' में मिलने पर वे कहा करते थे कि सबसे पहले हिंदी सीखिए। देश सेवा का यह सबसे पहला काम है।

गाँधी जी के लिए हिंदी उत्तर भारत की नहीं, पूरे देश की भाषा थी। पर महात्मा गांधी के अवतरण से पूर्व भी हिंदी अखिल भारतीय भाषा थी। लगभग पांच-छह शताब्दी पूर्व भक्ति आन्दोलन की शुरुआत दक्षिण में हुई, तब यद्यपि जन -सामान्य से जुड़ने के लिए विभिन्न "लोक भाषाओं" का भी व्यापक प्रयोग किया गया, पर इस आन्दोलन के केंद्र में हिंदी ही बनी रही, और देवभाषा संस्कृत का प्रयोग शास्त्रीय चर्चा के लिए सुरक्षित हो गया। यह ध्यान देने योग्य है कि हिन्दुओं के जो दो प्रमुख सम्प्रदाय हैं - शैव और वैष्णव, उनमें शैव भगवान शिव की पूजा करते हैं, और शिव जी की नगरी है काशी जो हिंदी प्रदेश में है। वैष्णव लोग भगवान विष्णु के जिन अवतारों (राम और कृष्ण) की पूजा प्रमुख रूप से करते हैं, उनका सम्बन्ध अयोध्या और ब्रज भूमि से है, और ये भी हिंदी प्रदेश में हैं। भक्तिकाल में तीर्थयात्रा, स्तुतिगान आदि को विशेष महत्व दिया गया, अतः दोनों सम्प्रदायों के अनुयायी हिंदी प्रदेश की तीर्थ यात्रा करते रहे। हिंदी में भजन गाते रहे और हिंदी से जुड़े रहे। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन के संतों ने हिंदी को अखिल भारतीय बनाए रखा, और उसके अखिल भारतीय महत्व को स्वीकारते हुए ही उसका प्रयोग किया, फिर चाहे वे महाराष्ट्र के नामदेव हों या असम के शंकरदेव।

रही बात राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग की, तो इसके लिए जयचंद विद्यालंकार का "भारतवर्ष का इतिहास" (दो खंड) या डा. रामबाबू शर्मा का "बारहवीं सदी से राजकाज में हिंदी "जैसा कोई ग्रन्थ पढ़ लीजिए। स्पष्ट हो जाएगा कि महमूद गज़नवी (997 ईसवी) से लेकर गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, मुग़ल वंश - सभी के शासनकाल में हिंदी

ही राजभाषा रही। फारसी का प्रयोग मुग़ल काल ही में हुआ, और वह भी सीमित कामों के लिए। महमूद गज़नवी के समय तो संस्कृत का भी प्रयोग किया गया। उसके सिक्कों पर एक ओर अरबी में कलमा अंकित है, और दूसरी ओर संस्कृत में "अव्यक्त ब्रह्म एकं मुहम्मद अवतार नृपति महमूद अयं टंको महमूदपुरे घट्टे जिनायन संवत ...." अंकित है (डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, भारतीय आर्यभाषा और हिंदी ; नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; पांचवां संस्करण 1989; पृष्ठ 193 - 194)

हाँ, यह सही है कि हिंदी को "राष्ट्र भाषा" की संज्ञा लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व के सांस्कृतिक जागरण काल के उन नेताओं ने दी जिन्हें आज की शब्दावली में "अहिंदीभाषी" कहा जाएगा। संस्कृत के प्रकांड विद्वान होते हुए भी गुजराती भाषी स्वामी दयानंद जैसे महापुरुष ने तो हिंदी को पूरे देश के सर्व साधारण की भाषा मानकर अपने कामकाज की भाषा बनाया। उन्होंने अपना विशाल साहित्य हिंदी में ही लिखा और गुजरात, महाराष्ट्र जैसे प्रदेशों में जाने पर भी व्याख्यान हिंदी ही में दिए। वे कहा करते थे, "हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" और इसीलिए उन्होंने हिंदी प्रचार अपना लक्ष्य बना लिया। जिस दक्षिण भारत को आज "हिंदी विरोध का गढ़" माना जाता है, वहां अंग्रेज़ी शासन के जमाने से पूर्व तक हिंदी की क्या स्थिति थी, इसके दो-तीन उदाहरण ही पर्याप्त होंगे। तंजौर के शाहजी महाराज ने (1684 - 1712) जिन्हें "आन्ध्र भोज" कहा जाता है, बुन्देलखंडी मिश्रित खड़ी बोली में "विश्वातीत विलास नाटक", "राघवन्सीधर विलास नाटक" जैसा साहित्य लिखा। केरल के स्वाति तिरुनाल रविवर्मा (1813 - 1849) ने ब्रजभाषा में चालीस से भी अधिक भजनों की रचना की। 19 वीं शताब्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समकालीन मछलीपट्टणम के पं. पुरुषोत्तम कवि नादेल्ल ने हिंदी में 32 नाटक लिखे, जिनका वहां 15 वर्षों तक मंचन होता रहा। यदि वहां हिंदी अज्ञात होती तो क्या हिंदी नाटकों का मंचन संभव था? अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से पूर्व सर टामस मुनरो ने सर्वेक्षण (1822 - 1826) करके बताया कि कोयम्बतूर (अर्थात तमिलनाडु) राज्य में लगभग 40 % विद्यालय हिंदी माध्यम के, इतने ही तमिल माध्यम के और शेष अन्य भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दे रहे थे (विस्तार से पढ़ें, धर्म पाल ,"द ब्यूटीफुल ट्री" बिब्लिया इम्पेक्स प्रा. लि. नई दिल्ली)। स्पष्ट है कि अंग्रेजों के पैर जमाने से पहले हिंदी अखिल भारतीय भाषा के रूप में समादृत थी।

इस देश में भाषा सम्बन्धी विभिन्न विवादों की शुरुआत सर विलियम जोन्स (1746 - 1794) से मानी जा सकती है। वे कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट के जज बनकर आए थे। उन्होंने जब संस्कृत, शास्त्रीय ग्रीक और लैटिन में अद्भुत समानताएं देखीं तो अपनी The Sanscrit Language (1786) पुस्तक में उनके एक ही उद्गम की कल्पना करके उन्हें सहोदरा बताया। सामान्य देशवासी तो उनके इस कथन से अभिभूत हो गए, और यह भूल गए कि सभ्यता-संस्कृति में अपने को सर्वोपरि मानने के यूरोपीय जातियों के दंभ के कारण उन्होंने संस्कृत की उम्र घटा दी है, क्योंकि ग्रीक का जो प्राचीनतम लिखित प्रमाण मिलता है, वह आठवीं शताब्दी ईसवी पूर्व का है, और लैटिन का छठी ईसवी पूर्व का, जबकि ऋग्वेद (यूरोपीय विद्वानों के ही अनुसार) इनसे लगभग दो हज़ार वर्ष पुराना है। अतः वैदिक संस्कृत को ग्रीक-लैटिन की "जननी" ही कहा जा सकता है, "सहोदरा" नहीं।

एक और भूल विलियम जोन्स से हुई, जिसके दुष्परिणाम ने भारतीय इतिहास को विकृत कर दिया। जिस प्रकार इंग्लैण्ड में लगभग 500 ईसवी पूर्व कैल्ट जाति के लोग आए (कैल्ट और उनसे पराजित लोगों की मिली जुली संतान को ही 'ब्रिटन्स' कहते हैं), और बाद में ट्युटोनिक जाति के ऐंग्लो सैक्सन लोगों ने सम्पूर्ण इंग्लैण्ड को जीत लिया (ये ही लोग आगे चलकर "इंग्लिश" कहलाए)। कुछ वैसी ही 'कल्पना' उन्होंने बिना किसी ऐतिहासिक प्रमाण के भारत के सम्बन्ध में कर डाली। उन्होंने भारतवासियों को पहली बार आर्य और द्रविड़ों में बांटकर पार्थक्य की विषबेल बो दी। हिंदी के प्रति

फैला वर्तमान द्वेष इसी विषबेल का फल है, जिसे अंग्रेजी शिक्षा ने और विषैला बनाया। सांस्कृतिक जागरण काल के नेताओं ने और बाद में महात्मा गांधी जैसे स्वाधीनता संग्राम के नेताओं ने इसी विष को दूर करने का प्रयास किया, जिसका एक साधन हिंदी प्रचार भी था।

पर हिंदी के सम्बन्ध में संविधान सभा के सभी सदस्य सांस्कृतिक काल के नेताओं और महात्मा गाँधी जैसे नेताओं से सहमत नहीं थे। एक विशाल वर्ग अवश्य महात्मा गाँधी के विचारों के अनुरूप हिंदी का पक्षधर था, और चाहता था कि तुरंत हिंदी को राजभाषा बनाया जाए। उनके सामने गाँधी जी का बी. बी. सी. के संवाददाता को दिया वह सन्देश था, "दुनिया से कह दो, गाँधी अंग्रेजी भूल गया "क्योंकि गाँधी को आज़ादी की पहली प्रतीति भाषा की मुक्ति में हो रही थी। पर एक दूसरा वर्ग ऐसे लोगों का भी था जो अंग्रेजी के समर्थक थे, और उसे ही राजभाषा बनाए रखना चाहते थे। यह वर्ग स्पष्ट रूप से हिंदी का विरोध कर रहा था। इस वर्ग के विपरीत एक तीसरा वर्ग उन लोगों का था जो गाँधी जी के व्यक्तित्व से तो प्रभावित थे, पर उनके विचारों से सहमत नहीं थे। ये लोग अपने को हिंदी का विरोधी नहीं कहते थे, पर उसे तुरंत लागू करना भी नहीं चाहते थे। नेहरू जी इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। तभी तो उन्होंने आज़ादी का स्वागत करने के लिए अपना भाषण अपने हाथ से अंग्रेजी में लिखा "Tryst with Destiny."

संविधान सभा में निर्णय यदि बहुमत के आधार पर किया जाता तो वह निश्चित रूप से हिंदी के पक्ष में होता, पर संविधान सभा ने प्रारम्भ में ही यह निश्चय कर लिया था कि सभी निर्णय सर्व सम्मति या लगभग पूर्ण सहमति के आधार पर ही किए जाएंगे, बहुमत के आधार पर नहीं (विस्तार से पढ़ें,1. ग्रेन्विल आस्टिन, द इंडियन कांस्टीट्युशन - कार्नर स्टोन ऑफ़ ए नेशन; बम्बई: आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972; विशेष रूप से" इंडियाज ओरिजिनल कांट्रीब्यूशन: डिसीजन मेकिंग बाई कन्सेन्सस, पृष्ठ 311 - 314 ; 2। कांस्टीट्युशन असेम्बली डिबेट्स, वाल्युम 2, पृष्ठ 3299)। इसलिए सदस्यों के मतभेद को देखते हुए एक समझौता कराया गया, जिसके अनुसार राजभाषा हिंदी, लिपि देवनागरी, और अंकों के लिए भारतीय अंकों का अंतर - राष्ट्रीय रूप स्वीकार तो किया, पर इस निश्चय का अनुपालन 15 वर्ष के लिए स्थगित कर दिया। कहने को हिंदी का नाम "राजभाषा", पर न राज न ताज, 15 वर्ष का वनवास और सिंहासन पर अंग्रेजी का ठाट। छल करने वालों को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। अतः एक व्यवस्था यह भी कर ली कि यदि संसद चाहे तो इस अवधि को और बढ़ा सकती है। यदि संसद के विवेक पर ही भरोसा करना था तो 15 वर्ष का वनवास देने के बाद ही क्यों? व्यवस्था यह भी तो की जा सकती थी कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग कब शुरू किया जाए -- इसका निर्णय संसद करे। या फिर सभा ने राजभाषा आयोग के माध्यम से जो विश्वास देश की विभिन्न भाषाओं के भाषाविदों पर जताया था, उन्हीं भाषाविदों को यह प्रश्न हल करने का दायित्व सौंप देते। पर तब छल अधूरा रहता न!

15 वर्ष की अवधि के सम्बन्ध में नेहरू जी का एक विचित्र सपना था, और वह यह कि अगर अभी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखा जाए, और 15 वर्ष बाद हिंदी को राजभाषा बनाया जाए तो अंग्रेजी इस देश से स्वतः गायब हो जायेगी (देखें राबर्ट मैकक्रम, विलियम क्रेन और राबर्ट मैकलीन, द स्टोरी ऑफ़ इंग्लिश ; लन्दन: फेबर एंड फेबर बी बी सी पब्लिकेशन्स; 1986, पृ. 333)। सपने तो सपने ही होते हैं, उनका वास्तविकता से क्या सम्बन्ध? 15 वर्ष की अवधि के लिए सबसे बड़ा तर्क यह दिया गया कि हिंदी अभी राजकाज के लिए सक्षम नहीं है। उसे संपन्न बनाने की आवश्यकता है। यह फिर एक छल था। हर कोई जानता है कि भाषा प्रयोग करने से ही संपन्न बनती है, प्रयोग स्थगित करने से नहीं। पानी में उतरने के बाद ही तैरना आता है, अलग से नहीं। भाषा के प्रयोक्ता ही भाषा को संपन्न बनाते हैं, दूसरे लोग नहीं। पर यहाँ भाषा को संपन्न करने का काम औरों को सौंपा गया। इसका परिणाम आप देख ही रहे हैं। भाषा को संपन्न करने का काम जिन्हें सौंपा था, उन्होंने तो अपनी ओर से भाषा को संपन्न बना दिया, पर जिन्हें उस

सम्पन्नता का लाभ उठाना है वे उसका लाभ उठाने में अपने को असमर्थ पा रहे हैं।

संविधान सभा ने कतिपय उत्साही सदस्यों के आग्रह पर राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास करने का एक आदेश भी दिया, और उसे कार्यान्वित करने की शुरुआत उसने तीन दिन बाद ही एक प्रस्ताव द्वारा अध्यक्ष महोदय को यह दायित्व सौंपकर करा भी दी कि वे संविधान का हिंदी अनुवाद कराकर 26 जनवरी 1950 तक, और फिर यथाशीघ्र अन्य भारतीय भाषाओं में भी, प्रकाशित कराएं। इस कार्य के लिए अध्यक्ष डा. राजेंद्र प्रसाद ने एक "भाषा विशेषज्ञ सम्मेलन" बुलाया जिसमें संविधान की आठवीं अनुसूची में दी हुई सभी भाषाओं के 41 विद्वान प्रतिनिधिस्वरूप सम्मिलित हुए। इन विद्वानों ने यह निश्चय किया कि जहाँ तक संभव हो, हिंदी अनुवाद में ऐसे ही पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाए, जो प्रायः सर्वत्र प्रयुक्त होते हों, ताकि उन्हीं शब्दों का प्रयोग विभिन्न भारतीय भाषाओं में तैयार होने वाले संविधान के अनुवादों में किया जा सके। अतः भाषा-विशेषज्ञों ने संविधान द्वारा निर्दिष्ट नीति का पालन करते हुए (अर्थात मुख्यतया संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द लेकर) संविधान में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का "अंग्रेजी - हिंदी कोश" तैयार किया। फिर इन्हीं में से पांच विद्वानों (सर्वश्री मोटुरी सत्यनारायण, जयचंद विद्यालंकार, राहुल सांकृत्यायन, यशवंत आर दाते, और डा. सुनीति कुमार चटर्जी) को लेकर "विशेषज्ञ अनुवाद समिति" बनाई। इस समिति ने अनुवाद तैयार करने में इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया। संविधान के हिंदी अनुवाद के प्राक्कथन में इस पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए अध्यक्ष डा राजेंद्र प्रसाद ने लिखा है, "संविधान के इस अनुवाद में प्रयुक्त कई शब्द, संभव है, कुछ लोगों को फिलहाल बिलकुल नए से प्रतीत हों, पर इस सम्बन्ध में यह याद रखना चाहिए कि ये शब्द भारत की अधिकांश भाषाओँ के प्रतिनिधियों को स्वीकार्य हैं, और इसलिए देश के अधिकांश लोगों को या तो अभी या निकट भविष्य में अवश्य बोधगम्य हो जाएंगे।" ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये सभी काम लगभग चार महीने में पूरे हो गए। कहाँ 15 वर्ष का स्थगन, कहाँ चार महीने में भाषा विशेषज्ञ सम्मेलन का आयोजन, महत्वपूर्ण निर्णयों का संकलन, शब्द कोश का निर्माण, संविधान का अनुवाद और उसका प्रकाशन भी। इसीलिए कहा गया है कि जहाँ चाह है वहां राह है।

यह देखकर दुःख होता है कि संविधान सभा में शुरू से ही हिंदी के साथ छल-कपट किया गया। कैसे, सो समझने के लिए शुरू की ही एक घटना देखिए। संविधान सभा बन गई थी, पर उसके संचालन के नियम नहीं बने थे, न अध्यक्ष चुना गया था। अतः गवर्नर जनरल ने पटना के प्रसिद्ध बैरिस्टर सच्चिदानंद सिन्हा को वरिष्ठता के आधार पर अस्थायी अध्यक्ष बना दिया। आचार्य कृपलानी ने सभा की कार्यप्रणाली की नियमावली (Procedure Committee) बनाने से संबंधित प्रस्ताव रखा। जिस पर संशोधन प्रस्तुत करते हुए श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर (मूलतः महाराष्ट्र के निवासी, कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम ए, एल एल बी, एडवोकेट; झांसी के वकील, बाद में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के अध्यक्ष) ने हिंदी में प्रस्ताव रखा कि सभा की सारी कार्यवाही हिंदी में हो और नियमावली मूलरूप से हिंदी में बनाई जाए, बाद में उसका अंग्रेजी में अनुवाद हो। जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, सभा में ऐसा हंगामा मचा मानों बर्र के छत्ते को छेड़ दिया हो। ज़रा ध्यान दीजिए यह "स्वतंत्र" देश का संविधान बनाने के लिए जनता के प्रतिनिधियों की सभा थी; पर हिंदी के नाम पर उनकी प्रतिक्रिया देखकर अंग्रेजी शासन के दौरान 1864 में पहली बार आयोजित देश की 600 रियासतों के राजाओं - नवाबों की सभा की अनायास याद आ जाती है, जिसका संचालन हिंदी में किया गया, और जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल एवं वायसराय सर जान लारेंस ने "हिंदी" में संबोधित किया (देखें, मैकमिलन्स जनरल स्टडीज़, दिल्ली: मैकमिलन्स इंडिया लिमिटेड, 1988 ; पृ A -147)। हिंदी की बात सुनकर नेहरू जी धुलेकर जी को चुप कराने लगे तो उन्होंने झिड़क दिया। उधर अध्यक्ष ने भी धुलेकर जी से बैठ जाने के लिए कहा, पर वे अपनी बात पूरी करके ही बैठे। तब नेहरू जी उनके पास आए। पहले तो उन्होंने धुलेकर जी को डांटने की कोशिश की, पर उनका रुख देखकर धीरे से कान में बोले, तुम्हारा संशोधन पास हो जाएगा, पर तुम अब कुछ बोलना मत। इसके बाद नियमावली के बारे में अन्य भी संशोधन पेश किए गए। इस चर्चा से उकता कर जब अनेक सदस्य बाहर चाय पीने

या गप्पें मारने के लिए चले गए, और साढ़े तीन सौ में से लगभग 50 - 60 लोग ही सभा में रह गए तब नेहरू जी ने अध्यक्ष से कहा कि सब संशोधन अलग-अलग न पढ़कर इकट्ठे वोटिंग करा लीजिए। तुरंत उपस्थित सदस्यों ने 'यस' कह दिया। इस प्रकार कहने को धुलेकर जी का भी प्रस्ताव पास हो गया। अब यह दूसरी बात है कि सभा में केवल अंग्रेजी के आशुलिपिक बैठे थे, अतः न तो धुलेकर जी की पूरी बात नोट की गई, और न उस पर कभी अमल हुआ। पाठक ही तय करें कि इसे नेहरू जी की राजनीतिक सूझ बूझ कहें या स्वतंत्र देश की आधारशिला रखने वाली संविधान सभा में हिंदी को स्थापित करने के गंभीर प्रयास को फूंक से उड़ा देने की चाल?

आज़ादी के बाद से हिंदी के साथ ऐसा ही छल - कपट का व्यवहार होता रहा है। 15 वर्ष के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के लिए बनाया गया राजभाषा अधिनियम भी इसी का उदाहरण है, जिसने भविष्य में हिंदी के राजभाषा बनने के सारे रास्ते यह कहकर बंद कर दिए हैं कि जब तक "सभी राज्य" हिंदी लागू करने के लिए सहमत नहीं हो जाते, तब तक हिंदी को राजभाषा नहीं बनाया जाएगा। न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

रही सही कसर सरकार का राजभाषा विभाग पूरी कर देता है। इस विभाग द्वारा हाल ही में जारी किया एक परिपत्र इसका ज्वलंत उदाहरण है। परिपत्र के अनुसार राजभाषा विभाग की निगाह में भोजन, क्षेत्र, छात्र, परिसर, नियमित, आवेदन, महाविद्यालय जैसे तमाम शब्द जो पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में प्रचलित थे, वे आज एकाएक "कठिन", "टंग ट्विस्टर", और "अबोधगम्य" हो गए हैं। इसलिए उसने सुझाव दिया है कि इनके स्थान पर क्रमशः लंच, एरिया, स्टुडेंट, कैम्पस , रेगुलर, अप्लाई , कालेज आदि का प्रयोग करो। यह परिपत्र तो अंग्रेजों की नीति "Languages should be killed with kindness" का ही विस्तार प्रतीत होता है।

मैं याद करने की कोशिश कर रहा हूँ कि राजभाषा कक्ष/विभाग ने (इसे विभाग 26 जून 1975 को बनाया गया था, जिस दिन आपातकाल घोषित किया गया था) क्या कभी "शुद्ध हिंदी" का प्रयोग करने का भी कोई आदेश जारी किया? मुझे तो राजभाषा विभाग द्वारा प्रचारित वही वाक्य याद आता है कि "बोलते या लिखते समय शब्दों के लिए अटकिए नहीं। आपको जो शब्द याद आए, उसी का प्रयोग करें"। सरल, बोधगम्य, सुपरिचित शब्दों का प्रयोग करने के ऐसे स्पष्ट अनुदेश के बाद भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने का परिपत्र जारी करने की क्या आवश्यकता पड़ गई? संविधान ने तो राजभाषा हिंदी के लिए "मुख्यतया संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से "शब्द लेने का आदेश दिया था; और संविधान के इस प्रावधान में अभी तक कोई संशोधन किया नहीं गया है, फिर राजभाषा विभाग उस नीति का उल्लंघन कैसे कर रहा है? संविधान सर्वोपरि है या राजभाषा विभाग?

प्रश्न यह भी है कि राजभाषा विभाग की भूमिका क्या है? संविधान के निर्णय को कार्यान्वित करने की दृष्टि से सरकार ने पारिभाषिक शब्दावली का विकास करने वाले अकेडमिक काम के लिए 1950 में एक अधिकृत अभिकरण (authorised agency) बनाया, जिसे उस समय वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड नाम दिया था, बाद में कार्य की गुरुता को देखते हुए 1960 में इसे "आयोग" का रूप दे दिया। यह आयोग अब तक प्रशासन के साथ-साथ विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग छह लाख पारिभाषिक शब्द बना चुका है, जो अब कंप्यूटर पर भी उपलब्ध हैं। आयोग "प्रशासन शब्दावली" 1968 से प्रकाशित भी करता आ रहा है, और अब तक उसके अनेक संस्करण निकल चुके हैं। राजभाषा विभाग का काम तो सरकारी कामकाज में आयोग की बनाई शब्दावली का प्रयोग सुनिश्चित करना और प्रगति की निगरानी करना है, अर्थात उसका काम प्रशासनिक है, शब्दावली विकसित करना नहीं। मेरा मानना है कि इसने शब्दावली के

सम्बन्ध में आदेश जारी करके सरकार के बनाए अधिकृत अभिकरण (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग) की उपेक्षा की है, और अपने कार्यक्षेत्र का उल्लंघन किया किया है।

वस्तुतः परदे के पीछे की कहानी कुछ और ही है। जब से उदारीकरण - भूमंडलीकरण का युग शुरू हुआ है, हमारी नकेल किन्हीं और हाथों में पहुँच गई है। पहले मल्टीनेशनल कंपनियों ने मीडिया पर दबाव डाला कि अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग करे तो उसे विज्ञापन दिए जाएंगे। नतीजा सामने है। अब हिंदी के समाचारपत्र हों या समाचार चैनल, उनकी भाषा "हिंगलिश" हो गई है। प्रधान मंत्री "पी एम" और मुख्य मंत्री "सी एम" बन गए हैं। हिंदी के अनेक समाचारपत्रों ने तो अपने को मानों अंग्रेजी के भावी पाठकों की नर्सरी ही बना दिया है। न्यू इयर बने सक्सेस इयर, रिसर्च एंड डेवेलपमेंट कैरियर का ब्रेकथ्रू, बैंक एक कामन एग्जाम के जरिये कैंडीडेट्स का चयन कर रहे हैं, जैसी भाषा हिंदी के एक प्रमुख समाचारपत्र की है (दैनिक जागरण, 4 जनवरी 2012) “लोग अंग्रेजी शब्दों का ही प्रयोग अपनी बोलचाल में करने लगे हैं “-- यह कहकर पत्रकारों ने" “शिक्षक" वाली अपनी भूमिका को तिलांजलि दे दी है। "जो जहाँ पर हो रहा सो हो रहा/यदि वही हमने कहा तो क्या कहा/किन्तु होना चाहिए कब क्या कहाँ/व्यक्त करती है कला ही यह यहाँ"। राष्ट्रकवि गुप्त जी के इस आदर्श को पत्रकारों ने अब अतीत की चीज़ बना दिया है। इधर सरकार पर और दबाव डालने के लिए विश्व व्यापार संगठन मौजूद है, जो बार-बार कहता आ रहा है कि "The role of government 's organisations should be increased in promotion of English"। कुछ समय पहले जब "Knowledge Commission" (ज्ञान आयोग) के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने सरकार को यह सुझाव दिया था कि पूरे देश में अंग्रेजी की पढ़ाई कक्षा एक से शुरू करनी चाहिए - उसके पीछे भी ये ही कारण थे। सर्व शिक्षा अभियान (Education for all) के लिए विश्व बैंक जो डालर दे रहा है, उसका वास्तविक एजेंडा है, English for all.

देश में जनतंत्र है, और जनतंत्र की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी जनता की ही होती है। जनता की जागरूकता जहाँ राजनीति पर अंकुश का काम करती है, वहीं उसकी गफलत मधुर थपकियाँ देकर सुलाने वाली लोरी बन जाती है। इसलिए एक ही सन्देश है "तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग ज़रा"।

निर्माण वही सार्थक है, जिससे हम स्वयं को भी निर्मित करते हैं....

एक ज़िंदगी भी शिक्षा के आलोक से आलोकित होती है तो कोटि-कोटि यज्ञों का फल मिल गया, ऐसी अनुभूति होती है....

Acharya Baljeet Shastri

Priest, Astrologer and Spiritual Healer

Hindu Vedic 16 Sanskars

Pooja, Hawan, Naming, Wedding, Housewarming etc...

Solve all problems by Astrology

Birthstones Available at cost

Tel: (718) 347-4466

Cell: (646) 436-8244

svedic@hotmail.com

हमारे अतिथि

इस वर्ष ग्यारहवें हिन्दी महोत्सव में हिन्दी यू.एस.ए. ने डॉ. वागीश 'दिनकर' जी, श्री महेश दुबे जी, तथा श्री अभिनव शुक्ल जी को काव्य पाठ करने हेतु न्यू जर्सी आमंत्रित किया है। न्यू जर्सी के अतिरिक्त ये कवि गण चार अन्य राज्यों में भी मई और जून माह में काव्य पाठ करेंगे। यहाँ इन कवियों तथा हमारे महोत्सव के मुख्य अतिथि डॉ. राजीव मलहोत्रा जी का संक्षिप्त परिचय अंकित है।

डॉ. वागीश 'दिनकर' - ये गाजियाबाद, उ.प्र. के निवासी हैं तथा वहाँ के एक स्नातकोत्तर (पी.जी.) महाविद्यालय के सहयोगी प्राध्यापक तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष हैं। "शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" व "पौरुष का उदघोष" आपके प्रतिनिधि काव्य संग्रह हैं। हाल में ही आपके 5 बालगीत संग्रह "गुनगुना रे गुनगुना" प्रकाशित हुए हैं। आपके संपादित ग्रंथों की सूची बहुत लंबी है। आपके शोध ग्रंथ हैं- "श्री भार्गवराघवीयम मीमांसा" और "श्री रामकथा स्त्रोतों का वैज्ञानिक विश्लेषण"।

आप सन् 1980 से अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में ओजस्वी कवि के रूप में काव्य पाठ व मंच संचालन करते आ रहे हैं।

अनेकानेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित तथा पुरस्कृत किया गया है। आप राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रधान मंत्री, गृह मंत्री तथा मानव संसाधन मंत्री द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

आप अनेक राष्ट्रवादी पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से लंबी अवधि से जुड़े रहे हैं।

श्री महेश दुबे - "डॉक्टर ऑफ लाफ्टर" के नाम से पहचाने जाने वाले महेश जी मायानगरी मुम्बई के निवासी हैं, तथा 3,000 से भी अधिक मंच प्रस्तुतियाँ करने के बाद आप पहली बार हिन्दी यू.एस.ए. के आमंत्रण पर अमेरिका आ रहे हैं। महेश जी स्माइल टी.वी. चैनल के "हास्य कवि मुकाबला" कार्यक्रम के विजेता रहे हैं। इस मुकाबले में भारत के विभिन्न राज्यों के 72 हास्य कवियों ने भाग लिया था। इसके अतिरिक्त इनके कार्यक्रम स्टार टी.वी., सब टी.वी., सहारा टी.वी., म्यूजिक दूरदर्शन तथा मुम्बई के सभी स्थानीय चैनलों में पिछले कुछ वर्षों से बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

रेडियो सिटी के जाने-माने कार्यक्रम "हँसगुल्ले" को सफल बनाने में भी आपकी सक्रिय भागीदारी रही है।

"डॉक्टर्स डे" पर आपको मुम्बई के मेयर द्वारा 'डॉक्टर ऑफ लाफ्टर' से सम्मानित किया गया।

आपने अपनी कविताओं का संग्रह "महेश दुबे का पुलिंदा" नामक पुस्तक तथा हास्य वीडियो सी.डी. "हँस लो यार" में किया है, जो हिन्दी महोत्सव में उपलब्ध हैं।

श्री अभिनव शुक्ल - यह अमेरिका के लिए जाना-माना नाम है। हिन्दी यू.एस.ए. पाँच वर्ष पहले अभिनव जी को हिन्दी दिवस पर काव्य पाठ करने के लिए आमंत्रित कर चुका है, तथा यह द्वितीय अवसर है जब अभिनव जी हिन्दी यू.एस.ए. के बैनर के नीचे अपना काव्य कौशल दिखाने जा रहे हैं। आप एक अत्यधिक प्रतिभाशाली, बहिर्मुखी, तथा बहुविषयी युवा कवि हैं। आप विद्यार्थी जीवन से ही काव्य पाठ तथा राष्ट्रीय स्तर की काव्य प्रतियोगिताओं में रुचि रखते हैं। इनकी कविताओं के विषय इनके स्वयं के जीवन के अनुभवों तथा घटनाओं पर आधारित रहते हैं। आपकी कविताओं में हास्य, व्यंग्य, पीड़ा और राष्ट्रवाद तथा ओज सभी प्रकार के भावों को अनुभव किया जा सकता है, और यही कारण है कि श्रोताओं की बड़ी संख्या आपकी प्रशंसक है। देश और समाज की ज्वलंत समस्याओं पर आप सदैव ही नई-नई रचनाएँ गढ़ते रहते हैं। आपने अपनी रचनाओं को कुछ पुस्तकों और सी.डी. में भी बाँधा है, ताकि ये हमारे साथ हमेशा रह सकें।

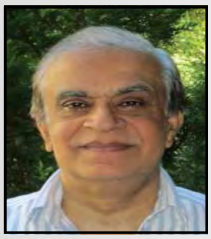

डॉ राजीव मलहोत्रा - यह एक ऐसा नाम है, जिसने भारत की सभ्यता को सही रूप में दर्शाने के लिए अपने व्यवसाय और व्यक्तिगत हितों की बलि देकर अपना जीवन एक सुव्यवस्थित शोध, अध्ययन, एवं लेखन कार्य में लगाया। इन्होंने भौतिक शास्त्र में डॉक्टरेट करने के बाद कम्प्यूटर और तकनीकी क्षेत्र में कई व्यापारिक संस्थान कई राष्ट्रों में प्रारंभ किए, परंतु अपनी सभ्यता पर हर जगह से प्रहार होते देख कर उसकी रक्षा करने हेतु अपने व्यवसायों को अपने कर्मचारियों को एक-एक डॉलर में बेच कर अपना पूरा समय गहन शोध कार्य व लेखन में लगा दिया।

पिछले वर्ष इनकी तीन पुस्तकें (Breaking India, Invading the Sacred, Being Different) प्रकाशित हुईं, जिनमें से हिन्दी यू.एस.ए. Being Different का सक्रिय रूप से प्रचार कर रहा है। यह पुस्तक हर भारतीय को पढ़नी चाहिए। इस पुस्तक के द्वारा राजीव जी हमें अपनी सभ्यता की उन विशेषताओं के बारे में बताते हैं, जो पश्चिमी सभ्यता से भिन्न हैं। वे इस पुस्तक में अपने सधे हुए तर्क देकर यह सिद्ध करते हैं कि इन विशिष्ट गुणों को बचा कर ही हम अपनी सभ्यता की एक अलग पहचान अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रख पाएँगे, अन्यथा हमारी अनुपम सभ्यता पाश्चात्य सभ्यता के पेट में पचा ली जाएगी।

यहाँ हिन्दी महोत्सव में राजीव मलहोत्रा जी की पुस्तक, 'Being Different' मात्र 20 डॉलर में उपलब्ध है। पुस्तक को एक स्मारिका बनाने के लिए राजीव जी उसमें अपने हस्ताक्षर भी करेंगे। आइये हम सभी एक आधुनिक विवेकानंद की सहायता करके अपनी संस्कृति को सुदृढ़ बनाएँ।

हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिकाओं की परिचर्चा

मेरा नाम धीरज बंसल है, और मैं पिछले १४ वर्षों से न्यू जर्सी (साउथ ब्रुन्स्विक) की निवासी हूँ।

मेरी हिंदी यू. एस. ए. के साथ यात्रा:

आज से ठीक चार वर्ष और छह माह पूर्व एक शुक्रवार की शाम मैं अपने बड़े बेटे के साथ हिंदी पाठशाला पहुची, और जब उसके पंजीकरण की बात की तो पता चला की सभी कक्षाएं भर चुकी हैं, और अगर अब एक और कक्षा खोलेंगे तो उस कक्षा को पढ़ाने के लिए दो स्वयंसेवी शिक्षिकाओ की जरूरत पड़ेगी। तब मैंने सहायक शिक्षिका के रूप में अपना हिंदी यू. एस. ए. की यात्रा प्रारंभ की, और यह यात्रा अभी तक चल रही है।

इन चार वर्षों के सफर में मैं कनिष्ठा २, प्रथमा १, और मध्यमा १ की शिक्षिका रह चुकी हूँ।

मेरा अनुभव:

यह एक ऐसा अनुभव है, जिसे मेरे लिए शब्दों में बयान करना मुश्किल है, पर मैं प्रयास करती हूँ।

पिछले चार वर्षों में मैंने एक बात अच्छी तरह से जान ली है कि जो भी काम निःस्वार्थ भावना से किया जाता है, उसका आनन्द हम देख ही नहीं सकते, बल्कि महसूस भी कर सकते हैं।

पहला वर्ष- प्रथमा १-सहायक शिक्षिका:

इस पहले वर्ष में मैंने बच्चों के साथ बहुत सी बाते खुद भी सीखीं, जैसे कि जब हम खुद पढ़ते हैं, तो हमे लगता है कि हमे सब कुछ आता है, पर जब हम पढ़ाने लगते हैं तो पता चला कि ये भी सीखना पड़ता है, या दूसरे शब्दों में कहूँ तो यह भी पढ़ना पड़ता है। इस स्तर में बच्चे नौ साल से ऊपर के थे। इन बच्चों को पढ़ाना बहुत मुश्किल नहीं था, पर मुश्किल लगा हिंदी की तरफ उनका रुझान बढ़ाना।

दूसरा वर्ष- कनिष्ठा-२-शिक्षिका:

इस स्तर में अधिकांश बच्चे छः या सात वर्ष के होते हैं। माना जाता है कि इस उम्र में अगर बच्चों को एक से अधिक भाषाओं से परिचित कराया जाये तो वे बहुत जल्दी दूसरी भाषा सीख जाते हैं। इस कक्षा के साथ मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा, और हर बच्चे ने पूरी रूचि के साथ इस स्तर की पढ़ाई की। बच्चे तो मन के सच्चे होते हैं। जितना प्यार आप उन्हें देंगे, उससे अधिक वे आपको करेंगे। मेरा अनुभव कुछ ऐसा ही रहा है। मुझे इन बच्चों से निस्वार्थ प्यार मिला। इस कक्षा के बच्चे पहले ही दिन से मुझसे और मैं उनसे हिलमिल गए थे। कोई बच्चा मिस्सेस बंसल कहता तो कोई मिस धीरज कहता तो कोई धीरज आंटी कहता। थोड़े ही दिनों में हर बच्चा अपना सा लगने लगा। कही भी मुझे देख लेते तो आकर, गले लग जाते, चाहे वह जगह मॉल हो, या फिर शॉप राईट, या फिर हो अपना हिंदी यू. एस. ए.। और जब कभी भी ऐसा होता था, तब मेरा मन एक ही बात बोलता था, और अब भी बोलता है कि मुझे मेरा निस्वार्थ भाव से

शिक्षा देने का परिणाम मिल गया।

शिक्षक हर बच्चे पर अपनी एक छवि छोड़ देता हैं, और हर एक अच्छा शिक्षक यही चाहेगा कि उसके हर एक बच्चे पर उसकी अच्छी छवि पड़े। और वह छवि इस हद तक पड़ती है कि , कई बार, बच्चा, अपने माता पिता का कहना नहीं मानता, और कहता है कि मेरी शिक्षिका ने जैसा कहा है, मैं वैसा ही करूँगा या करूंगी।

इस एक साल में, मैं इन बच्चों से इतना प्यार करने लगी कि अगले साल इसी कक्षा के साथ आगे बढ़ने का निश्चय किया।

तीसरा वर्ष -प्रथमा -१ -शिक्षिका:

जैसे ही पहले दिन बच्चों ने मुझे देखा तो वे इतने खुश हुए कि उनके चेहरों को देखकर उनके माता-पिता और मैं एक संतुष्टि का अनुभव करने लगे। इस वर्ष हम लोगों ने जोर-शोर से पढ़ाई शुरू की, और एक लाभ यह भी था कि मैं जानती थी कि सभी बच्चों को क्या-क्या आता है।

बच्चों को भी उत्साह था कि इस नए वर्ष में हम क्या-क्या नया सीखेंगे।

मेरी कक्षा के बच्चों को हमेशा से ही कविता प्रतियोगिता और महोत्सव में रूचि रही है, और सभी ने दोनों ही जगह पूरी तरह से भाग लिया।

चौथा वर्ष -मध्यमा -२ -शिक्षिका:

इस वर्ष मुझे नई कक्षा, नए बच्चे मिले। बच्चे पांचवी और छठी कक्षा के हैं। इस कक्षा के बच्चे बहुत समझदार हैं, क्योंकि थोड़े बड़े हैं। शुरू-शुरू में पुराने बच्चों की बहुत याद आई, आखिर पूरे २ वर्ष साथ में बिताए थे, पर अब इस कक्षा में भी पढ़ाने का अपना ही आनंद आ रहा है।

मेरी यात्रा कब तक हिंदी यू .एस.ए .के साथ:

हर शुक्रवार सुबह से ही शाम की तैयारी शुरू हो जाती है। यदि हिंदी कक्षा न जाऊँ तो कुछ अधूरा सा लगता है। भगवान ने चाहा तो मेरा और हिंदी यू .एस .ए. का साथ यूँ हीं चलता रहेगा।

दिशा सबलोक, वुडब्रिज हिंदी पाठशाला

मैंने एक साल पहले हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में अध्यापन का कार्य शुरू किया है, और मैंने कनिष्ठ - 1 के विद्यार्थियों को पढ़ाया है। मेरा पढ़ाने का अनुभव बड़ा ही अच्छा रहा। बच्चों में सीखने का बहुत उत्साह दिखा। बच्चों के घर में दूसरी भाषा में बात करने के बावजूद उनको हिंदी में पढ़ाई गयी कविता, खेल, गिनती, रंग सभी कुछ याद रहते हैं, जो प्रशंसनीय है। मुझे लगता है कि यह कार्य आवश्यक है, और इसे मैं पूरी निष्ठा और लगन के साथ करूँगी।

वाणी गिरीश, पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला

मै ३ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में मध्यमा - 1 स्तर में अध्यापन का कार्य कर रही हूँ। मुझे इस स्तर में पढ़ाना बहुत ही रुचिकर लगता है। हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका में स्थित हम जैसे प्रवासी भारतीयों के बच्चों को हिंदी सिखाने का बहुत ही नेक काम कर रहा है। इस महा कार्य में भागी बनने का जो अवसर मुझे मिला है, उससे मै बहुत ही संतुष्ट हूँ। मेरा ३ साल से हिंदी पढ़ाने का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। बच्चों को पढ़ाने से मेरे मन को शांति मिलती है, और ऐसा लगता है जैसे मैं भगवान जी की सेवा कर रही हूँ।

जब तक मै अमेरिका में हूँ, तब तक मै हिंदी यू.यस.ए. में शिक्षण का कार्य करना चाहती हूँ।

परिचय : मंजु जी रटगर्स विश्वविद्यालय, न्यू जर्सी से एम.एड. की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। भारत में नागपुर विश्वविद्यालय से आपने गणित में स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की। मंजु जी को खाना पकाना, मित्रों से मिलना-जुलना व परिवार के साथ समय बिताना अच्छा लगता है।

मेरा नाम मंजु उके है, और मैं हिंदी यू. एस. ए. की शाखा पिस्कैटवे में मध्यमा स्तर-2 की अध्यापिका हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. से पिछले तीन वर्षों से जुड़ी हुई हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि हिंदी यू.एस.ए के बच्चों को हिंदी भाषा सिखाने के अभियान से जुडने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ।

भारत के विभिन्न राज्यों से आने वाले माता-पिता अपने बच्चों को हिंदी भाषा सिखाने के लिए जिस प्रकार उत्साहित हैं, उसे देखकर मैं और भी प्रोत्साहित हो उठती हूँ। हिंदी पाठशाला के माध्यम से जैसे प्रत्येक शुक्रवार को एक छोटा भारत दर्शन करने को मिलता है। मैंने अब तक प्रथमा-2, मध्यमा-1, और मध्यमा-2 के स्तर के बच्चों को हिंदी पढ़ाई है। इन बच्चों को पढ़ाने और आगे बढ़ता देख मुझे बहुत आनंद प्राप्त होता है। जिस प्रकार सभी विद्यार्थी हिंदी भाषा सीखने का भरसक प्रयास करते हैं, यह देखकर उन पर गर्व महसूस होता है।

मुझे आशा है कि मेरे सभी विद्यार्थी भी बहुत रुचि से हिंदी सीखते हुए आत्मविश्वास की अनुभूति करते होंगे। मेरा यही प्रयास है कि बच्चे प्रसन्न्ता से हिंदी भाषा सीखें और बोलें। बच्चों को हिन्दी सिखाते हुए मैं भी उनकी सीखने की क्षमता अनुसार सिखाने के नये-नये के तरीके सीख रही हूँ।

भक्त के जीवन के दो सूत्र हैं, प्रार्थना और प्रतीक्षा

नीरु जी ने भारत में विज्ञान स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और एडिसन ने मिडल स्कूल में विज्ञान की शिक्षिका हैं। नीरु जी ने भारत में सैनिक विद्यालय में 7 वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया। अभी पिछले 10 वर्षों से अपने 2 बच्चों व पति के साथ अमेरिका में रही हैं।

विदेश में आने के बाद सभी को अपने देश और अपनों की बहुत याद आती है। परंतु परिस्थितियों के आगे किसी का वश नहीं चलता। मेरा भी अनुभव कुछ ऐसा ही रहा, जब मैं इस देश में लगभग 10 वर्ष पहले आई। भारत में मैं उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर से हूँ, परंतु मैंने अपना सारा बचपन काश्मीर की वादियों में बिताया।

यहाँ आने के बाद अपने जीवन में व्यस्त रहने के बाद भी कुछ खालीपन सा लगता था। तब किसी ने मुझे हिंदी यू.एस.ए. संस्था के बारे में बताया और उसी वर्ष से मैंने इस संस्था की वुडब्रिज पाठशाला में अध्यापन का कार्य आरम्भ कर दिया।

अनुभव के बारे में बताते-बताते अपना नाम तो बताना ही भूल गई। मैं नीरु नांगिया पिछले तीन वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। पहले मैंने मध्यमा-1 के बच्चों को पढ़ाया परंतु पिछले 2 वर्षों से प्रथमा-1 के बच्चों को हिंदी पढ़ा रही हूँ।

बच्चों के अध्यापन का कार्य मैं पिछले 10 वर्षों से कर रही हूँ, परंतु विदेश में आकर हिंदी पढ़ाने का अनुभव अनोखा ही रहा। बच्चों से भी बहुत कुछ सीखने को मिला। कई बच्चों ने तो हिंदी को बहुत प्रयत्नों से सीखा, और बहुत उत्साह से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया।

वैसे तो हिंदी यू.एस.ए. के बढ़ते प्रचार-प्रसार से ही आभास होता है कि इसमें काम करने वाले सभी लोग बहुत ही लग्न और परिश्रम से अपना कार्य कर रहे। सुझाव के तौर पर बस इतना ही कहना है कि कविता पाठ का एक और स्तर बना दिया जाए ताकि सेमी-फाइनल का समय कम हो जाए। सभी पाठशालाओं के बच्चों को 4-5 पाठशालाओं को मिलाकर कई वर्गों में बाँट दो और उनके विजेताओं को सेमी फाइनल में प्रवेश दें और फिर फाइनल के रूप में अगले चरण में।

अंत में बस इतना ही कहना है कि जिस प्रकार से हिंदी का प्रसार हुआ है उसका श्रेय हिंदी यू.एस.ए. को ही जाता है और मेरी बस यही प्रार्थना है कि यह संस्था इसी प्रकार बढ़ती रही।

ज़िंदगी है सबसे बड़ा शास्त्र

बहुत कुछ सिखा देती है

ज़िंदगी के अनुभव हैं

सबसे बड़ी पगडंडी

बहुत कुछ बता देते हैं....

जन्म: भारत; शिक्षा: एम. ए., (हिंदी एवं इंग्लिश), पी-एच.डी (इंग्लिश), सितार एवं पत्रकारिता में डिप्लोमा। कवियत्री/लेखिका/पत्रकार (नमस्ते अमेरिका समाचारपत्र) एवं अनुवादिका के रूप में कार्यरत। संस्कार पत्रिका, (मुंबई से प्रकाशित) की विशेष प्रतिनिधि (अमरीका), अमरीका में हिंदी संस्था "विश्व-हिंदी-ज्योति", की संस्थापक अवम जन-संपर्क अधिकारिणी। बिखरे मोती,कादम्बरी एवम अछूते स्वर, ओस में भीगते सपने, चार (काव्य-संग्रह), अनेकों भारतीय एवम अमरीका की पत्र-पत्रिकाओं में कहानी, कविता, कॉलम, एवम लेख।

विदेशों में हिन्दी शिक्षण

अनीता कपूर

हिंदी की चादर विश्व को कितनी ज्यादा ढांप चुकी है, इसकी दो ताज़ा मिसाल देना चाहूंगी...

एक दिन, अचानक रास्ते में बे-ट्रांसिट की बस पर मेक्डोनाल्ड का विज्ञापन को हिंदी में लिखा हुआ पाया, पहले तो एकदम से ही आँखों पर जैसे यकीन ही नहीं हुआ.. पर दूसरे ही क्षण मन जैसे गर्व से भर उठा, यह सोच कर कि, हिन्दी अब अमरीका में भी कितनी आगे बढ चुकी है...

और दूसरा उदाहरण...अभी हाल ही में ऊषा राजे सक्सेना जी का एक साक्षात्कार पड़ने को मिला, जिसमें उन्होने बताया की ब्रिटन में भारतीयो को हिन्दी बोलने में लज्जा नहीं आती, बल्कि वे खुशी से हिन्दी में बात करते है....जानकार अच्छा लगा...

भारत में अंग्रेजी की बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद आंकड़ों के हिसाब से हिन्दी बोलने वालों की संख्या दुनिया में आज तीसरे नंबर पर है। विदेशी विश्वविद्यालयों ने हिन्दी को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आंकड़ों के अनुसार आज अमरीका के 51 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई हो रही हैं, जिसमे कुल 1430 छात्र पढ़ रहे हैं। अमरीका के ही पेनसिल्वानिया यूनिवर्सिटी में एम. बी. ए. के छात्रों के लिए हिंदी का दो वर्ष का पाठ्यक्रम भी चल रहा है। न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय में भी हिन्दी एक विषय है....जहां अमेरिकी मूल के विद्यार्थी भी पड़ने आते हैं...

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए, हिन्दी के प्रचार और प्रसार का अमरीका में बहुत काम किया जा रहा है, जिसके चलते अमेरीका के अलग -अलग शहरों में कई हिन्दी सेवी संस्थाएं और पाठशालाएँ हैं.....यहाँ एक दो हिन्दी पाठशालाओं का जिक्र करना चाहूंगी...न्यू जर्सी में श्री देवेंद्र जी और उनकी पत्नी रचिता सिंह जी दोनों हिन्दी पाठशालाएँ चला रहे हैं....और आप विश्वास नहीं करेंगे कि उन्होने सिर्फ 2 बच्चों से यह कार्य प्रारंभ किया था, और आज उनके पास हिन्दी पढ़ने वाले 4000 के लगभग विद्यार्थी हैं, 40 स्कूल हैं और 250 हिन्दी शिक्षक हैं। उनका अपना पाठ्यक्रम है, जिसमें भाषा और संस्कार का पूरा ध्यान रखा गया है। वहाँ दक्षिण भारतीय परिवार के बच्चे भी हिन्दी सीखने के लिए आते हैं। वर्णमाला हिन्दी और इंग्लिश दोनों में रहती है। उस पाठ्यक्रम में कवितायें भी हैं, हिन्दी और रोमन में, और यह इसलिए कि अमरीका अंग्रेजी बोलने वाला देश है, और वहाँ के बच्चे अंग्रेजी पहले जान जाते हैं। इसलिए अंग्रेजी के द्वारा ही वे हिन्दी सीखते हैं। हिन्दी की प्रगती को देखते हुए श्री देवेंद्र जी की विश्व हिन्दी भवन बनाने की भी योजना है।

इसी तरह कैलिफोर्निया में भी हिन्दी स्कूल हैं, जैसे ऊषा और मधु भाषा केंद्र। इनके भी अपने पाठ्यक्रम और शिक्षक हैं, जो वहाँ की पाठशालाओं में जा कर हिन्दी की कक्षाएँ लेते हैं। वहाँ हर वर्ष कवि सम्मेलन भी किए जाते हैं।

जो बच्चे किसी वजह से स्कूल में हिन्दी नहीं सीख पाते, उनकी सुविधा के लिए कम्युनिटी सेंटर्स में हिंदी की कक्षाएँ चलती हैं। संस्था का पहला नैतिक कर्तव्य हमेशा होता है कि बच्चों में हिन्दी के प्रति प्रथम भाषा का भाव जगे, और वे स्वत: ही भाषा के प्रति जागरूक हों। इसके लिए स्कूल की छुट्टी होने के बाद विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। शनिवार और

रविवार को बाल विहार स्कूल चलते हैं, जहाँ बच्चों को हिन्दी की वर्णमाला लिखना और पढ़ना सिखाया जाता है। प्रवासी बच्चों के लिए विशेष पाठ्यक्रम बनाए जाते हैं, और जिन बच्चों का जन्म अमरीका में हुआ है उनको भी किस पद्ति से पढ़ाया जाये, उसके लिए न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिए “Startalk” नाम का प्रोगाम करती है। स्कूल की छुट्टियों में हिन्दी के विशेष शिविर भी आयोजित किये जातें हैं। अभिभावकों से निवेदन किया जाता है कि घर में वे बच्चों से अधिकतर हिंदी में ही वार्तालाप करें, जिससे उन्हें हिंदी बोलने में सहायता मिलेगी। हिंदी भाषा तो बहुत सरल भाषा है। अफगानी और मैक्शिकन हिन्दी फिल्म देख कर हिन्दी बोलना सीख गए हैं। बच्चों में हिंदी के प्रति रूचि पैदा करने के लिए हिंदी फिल्मों और गीतों की भी सहायता ली जाती है, जैसे गायन और नृत्य प्रतियोगिता। नयी पीढ़ी की दिलचस्पी हिंदी में बढ़ाने के लिए, और इसकी साहित्यिक पहचान कराने के लिए बहुत काम हो रहा है। हिन्दी के बढ़ते प्रचार को देख वहाँ बसे प्रवासी भारतीय के मन में यह सवाल जो कुछ अरसा पहले उठता था, कुछ धुंधला सा होता जा रहा है "कि अपना देश छोड़ कर हम यहाँ क्यों आ बसे हैं। हमारे इस फैसले से कहीं हमारें बच्चे अपनी संस्कृती और भाषा से दूर तो नहीं हो जायेंगे?..आदि आदि"! अब जैसे-जैसे वहाँ हिन्दी का काम बढ़ रहा है, तो उन्हे एक खुशी है कि अब हमारे बच्चे इस बार जब दादा-दादी या नाना-नानी से मिलेंगे तो कम से कम वे हिन्दी में उनसे वार्तालाप कर पाएंगे।

आप जानकार हैरान होंगे कि अमरीका में बाकयदा हनुमान चालीसा को हिंदी में पढ़ना सिखाया जाता है।

हिंदी आज वैश्विक भाषा का प्रतिनिधित्व करती है। इसके बावजूद अमरीका में भी एक खास वर्ग ऐसा है जो भाषा को लेकर मानसिक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। उनकी समझ के अनुसार अँग्रेजी में बात करना ही status symbol दर्शाता है। उनकी सोच को बदलने के लिए वहाँ हिन्दी प्रचार से जुड़े लोग चिंतित हैं कि आने वाले समय में हिन्दी भाषा कहीं विद्वानों की भाषा ही न बन कर रह जाये। इसलिए अपनाए हुए देश की भाषा के साथ-साथ अपनी मातृ भाषा का भी सम्मान बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास हो रहा है।

लेकिन जहाँ इस बात की ख़ुशी है कि विदेशों में हिन्दी की महत्ता पिछले सालों में बहुत बढ़ी है, वहीँ इस बात का दुःख भी है कि भारत में नयी पीढ़ी पर अंग्रेजी का भूत चढ़ रहा है। कहीं ऐसा न हो कि विदेशों में हैसियत हासिल कर रही हिन्दी स्वयं भारत में उपेक्षित हो जाए।

भाषा, संस्कृति और धर्म एक त्रिकोण हैं, और हमेशा ही जुड़े रहते हैं। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय अपने देश से कभी दूर नहीं हो पाए। यह त्रिकोनी देशी महक और दूर तक फैले, ऐसी कामना करते हुए, आपका सबका धन्यवाद।

हिन्दी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

अनीता कपूर

वैश्विक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में आज हिन्दी भाषा की जब चर्चा होती है, तो हम पाते हैं कि विश्व के स्तर पर हिन्दी भाषा के महत्व को अब व्यापक स्वीकृति मिल रही है। हिन्दी न सिर्फ संवाद का माध्यम है, अपितु संस्कृति और साहित्य की भी सबल समर्थ स्ंवाहिका बन गयी है। भारत में अंग्रेजी की बढ़ती लोकप्रियता के बावजूद आँकड़ों के हिसाब से हिन्दी बोलने वालों की संख्या दुनिया में आज तीसरे नंबर पर है। विदेशी विश्वविद्यालयों ने हिन्दी को एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है, जहाँ हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों में सिर्फ भारतीय मूल के ही नहीं, वरन स्थानीय मूल के और अन्य देशों के विद्यार्थी भी हैं। वहाँ संस्कृति और समाज के अध्ययन के अंतर्गत हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था है।

विश्व में हिन्दी के परिप्रेक्ष्य की बात जब हम करते हैं तो कई धाराएँ बहती हुई दिखाई देती है, जिसमे प्रवासी हिन्दी

साहित्यकार प्रमुख हैं, जिन्होंने विदेशों में रहते हुए भी अपनी भाषा से जुड़े रहकर हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं को समृद्ध किया, फिर चाहे वह कहानी, कविता, नाटक, नृत्य और पत्र-पत्रिकाएँ हों या हिन्दी को पढ़ाना हो। हिन्दी के व्यापक विस्तार में विदेश मे बने मंदिरों, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं और उनसे जुड़ी गतिविधियों को नकारा नहीं जा सकता, जो सतत रूप से हिन्दी के विकास में लगे हुए हैं। मंदिरों और संस्थाओ द्वारा हिंदी के कोचिंग सेण्टर भी हिंदी को बढ़ावा देने में अपना योगदान कर रहे हैं। कवि-सम्मलेन और हिंदी-गोष्ठियों के माध्यम से भी हिन्दी को बढ़ावा मिल रहा है।

वैश्विक स्तर पर हम हिन्दी भाषा को देखें तो मुख्य रूप से उन प्रवासी साहित्यकारों के योगदान का जिक्र करना आअवश्यक है, जिनके पूर्वज गुलाम भारत से मजदूरी के लिए भिन्न देशों में ले जाये गए थे, फिर भी उन्होंने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और भाषा को बचाए रखा। जिसके फलस्वरूप आज देखें कि, मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद और गयाना में भारतीय कलम से साहित्य को कितना समृद्ध किया जा रहा है। यह और बात है कि वहाँ बोले जाने वाली हिन्दी उस देश के नाम के साथ जानी जाती है जैसे फ़िजी हिन्दी, मारीशस हिन्दी वगैरह।

भाषा के विकास और प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान होता है। अमरीका, कनाडा, यू.के. और औस्ट्रेलिया से कई पत्रिकाएँ और समाचार पत्र लगातार प्रकाशित हो रहे हैं, जैसे हिन्दी टाइम्स और हिन्दी अब्रोड, साप्ताहिक हिन्दी समाचार कनाडा से, हिन्दी गौरव औस्ट्रेलिया से, हिन्दू टाइम्स, न्यूज़ीलैंड से भारत दर्शन, नमस्ते यूएस, हिन्दी-जगत, हिन्दी-चेतना और कर्मभूमि अमरीका से।

जनसंचार माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने में जनसंचार माध्यमों का भी अत्यधिक योगदान है। रेडियो, टेलीविजन, और अब इंटरनेट के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। विदेशों में ऐसे कई चैनल हैं जो दिन भर हिंदी के गाने और फिल्में दिखाते है। हिंदी प्रेमी इंटरनेट के माध्यम से भी हिंदी साहित्य तक पहुँच रहे हैं, और हिन्दी में लिखते भी हैं।

भाषा की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती, और न कि किसी क्षेत्र का बंधन। हम यह जाकर और भी गौरान्वित महसूस करेंगे कि हिंदी अमरीका की राजनीति से भी अछूती नहीं रही। हिन्दू लीडर श्री राजेन जेड जी, अमरीका के नेवाडा, कैलिफोर्निया, अरिजोना तथा और भी कई राज्यों में असेम्बली और सीनेट में सत्र के दौरान, सत्र की शुरूआत हिन्दू प्रार्थना से करने के लिए आमत्रित किये जा चुके हैं।

हिन्दी भाषा की विश्व स्तरीय भूमिका का मूल्यांकन भारतीय प्रवासियों द्वारा किए गए कार्यों, उनके लेखन और साहित्यिक उपलब्धियों द्वारा आँका जाना ठीक है, पर इसी के साथ वहाँ कार्यरत प्रशासनिक अधिकारियों और दूतावासों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को और आगे बढ़ कर योगदान देना होगा, जिससे हिन्दी विश्व की पहली अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन जाए। विदेश में भारतीय दूतावासों को खासकर हिन्दी में और काम करना चाहिए। इस दिशा में हमें अभी और भी एकजुट होकर बहुत काम करने की जरूरत है। जिस तरह पूरी दुनिया में अँग्रेजी का बोलबाला है, और भारतीय अँग्रेजी, ब्रिटिश अँग्रेजी तथा अमेरिकन अँग्रेजी जैसे पदबंध प्रचलित हो गए हैं, वैसे ही एक संभावना हरेक हिन्दी प्रेमी के मन में है कि ठीक इसी तरह भविष्य में हिन्दी भी, ब्रिटिश हिन्दी, अमेरीकन हिन्दी या रशियन हिन्दी हो जाये। इस सपने को पूरा करने के संदर्भ में हमें उन देशों से सीखना होगा जो अपनी मात्रभाषा से प्रेम करते हैं, और उसके प्रचार के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

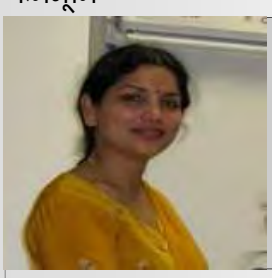

सविता जी ने हिन्दी में M.A. किया है। ये विश्व भाषा हिन्दी की प्रमाणित शिक्षिका (certified teacher) हैं और इन्होंने न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय से 'स्टारटॉक शिक्षक प्रशिक्षण' भी पाया है। ये पिछले तीन वर्षों से 'हिन्दी यू.एस.ए.' में बच्चों को हिन्दी पढ़ा रहीं हैं और वहाँ से इनको प्रथमा-2 स्तर की संचालिका और कर्मभूमि पत्रिका में शुद्धिकरण कार्य में योगदान का भी अनुभव है। ये ACTFL से OPI 'टेस्टर सर्टिफिकेशन' कर रहीं हैं। इन्होंने स्टारटॉक के कई कार्यक्रमों में स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को पढ़ाया है। इनको न्यू यॉर्क के सिटी कॉलेज में पढ़ाने का भी अनुभव है।

भले-बुरे का निर्णायक कौन, लोग या मेरा अंतर्मन

सविता नायक

हम जैसे-जैसे बड़े होते हैं, कई अच्छी-बुरी बातें देखते, सुनते और पढ़ते हैं। प्रत्येक कर्म के दो पक्ष रहते हैं, अच्छा और बुरा, उचित और अनुचित! आदतें और व्यसन भी उचित और अनुचित हो सकते हैं। इसके साथ ही अधिकार और निजी विषय की बात भी आती है। यदि किसी व्यक्ति की किसी आदत, कर्म या व्यवहार से किसी अन्य जन को दुःख या क्षति नहीं पहुंचती तो इस आभास मात्र से ऐसा व्यक्ति अपने कार्य प्रसन्नता से और निश्चिन्त होकर कर पाता है। इस आभास से अनभिक्ष रहकर और निज हित में केंद्रित रहकर भी कुछ लोग अल्प अवधी के लिए प्रसन्नचित रह लेते हैं। ऐसे लोग अपनी ही धुन में रहते हैं, और उनको इस बात का आभास नहीं हो पाता कि उनसे कोई भूल हुई, या किसी को उनकी बात से दुःख पहुंचा। कई बार ऐसे लोगों को अपने शुभचिंतकों या दूसरों की भूल की ताक में रहने वाले लोगों के कारण शीघ्र ही अपने अच्छे-बुरे कर्म या उसके प्रभाव का ज्ञान हो जाता है लेकिन कई बार उनको अपनी ख्याति या स्वयं द्वारा किसी के प्रति हुई क्षति का ज्ञान विलम्ब से होता है।

हम बचपन में एक कहानी पढ़ते थे कि कैसे एक पिता और पुत्र बाज़ार से एक खच्चर खरीद कर अपने घर को जा रहे होते हैं। ऐसे में, पिता ने पुत्र को खच्चर पर बिठाया और स्वयं साथ चलने लगे तो देखने वाले लोगों ने कहा “कैसा पुत्र है जोकि स्वयं खच्चर पर बैठा है और पिता चल रहा है!” बेटे को सुनकर दुःख लगा तो उसके आग्रह पर पिता स्वयं बैठे और बेटा साथ-साथ चलने लगा। अभी थोड़ी दूर ही पहुंचे होंगे कि देखने वाले लोगों ने कहा “कैसा पिता है, स्वयं आराम से बैठा है और बच्चे को चलवा रहा है!” इतना सुनकर पिता-पुत्र ने विचार-विमर्श किया और दोनों खच्चर पर बैठ गए। इस बार लोगों ने देखा तो कहा “अरे देखो इन दोनों को! ये निर्दयी तो खच्चर की जान लेंगे!” अति तो तब होती है जब पिता-पुत्र इस खच्चर को आराम देने और लोगों को प्रसन्न करने के लिए खच्चर के आगे-पीछे के पैरों को एक बांस के डंडे से बाँधकर अपने कंधे पर उठाकर चलने लगते हैं और इस बार लोग उनको महामूर्ख कहकर हँसी उड़ाते हैं!

ऐसे में चिंता और लज्जा से दुखी पिता और पुत्र खच्चर से उतर गए और चलने लगे। तो क्या अब दर्शक गण चुप रहे? जी नहीं! इस बार लोगों ने देखा तो कहा “ये व्यक्ति भी कितना मूर्ख है! इतना नहीं सोचता कि खच्चर पास में है तो उसपर बैठा जाए!” घूम-फिरकर बात वहीँ की वहीँ आ गयी। बहुत बार किसी कार्य के उचित-अनुचित होने के ज्ञान के लिए लोगों की बातों या उनके दृष्टिकोण से भी अधिक शायद स्वयं के अंतर्मन की आवाज़, इच्छा, विवेक और दृढ़ निश्चय अधिक सहायक होते हैं।

उपरोक्त कहानी के उदाहरण से यह तो स्पष्ट है कि कोई व्यक्ति अगर सबको प्रसन्न करने की प्रबल इच्छा रखे और प्रयत्न करे तो भी हर किसी को प्रसन्न नहीं कर सकता। लेकिन लोगों की अप्रसन्नता के भय से कर्म का त्याग भी

संभव नहीं है। और अगर हम क्षण भर विचार करें तो पायेंगे कि कई बार किसी भी विषय पर अचानक प्रसन्नता या आवेश में 'कुछ भी कह देना' कुछ लोगों की आदत सी होती है। ऐसे में सर्वदा प्रत्येक व्यक्त विचार के पीछे किसी को दुःख पहुँचाने की भावना नहीं होती। अगर लोगों को सोच-विचार का समय मिले या वे जान पायें कि उनके द्वारा किये गए किसी कार्य या बात से कैसे किसी को अपार हर्ष या अपार पीड़ा पहुँच सकती है तो संभवतः वे भी कुछ सोच-विचार के पश्चात ही कष्टमय कार्य या विचार व्यक्त करेंगे।

दुनिया में अधिकांश व्यक्ति यह इच्छा रखते हैं कि लोग उनको पसंद करें, उनकी सराहना करें, उनसे स्नेह करें, उनके द्वारा हुई गलती को शीघ्र ही भूल जाएँ, और उनके द्वारा किये गए अच्छे कार्यों को सदैव याद रखें। इस विषय में हर्ष और सकरात्मक बात यह है कि लोग दूसरों से स्नेह और सद्व्यवहार की आशा रखते हैं। इस इच्छा पूर्ती के लिए इतना तो करना होगा कि दूसरों से जैसे व्यवहार की आशा करें, वैसा ही व्यवहार उनसे करें, अन्यथा "बोये पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होए?"

कर्म तो सबको करना ही है। कोई भी कर्महीन रहकर जीवन यापन नहीं कर सकता। और कुछ नहीं तो निश्वास लेने जैसा अति सामान्य किन्तु जीवन रक्षक कार्य तो सभी स्वाभाविक रूप से कर ही रहे हैं। बस इस प्रक्रिया के साथ श्रेष्ठ या उचित ध्येय को संयोजित करके कर्म को सार्थक बनाना है।

भगवद्गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन को कर्म का महत्व बताते हुए कहते हैं...

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

अर्जुन भगवान कृष्ण से अपनी हर जिज्ञासा और संशय का उत्तर जानने के पश्चात कुरूक्षेत्र की युद्धभूमी में प्रवेश करते हैं। कुरुक्षेत्र का युद्ध किसी आत्मीय या मित्र के विरुद्ध नहीं, अपितु धर्म और जन हित की रक्षा और कल्याण के लिए था। कार्य की सार्थकता और औचित्य मनोबल के साथ-साथ कार्य करने की गतिशीलता को बढ़ाते हैं।

निज हित के लिए प्रयत्न और कार्य करना सहज, उचित एवं स्वाभाविक है, किन्तु बहुत से लोग अपनी व्यस्तता या अनिच्छा के कारणवश स्वयं लोक हित के कार्यों के लिए विशेष योगदान नहीं दे पाते। लेकिन ऐसे में इतना तो किया जा सकता है कि अन्ना हजारे जी जैसे जो लोग जन हित और देश हित के लिए कार्य कर रहे हैं, हम उन जैसे लोगों की सराहना करके उनका मनोबल बढ़ाएं, और ऐसे कार्यों में यथासंभव आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक योगदान दें।

हर वस्तु या कण का सृजन हुआ है तो उसका नष्ट होना भी निश्चित है। कुछ लोगों के चले जाने पर कहा जाता है "अच्छा था!" और कुछ लोगों के चले जाने पर कहा जाता है "अच्छा हुआ!" दोनों वाक्यों में कुछ हेर-फेर शब्दों का है, और कुछ कर्मों का। परस्पर मिलने पर एक दूसरे के लिए स्नेह, विश्वास और श्रद्धा का अनुभव हो तो उस से बड़ा पुरस्कार और क्या होगा और अगर ऐसा कुछ भी न हो तो उस से बड़ा दंड और क्या होगा! भले-बुरे के निर्णय के लिए शायद इतनी कसौटी ही बहुत है।

अर्चना कुमार जी हिन्दी यू.एस.ए. से लगभग 7 वर्षों से जुडी हुई हैं। वुडब्रिज पाठशाला की संचालिका होने के साथ-साथ आप हिन्दी यू.एस.ए. के निदेशक मंडल की सदस्या भी हैं। अर्चना जी प्रथमा 2 और मध्यमा 2 स्तरों का निर्देशन करती हैं। ये कविता पाठ प्रतियोगिता का संचालन भी करती हैं। लेखों को टंकण करना, उनका पुनरावलोकन करना, दूरभाष सभाओं का आयोजन करना एवम् उनमें भाग लेना, हर हिन्दी यू.एस.ए. की सभा और कार्यक्रम में आगे बढ़ कर भाग लेना, दूसरे कार्यकर्ताओं की सहायता को सदैव तत्पर रहना, इत्यादि ऐसे कार्य हैं जिनमें अर्चना जी का कोई सानी नहीं। हिन्दी यू.एस.ए. शायद आज इतनी लोकप्रियता न पा पाता, यदि इसे अर्चना जी जैसे कार्यकर्ता न मिले होते।

इसलिए मेरा भारत महान

संकलन - अर्चना कुमार

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

कर्मभूमि के पिछले अंक में आपने बाबा श्री सत्यनारायण मौर्य जी द्वारा लिखित पुस्तक "इसलिए मेरा भारत महान" में लिखित बहुत से सत्य तथ्य पढ़े जो सम्भवतः हम सभी को मालूम भी होंगे। इसी धारावाहिता में यहाँ प्रस्तुत हैं कुछ और तथ्य जो आप सभी पाठकों से बाँटने का मन चाहा।

हमारे पूर्वजों ने सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में सम्यक् प्रगति की थी और इसी कारण स्वस्थ, सम्पन्न और सामर्थ्यशील समाज का निर्माण भी हुआ था। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में की गई प्रगति के कुछ नमूने मात्र प्रस्तुत हैं।

पायथागोरस थ्योरम् या बौधायन सूत्र - "आयत के कर्ण के ऊपर बनाया गया वर्ग, क्षेत्रफल में उन दोनों वर्गों के योग के समान होता है, जो आयत की दो भुजाओं पर बनाए जाते हैं।" यह सैद्धांतिक सूत्र मूलत: वैदिक 'बौधायन सूत्र' में स्पष्टतः वर्णित है।

दीर्घचतुरस्त्रस्याक्ष्ण्या रज्जु: पाश्र्वमानी तिर्यक मानी यत्पृथग्भूते कुरुतस्तदुभयं करोति।

जो प्रमेय पायथागोरस के नाम से प्रचलित है, वह प्राचीन भारतीयों को मालूम था। आज विश्व के तमाम् लोग इस बात को स्वीकारते तो हैं, परंतु अभी भी न केवल विदेशों में वरन् भारत में भी इस सूत्र को ग्रीक गणितज्ञ पायथागोरस 'पाँचवीं शती ईस्वी पूर्व' के नाम से ही पढ़ाया जा रहा है।

भास्कराचार्य - आर्यभट्ट ने जिन महान सिद्धांतों को ऋषियों की भाँति सूत्ररूप में व्यक्त किया था, भास्कराचार्य ने ऐसी अनेक बातों को सहज सरल रूप में व्यक्त किया। सूर्यसिद्धांत उनकी महत्वपूर्ण रचना है। गणित की प्रसिद्ध पुस्तक 'लीलावती' इसी पुस्तक का एक भाग है। महान गणितज्ञ, ज्योतिषी, भौतिक विज्ञानी के रूप में भास्कराचार्य का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने गणित के अनेक सूत्रों की खोज की एवं उन्हें सरलतम रूप में प्रस्तुत किया। गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या की। पृथ्वी गोल है, अंतरिक्ष में निराधार स्थित है। गति के नियमों को स्पष्ट रूप से समझाया। बाद में इन्हीं नियमों को विश्व ने ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। भास्कराचार्य जी ने अपनी पुस्तक 'लीलावती' में जिन गति नियमों का प्रतिपादन किया है -

प्रथम नियम - [V=U+at] ; द्वितीय नियम - [S = ut+1/2at2]

चक्र - मनुष्य को युग को यदि चक्र का युग बोला जाए, तो अतिश्योक्ति नहीं। मानव के यांत्रिक विकास का आधार चक्र ही है। सर्वप्रथम चक्र का रथ के रूप में यांत्रिक प्रयोग का उल्लेख विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के रथसूक्त में है।

अभि व्ययस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पंदने शिंशपायाम्। अक्षवीलो वीलित वीलस्व मा यामादस्मादव जीहिपो न: ।

रथ के बारे में चक्र, नेमि 'परिधि', नाभि, अक्ष और ईषा के अतिरिक्त पवि का भी उल्लेख है, जो पहिए का टायर है। युद्ध के रथों के चक्रों में क्षुरा 'ब्लेड' का प्रयोग भी उल्लेखनीय है।

यह रथ चक्र ही मूल है जो समय की आवश्यकतानुसार विभिन्न आकार लेता गया .... चरखा बना .... सुदर्शन चक्र बना .... पानी खींचने की चरखी बना ..... और आधुनिक औद्योगिक युग के रथ की धुरी बनकर अविराम चलता जा रहा है।

चेचक का टीका - चेचक के टीके का प्रयोग भारत में बहुत पहले से होता आया था। बंगाल में एक विशेष सम्प्रदाय के साधुओं द्वारा चेचक प्रभावित क्षेत्रों में लगाए जाने वाले टीकों को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। ये साधु इन जीवाणुओं को संग्रह करके रखते थे तथा चेचक प्रभावित क्षेत्रों से सूचना मिलते ही सेवा भावना से वहाँ जाकर अपना कार्य आरम्भ कर देते थे। 1731 से अनेक अंग्रेजों ने इस प्रथा के विषय में जानकारी देते हुए बताया था कि भारत में कम से कम डेढ़ सौ वर्षों से इन टीकों का प्रचलन है। विडम्बना है कि अंग्रेजों ने इस प्रथा को कानूनन भारत में तो बंद करवा दिया परंतु अपने देश में इस विधि को विकसित किया और भारत की यह उपलब्धि 'एडवर्ड जेनर' के नाम कर दी गई।

सुश्रुत : विश्व के प्रथम शल्य चिकित्सक - सुश्रुत विश्व का सबसे पहला सर्जन माना जाता है। 2500 वर्ष पूर्व उनकी लिखी सुश्रुत संहिता भी मौजूद है। इस ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में कथन है - "यथोवाच भगवान धंवंतरि" अर्थात् जैसा कि भगवान धंवंतरि ने कहा। धंवंतरि से प्राप्त ज्ञान का सुश्रुत ने संकलन किया। सर्जरी में कैसे-कैसे उपकरण चाकू, कैंची, चिमटा आदि प्रयोग में लाए जाते थे, उनका सारा वर्णन उसमें मिलता है।

सुश्रुत ने उस काल में मोतियाबिंद, पथरी, मस्तिष्क एवं प्लास्टिक सर्जरी की ऐसी शल्य चिकित्सा की है जो 1500 वर्ष बाद तक भी यूरोप में नहीं हो पाई थी। उनके द्वारा बताए गए चिकित्सालय निर्माण के नियमों की प्रखर आलोचनाएँ हुई किंतु आज वैज्ञानिक उन नियमों को एक के बाद एक सत्य तथा आवश्यक निरुपित कर रहे हैं। शुश्रुत संहिता में नाक, ओंठ और कान की प्लास्टिक सर्जरी का भी विवरण है।

अंग्रेजों ने अट्ठारवीं सदी के अंतिम दशक में महाराष्ट्र के दो वैद्यों को प्लास्टिक सर्जरी करते देखा। 1794 ई. में इसका सचित्र विवरण लंदन की एक पत्रिका में प्रकाशित हुई जिसके आधार पर वहाँ के डॉक्टर कार्पुए ने प्लास्टिक सर्जरी की भारतीय विधि का विकास किया। अब भी प्लास्टिक सर्जरी की एक विधि को भारतीय विधि कहा जाता है।

डॉ. ग्रुथी कहते हैं - 'सबसे महत्वपूर्ण यह है कि शल्यचिकित्सा का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ भारतीय अद्वितीय थे। न्यू बर्गर के अनुसार प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा की उत्कृष्ट क्रियाओं में 'लेपरोटोमी' (Laparotomy), लिथोटोमी (Lithotomy) व प्लास्टिक सर्जरी (Plastic Surgery) प्रमुख हैं।

भारत ने अतीत में विज्ञान की चरम ऊँचाइयों को छुआ। पर यह विकास दुनिया के लिए आज की भाँति खतरा साबित नहीं हुआ। क्योंकि ऋषियों के मन में स्वार्थ एवं संकीर्णता लेशमात्र भी नहीं थी भारत में विज्ञान का उद्देश्य प्रकृति को निर्दयता से निचोड़कर मानव जाति को सुविधाओं में डुबोकर भोगी और आलसी बनाना नहीं, वरन् उस एक तत्व को जानना रहा, जिसे जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता... जिसे पाने के बाद कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। यही कारण है कि भारतीय वैज्ञानिक ऋषि-मुनियों के वेश में नगरों की सुविधाओं से दूर मानव कल्याण की साधना में लीन रहते थे। इस साधना में उन्हें जो अमृत मिला उसे परमात्मा का प्रसाद मानकर, पृथ्वी को माता मानते हुए उसके पुत्रों ने सारे संसारवासियों में खुले हाथों से बाँट दिया।

हिंदी क्यों सीखनी चाहिए

डॉ. मधुसूदन

कौन हितैषी अभिभावक, अपने बालकों को मेधावी बनाना नहीं चाहेगा? उन्हें प्रतिभाशाली बनाना नहीं चाहेगा? उनकी दत्त-चित्तता (Presence of mind) विकसित करना नहीं चाहेगा? ये सारी उपलब्धियाँ दो या अधिक भाषाओं के जानकारों को सहजता से प्राप्त होती है। मनोवैज्ञानिक (neuroscience researchers) शोध-कर्ता इन्हीं निष्कर्षों पर पहुंच रहे हैं। जैसे, एक ही गंतव्य स्थान के लिए आप दो रास्ते जानने पर गलती की संभावना कम हो जाती है; कुछ वैसा ही तर्क इस सत्य के पीछे होने की संभावना दीखती है।

वास्तव में कोई भी दो भाषाओं के जानकारों के लिए यह निष्कर्ष निकला है। अंग्रेज़ी तो बिन पढाये भी पढ़ी जाएगी, पर हिन्दी पढ़ाने के भी कुछ लाभ है। तीन भाषाएं जानने के तो और भी लाभ होते होंगे।

इस लेख में, कुछ पहलुओं को प्रस्तुत करना चाहता हूँ। पहले हिन्दी शिक्षा के कुछ सर्वाधिक महत्व के पहलुओं पर विचार रखता हूँ।

हिन्दी शिक्षा के पहलू

सर्वाधिक महत्व का पहलू है (१) "उच्चारण शुद्धि"

उच्चारण शुद्धि के लिए हमारे पूर्वज इतने सावधान थे, कि गुरूकुलों में (८ से लेकर २० वर्ष की आयु तक) १२ वर्ष प्रत्यक्ष पाठ हुआ करता था। प्रति दिन ८ सूक्त कंठस्थ करते थे। दूसरे दिन और ८ नये जोड़कर १६ का पाठ होता था। ऐसे जोड़ते चले जाते थे। और, एक तो जिसके उच्चारण में भ्रम और दुविधा नहीं हो सकती, ऐसी (ब्राह्मी-) देवनागरी लिपि से वे सज्ज थे। दूसरी ओर प्रति दिन अनुशासन से पाठ हुआ करता था। उच्चारण में दोष प्रतीत होने पर गुरू उच्चारण ठीक करवाते थे। इस प्रकार गुरू-शिष्य परम्परा के कारण १८ वीं शदी तक उच्चारण अबाधित रहा।

मुझे भी स्मरण है, कि मेरे शिक्षक क्ष, ज्ञ, ण, ळ, इत्यादि को मुख विवर के किस स्थान से उच्चारित करना, यह समझाकर उसका अभ्यास करवाते थे। उच्चारण की ऐसी परंपरा के कारण ही उच्चारण-भ्रष्ट होने की भी कोई संभावना नहीं थी।

ध्यान रहे, केवल लेखित हिंदी पर ही ध्यान देने पर हमारी साधना सफल नहीं (हिंदी शिक्षक इस बिंदु को ध्यान में रखें।) **वास्तव में अवैतनिक काम करने वाले ही समर्पित होते हैं।**

(२) पर जो शुद्ध उच्चारण की परंपरा, विकृत करने का काम इस्लाम नहीं कर पाया, वह काम अंग्रेज़ों ने हमारी शिक्षा की गुरूकुल प्रणाली को कुटिल छद्म षड्यंत्रों से धीरे-धीरे समाप्त करते हुए किया। शायद इसी लिए; ज्ञ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, क्ष, और श और ष इत्यादि उच्चारण भ्रष्ट होने की संभावना नकारी नहीं जा सकती। अभी भी संभव है, और आवश्यक है कि गणमान्य संस्कृत विद्वानों का आयोग प्रतिष्ठापित कर इस काम को किया जाए। यदि करें तो उच्चारण शुद्धि अक्षुण्ण रहेगी। भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं को भी, लाभ ही होगा; सारी जो संस्कृतजन्य ठहरी। और साथ में मंत्र

शक्ति का जागरण, जो शुद्ध उच्चारण का ही गुण है, उसका भी ह्रास रुकेगा। यज्ञों की परिणामकारकता इसी मंत्र शक्ति का गुण है। मानक उच्चारों को मौखिक और ध्वनि मुद्रित दोनों प्रकार से टिकाने की आवश्यकता है।

यह काम भारत में किया जाए, अमरिका की समिति इस आधारभूत काम को प्रोत्साहित करे, यह मेरा नम्र सुझाव है। मेरी सीमित जानकारी में इस आधारभूत काम को कोई कर नहीं रहा है।

(३) "उच्चारण शुद्धि अभ्यास की अवधि"

शुद्ध उच्चारण शिक्षा का दूसरा पहलू है, उच्चारण सीखने की उचित अवधि। यह अवधि, बचपन के कुछ ६-७ (अधिकाधिक १०) वर्ष तक हुआ करती हैं। अभिभावकों को इस तथ्य का उपयोग करते हुए लाभ लेने का अनुरोध एवं आग्रह करता हूं। ध्यान रहे कि यदि बालपन का, अवसर चूके तो, शुद्ध उच्चारण, कठिन ही नहीं, असंभव भी हो जाने की भारी संभावना है। इसलिए, उच्चारण शीघ्र सीखाइए-कराइए। ६-७ वर्ष की आयु तक ही उच्चारण सहजता से आता है। बाद में नए शब्द सीख सकते हैं, पर उच्चारण कठिन हो जाता है। कहावत है, कि, आषाढ़ का चूका किसान, और डालका चूका बंदर कहीं का, नहीं रहता। हिन्दी उच्चारण के लिए यह आषाढ़, बचपन के पहले छः सात वर्ष ही है। इसको न चूकने का परामर्श देता हूं। बचपन में बालकों की वाणी लचीली भी होती है। बच्चे शीघ्रता से सीख लेते हैं। शोधकर्ताओं का निम्न कथन ध्यान देने योग्य है।

According to the critical period hypothesis, there's a certain window in which second language acquisition skills are at their peak. Researchers disagree over just how long that window is — some say that it ends by age 6 or 7, while others say that it extends all the way through puberty — but after that period is over, it becomes much harder for a person to learn a new language. बचपन का अवसर चूक गए, तो फिर सारा जीवन उच्चारण की कोशिश करते रहिए, और फिर कुछ विमान परिचारिकाओं जैसे हिन्दी उच्चारण से संतुष्ट होइए। अचरज की बात है, कि कुछ विद्वानों की अगली पीढ़ी भी, ऐसे उच्चारण पर गौरव अनुभव करती हैं। फिर हमारे बालक गीता भी पढ़ेंगे तो -॥धर्म क्षेत्रे कुरू क्षेत्रे समवेटा युयुट्सवः॥ कुछ अतिशयोक्ति जान बूझकर, मित्रता के अधिकार से कर रहा हूँ, कि आप जान जाएँ कि, यह हमने स्वयं होकर स्वीकार किया हुआ, हिन्दी भाषा की परम्परा टिकाने का ध्येय, अगली पीढ़ियों के लिए कितना निर्णायक है, इसकी प्रतीति आप बंधुओं को हो।

(४) विशेष उच्चारण सूचि देख लें। ख, घ, च, छ, झ, ठ, ढ, ण, त, थ, द, ध, फ, भ, ष, ळ, क्ष, ज्ञ ; यह १८ उच्चार अंग्रेज़ी प्रत्यक्ष रूपसे नहीं है। माता, पिता, पालकों से अनुरोध है, कि ऐसे सुभाषित, श्लोक, छंद, गीत, कविताएं, दोहे इत्यादि चयन करें, जिन में इस सूचि के कुछ अक्षर हो। अलग-अलग कड़ियों से कुल मिलाकर सारे उच्चारण आ जाएँ, ऐसा चयन करें। बच्चों से ऐसे सुभाषित याद कराइए। वे संस्कृत के संगीतमय श्लोकों से और उसके मनोरञ्जक जीवनोपयोगी अर्थ से भी आनन्द प्राप्त करेंगे। ऐसे सुभाषित पाठ करवाते रहिए, जैसे हम बचपन में पहाड़े पाठ करते थे। मैंने मेरी (५-६ वर्ष की) नातिन को संस्कृत के श्लोक कंठस्थ करते हुए, शुद्ध उच्चारण सहित पाठ करते हुए सुना है। आप बंधुओं से अनुरोध है कि आप भी ऐसा प्रयोग करें।

(५) स्पष्ट सत्य है, कि, देवनागरी का उच्चारण आने पर अंग्रेज़ी उच्चारण, विशेष कठिन नहीं होगा। पर, अंग्रेज़ी उच्चारण पूरा आने पर भी, हिंदी उच्चारण बहुत कठिन हो जाता है।

(६) भाषा विज्ञान के अनुसार, संसार की सर्व श्रेष्ठ लिपि, पूर्णातिपूर्ण(Perfect) लिपि, देवनागरी ही मानी जाती है। जिसकी बराबरी संसार की कोई लिपि नहीं कर सकती। यह लिखते-लिखते भी, मेरा गौरव जाग जाता है। उस लिपि में संक्षिप्तता है, वर्तनी की झंझट नहीं है, उच्चारण की सरलाति सरल प्रणाली है। क्या, हम अपने बच्चों को इस दैवी लिपि से वंचित रखेंगे?

(७) भाग्य मानिए कि हमारी लिपि चीनियों की लिपि जैसी नहीं है। चीनी लिपि को तो, प्राथमिक स्तर पर ही, सीखते-सीखते सात आठ वर्ष लग जाते हैं। इस लिए चीनियों के लिए अंग्रेज़ी भाषा और उसकी रोमन लिपि सीखना बहुत सरल है। पर भाग्य है हमारा, कि हमें परम्परा प्राप्त दैवी देव-नागरी विरासत में मिली है।

(८) जानता हूं, कि आप व्यस्त हैं, प्रकल्प (प्रोजेक्ट) की अंतिम तिथि मंडरा रही है। आंगन की घास काटनी है। दो दो नौकरियां करते हैं। श्रीमती भी तो व्यस्त हैं। समय कहां है? झंझट भी तो बहुत है। हिंदी की कक्षाओं में, बच्चोंको पहुंचाना, वापस लाना, क्या क्या? और क्या नहीं? सब कुछ करना पडता है। पर, कुछ उनके बारे में तो सोचिए जो स्वयंसेवी जन समय का योगदान दे कर उत्साह से हिंदी पढा रहे हैं।

(९) कुछ मित्र कहते हैं, कि भाई हमारी रोटी रोजी कमायी जाती है, अंग्रेज़ी के कारण ही। हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने में क्यों समय व्यर्थ किया जाए? यह कोई भारत तो है नहीं, कि हिन्दी के बिना बच्चों का काम नहीं चलेगा। उन्हें हिन्दी सीखने से कोई लाभ भी तो नहीं है।

(१0) मैं सोच में पड़ जाता हूं कि, सचमुच हिन्दी सीखने से कोई लाभ भी है? क्या, हम लकीर के फ़कीर की भांति लकीर ही पीटते चले जा रहे हैं।

(११) वैसे बात सही है कि इस जीवन की इस धकपेल में समय किसे है कि एक और झंझट मोल ले लें? ना सीखने से कोई हानि भी तो नहीं दिखती ।

(१२) मैं केवल मित्रता के अधिकार से ही आप मित्रों को पूछता हूँ कि, क्या रोटी रोजी से बढ़कर कोई और भी जीवन मूल्य होता है? और, क्या रोटी कपड़ा और आवास मिलने पर मनुष्य सभी प्रकार से परितृप्त हो जाता है? परम सुखी हो जाता है?

(१३) रोटी-रोजी की भाषा अंग्रेज़ी है, यह मान भी लिया जाए, तो क्या, हमारे बच्चे, मात्र रोटी रोजी से ही जीवित रहने वाले हैं? क्या आप केवल यही चाहते हैं, कि आप की संतति, और आगे पोते-पोतियां, नाती-नातिनें, मात्र भौतिक स्तर पर ही जीवित रहें?

(१४) वैसे तो चींटी मकोड़े भी जीवित रहते हैं। कुत्ते बिल्ली भी जीवित रहते हैं, खाते हैं, पीते हैं, बच्चे भी पैदा करते हैं, और एक दिन मर भी जाते हैं।

नहीं बंधुओं, आप इस वर्ग में निश्चित नहीं है।

मनुष्य को शरीर ही नहीं मन भी होता है, बुद्धि भी होती है, और माने या ना माने आत्मा भी होती है।

(१५) मानव शब्द की संस्कृत व्याख्या है, मनः अस्ति स मानवः॥ अर्थात मानव वह है जिसे मन है। शरीर से मानव दिखने वाले पशु जैसे भी व्यवहार कर सकते हैं।

और एक अत्यंत विशेष बात देखी है। आजकल जो बेकारी की समस्या चल रही है, उसकी चपेट में जब युवा बच्चों को निराशा आती है; तो जीवन की मनः शांति बनाए रखने के लिए, परमात्मा से बिनती या प्रार्थना करने के लिए, हिंदी-संस्कृत (या प्रादेशिक भाषाएं ही) काम आती है। अंग्रेज़ी में प्रार्थना तो की जा सकती है, पर मन को शांति देने की क्षमता हमारी अपनी भाषा में ही अधिक होती है। मेरे बच्चे शिविरों से हिन्दी कीर्तनों की ध्वनिकाएं लाए थे, जो संगीतमय होने के कारण सुनने में बहुत लुभावनी थीं। जब कभी कठिनाई आती, तो बार-बार सुनते, साथ गाते भी। आर्तता से गाया हुआ कीर्तन-भजन गाने वाले के मन-मस्तिष्क को भी स्वस्थ और प्रसन्न रखने में सक्षम होता है।

(१६) आप बाहर भले अंग्रेज़ी में व्यवहार करें, पर प्रेम की भाषा का व्यवहार, श्रद्धा और भक्ति की भाषा का व्यवहार, मित्रों के कठिन प्रसंग में उनका दुःख हलका करने के लिए कहे गए शब्द, दुःख निवारणार्थ कहे गए वचन अपनी मातृ भाषा में या हिन्दी में होने की बहुत संभावना है।

किसी के स्वर्ग सिधार जाने पर सांत्वना भरे शब्द, या जय जगदीश हरे की आरती, भजन, कीर्तन, कठिनाई आने पर ईश्वर से याचना, हिंदी में ही होने की संभावना अधिक है।

(१७) मेरे गुजराती परिवार में भी सारा व्यवहार गुजराती में होता है, पर भगवान की मूर्ति के सामने दीप जला कर गायत्री मंत्र और अन्य मंत्रोच्चार संस्कृत में होते हैं। आरती जब भी होती है, "जय जगदिश हरे" हिन्दी में ही होती है। कीर्तन हिन्दी में ही होते हैं। यह हिन्दी का सूक्ष्म धागा हमें भगवान से ही नहीं भारत से भी जोड़ता है।

(१८) हिंदी में लिखित तुलसी रामायण ही मुरारी बापु सारे गुजरात भर में प्रवचनों द्वारा फैलाते हैं। प्रवचन गुजराती में होता है, पर, तुलसी रामायण की चौपाइयां तो, हिन्दी में गाकर सुनाते हैं, अर्थ गुजराती में समझाते हैं। कभी-कभी गुजराती शैली की हिन्दी का प्रयोग भी होता है। बीच-बीच में भजन भी हिन्दी में होते हैं।

(१९) वैसे भगवान तो सुना हैं, कि भाव का चाहक है, पर जैसे हम अपनी माँ के साथ, ग्रीक या लॅटिन में नहीं बोल सकते, भगवान से भी अपनी भाषा में ही, बोल पाएंगे। वे तो कोई भी भाषा समझ जाएंगे, पर हमारा अपना भाव, और श्रद्धा भी तो जगनी चाहिए।

(२०) जब हमारे अपने बंधु जो डेढ़ सौ वर्ष पहले करिबियन टापुओं पर बंधुआ श्रमिकों के रूप में ले जाए गए, तो जल्दी -जल्दी में भी वे तुलसी रामायण ले जाना नहीं भूले। उसी रामायण के साथ-साथ हिंदी भी गई। कुछ टूटी-फूटी हिन्दी के आधार पर आज भी वे संस्कृति टिकाए हुये हैं, और स्वतः टिके हुए हैं। वे तो अनपढ़ ही थे, पर श्रद्धा से टिक गए; पर हम पढ़े-लिखे यदि भौतिक-वादी हो जाएंगे, तो जब निराशाएं आयेंगी, बेकारी आयेगी, बीमारियाँ आयेंगी, और भी कठिनाइयां आयेंगी, तो बंधुओं तब हमारी अपनी हिन्दी ही सांत्वना देने में, इश्वर से निवेदन करने में अधिक काम आएगी। हिन्दी का झीना धागा भी इतना सक्षम है। ऐसी सक्षम विरासत से अगली पीढ़ी को वंचित रखना, अपने उत्तरदायित्व से मुंह फेर लेना ही माना जाएगा। क्या आप ऐसा करना ठीक समझते हैं?

आशा भोंसले का तमाचा

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

आशा भोंसले और तीजन बाई ने दिल्लीवालों की लू उतार दी। ये दोनों देवियाँ 'लिम्का बुक ऑफ रेकार्ड' के कार्यक्रम में दिल्ली आई थीं। संगीत संबंधी यह कार्यक्रम पूरी तरह अंग्रेजी में चल रहा था। यह कोई अपवाद नहीं था। आजकल दिल्ली में कोई भी कार्यक्रम यदि किसी पाँच-सितारा होटल या इंडिया इंटरनेशनल सेंटर जैसी जगहों पर होता है तो वहाँ हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा के इस्तेमाल का प्रश्न ही नहीं उठता। इस कार्यक्रम में भी सभी वक्तागण एक के बाद एक अंग्रेजी झाड़ रहे थे। मंच संचालक भी अंग्रेजी बोल रहा था।

जब तीजनबाई के बोलने की बारी आई तो उन्होंने कहा कि यहाँ का माहौल देखकर मैं तो डर गई हूँ। आप लोग क्या-क्या बोलते रहे, मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ा। मैं तो अंग्रेजी बिल्कुल भी नहीं जानती। तीजनबाई को सम्मानित करने के लिए बुलाया गया था लेकिन जो कुछ वहाँ हो रहा था, वह उनका अपमान ही था लेकिन श्रोताओं में से कोई भी उठकर कुछ नहीं बोला। तीजनबाई के बोलने के बावजूद कार्यक्रम बड़ी बेशर्मी से अंग्रेजी में ही चलता रहा। इस पर आशा भोंसले झल्ला गईं। उन्होंने कहा कि मुझे पहली बार पता चला कि दिल्ली में सिर्फ अंग्रेजी बोली जाती है। लोग अपनी भाषाओं में बात करने में भी शर्म महसूस करते हैं। उन्होंने कहा मैं अभी लंदन से ही लौटी हूं। वहाँ लोग अंग्रेजी में बोले तो बात समझ में आती है लेकिन दिल्ली का यह माजरा देखकर मैं दंग हूँ। उन्होंने श्रोताओं से फिर पूछा कि आप हिंदी नहीं बोलते, यह ठीक है लेकिन आशा है, मैं जो बोल रही हूँ, उसे समझते तो होंगे? दिल्लीवालों पर इससे बड़ी लानत क्या मारी जा सकती थी?

इसके बावजूद जब मंच-संचालक ने अंग्रेजी में ही आशाजी से आग्रह किया कि वे कोई गीत सुनाएँ तो उन्होंने क्या करारा तमाचा जमाया? उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम कोका कोला कंपनी ने आयोजित किया है। आपकी ही कंपनी की कोक मैंने अभी-अभी पी है। मेरा गला खराब हो गया है। मैं गा नहीं सकती।

क्या हमारे देश के नकलची और गुलाम बुद्धिजीवी आशा भोंसले और तीजनबाई से कोई सबक लेंगे? ये वे लोग हैं जो मालिक हैं, और प्रथम श्रेणी के हैं, जबकि सड़ी-गली अंग्रेजी झाड़नेवाले हमारे तथाकथित बुद्धिजीवियों को पश्चिमी समाज नकलची और दोयम दर्जे का मानता है। वह उन्हें नोबेल और बुकर आदि पुरस्कार इसलिए भी दे देता है कि वे अपने-अपने देशों में अंग्रेजी के सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के मुखर चौकीदार की भूमिका निभाते रहें। उनकी जड़ें अपनी जमीन में नीचे नहीं होतीं, ऊपर होती हैं। वे चमगादड़ों की तरह सिर के बल उल्टे लटके होते हैं। आशा भोंसले ने दिल्लीवालों के बहाने उन्हीं की खबर ली है।

देवनागरी लिपि - वैज्ञानिकता

शिवसागर सिंह

देवताओं की भाषा संस्कृत की लिपि होने के कारण इसे देवनागरी कहते हैं। ध्वनियों पर आधारित वर्ण सृष्टि के आदि में जब मात्र ध्वनि ही रही, तब मनीषियों ने ध्वनियों के उद्‌गम स्थल के विचार से यथा कण्ठ से 'क' वर्ग के वर्ण, जिह्वा के पिछले भाग से 'च' वर्ग, जिह्वा के अग्र भाग से 'ट' वर्ग, दाँत से 'त' वर्ग, ओष्ठ से 'प' वर्ग, और बाकी य से श तक मिश्रित उच्चारण के विचार से व्यंजनों का निर्माण किया है। ध्वनि आधारित वर्ण होने के कारण जो ध्वनि निराकार ब्रह्म का स्वरूप है, उसे साकार रूप देकर निराकार को साकार में ला दिया गया है। तभी तुलसी दास जी ने रामायण में वर्णों को साकार ब्रह्म का स्वरूप मानकर स्तुति की है, यथा "वर्णानां, अर्थानां सधानां छंद साम में" मंत्र और तंत्र शास्त्र की सार्थकता ध्वनि विज्ञान आधारित होने के कारण ही है।

भौतिक जगत में कोई ऐसी ध्वनि नहीं है जिसे इस लिपि में न लिखा जा सके। यदि ध्वनि को लेखक लिपि बद्ध कर देगा तो वाचक उस ध्वनि से परे उच्चारण नहीं कर सकेगा। शायद विश्व में किसी भाषा की ऐसी लिपि नहीं है। इस लिपि की भाषा का व्याकरण भी शुद्ध और मार्जित जिस स्तर का है, संसार की किसी भी भाषा का नहीं है।

जहाँ तक मेरी जानकारी है, संस्कृत, हिंदी, नेपाली भाषाओं की लिपि देवनागरी है। संस्कृत भाषा का साहित्य जितना विशाल है, उतना किसी भाषा संसार में नहीं है। यदि इस भाषा को मध्य एशिया (अरबी) और पाश्चात्य देश की भाषा अंग्रेजी का कुचक्र न झेलना पड़ा होता तो संस्कृत साहित्य की तुलना में संसार की कोई भी भाषा शिशु समान होती।

देवनागरी लिपि में बारह स्वर और अड़तालिस व्यंजनों के कुल बावन वर्ण हैं। सभी व्यंजन स्वर सहित हैं, अर्थात् सभी व्यंजनों के वर्ण मूल रूप से आधे होते हैं। किसी भी व्यंजन के मूल रूप में स्वर का प्रथम 'अ' वर्ण के मिलने पर व्यंजन पूर्ण होता है, जैसे वर्ण 'क' का मूल रूप क् होता है, लेकिन क् में अ मिलता है (क् + अ = क)। इसी प्रकार सभी व्यंजन 'अ' के मिलने से ही पूर्ण होते हैं। इस तरह आध्यात्मिक विचार से देखा जाए तो स्वर निराकार ब्रह्म और व्यंजन साकार ब्रह्म का स्वरूप है। जिस प्रकार व्यंजन में अप्रत्यक्ष रूप से स्वर 'अ' मिला होता है, उसी प्रकार महामाया निराकार की शक्ति पाकर पदार्थों का निर्माण करती है, किंतु महामाया द्‌वारा रचित सभी पदार्थ निर्जीव जड़ अचेतन होते हैं। चेतन मात्र ब्रह्म और उसका अंश जीव या बीज है। महामाया (प्रकृति) द्‌वारा रचित पदार्थ या पिण्ड में जब जीव (ब्रह्मा का बीज) उस पिण्ड से प्रवेश करता है, तो वह पिण्ड चेतन हो जाता है, और उसके निकलने पर अचेतन हो जाता है। यह शरीर (मानव का) एक अण्डे के समान है। इस अण्डे में ब्रह्म का (अंश, बीज,जीव) प्रवेश करता है। यदि उसे उचित ताप (ज्ञान प्रकाश) मिले तो ब्रह्म जैसा बन सकता है, किंतु भौतिकता की चकाचौंध में बार-बार आता और जाता है। ब्रह्म सरीखा बनने के बजाय वह अण्डा होकर चौरासी में भ्रमण करता है।

उपर्युक्त क्रम में देखा जाए तो स्वर निराकार और व्यंजन साकार ब्रह्म का स्वरूप है। क्योंकि कोई भी व्यंजन बिना स्वर की सहायता के अर्थपूर्ण नहीं हो सकता अर्थात् निष्प्राण रहता है। व्यंजन का अस्तित्व स्वर 'अ' के कारण है, और बिना स्वर के व्यंजन अर्थपूर्ण नहीं होता। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि एक व्यंजन पर केवल एक ही स्वर लगता है, चूंकि ब्रह्म एक है। यथा यदि 'क' पर 'ए' की मात्रा लगाते हैं तो 'क' में 'अ' जो पहले से संयुक्त है, हटकर

क्+ए = 'के' होगा। इस प्रकार स्वर निराकार ब्रह्म का स्वरूप है यह प्रमाणित होता है।

अंत में मैं उन सभी बंधुओं को शत्-शत् नमन करता हूँ, जो इस अर्थ की तृष्णा में प्रवासी वंशजों को इतनी वैज्ञानिक और आध्यात्मिक वर्ण की लिपि, साहित्य सम्पन्न भाषा, अपनी आध्यात्मिक धरोहर, वेद पुराण, गीता और भागवत से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

Help build India's future: One school at a time

EKAL is a large and popular movement but it needs help. While EKAL has done a lot, there is so much more to do. EKAL has covered 1 million students in over 36,000 schools and there are many more students that are in need of this education provided by EKAL. These villages are in desperate need of your help.

Why should you donate?

The wealth that cannot be stolen, neither abducted by state, nor can be divided amongst brothers, neither it is burdensome to carry, the wealth that increases by giving. That wealth is education and is supreme of all possessions.

1. Education a way out of poverty, poor health and social issues
2. Education is the reason for success for vast majority of us and made it possible to help and donate.
3. Education in Indian tradition and culture is considered the best form of donation.
4. For those of us who have been educated in India, we owe them. We owe them because the true cost of our education in India was much higher than we paid for. It's time to repay our debt.
5. There are not many ways to help people in need in India from overseas. EKAL has provided the opportunity to make a substantial impact on lives that need your help but cannot reach you directly.

What can you do?

Today, you can single handedly change the life of 27 people in need, by donating for just one school. One school means $365 dollars. That is a dollar a day. You can donate for one school or several schools at the same time. There are many bright minds and hopeful hearts that need your help.

Ekal Vidyalaya Foundation of USA

3908 West hollow Parkway, Houston, TX 77082 1-855-EKALUSA (1-855-352-5872) Email: ekalusa@ekalvidya.org

(This ad sponsored by Vinod Jhunjhunwala)

जन्म: 29-10-1975; शिक्षा -एम ए (हिन्दी, अंगरेज़ी) एम फिल (हिन्दी), सम्प्रति -"रमेश चन्द्र शाह के निबन्धों में कथ्य और शिल्प" पर पी-एच डी हेतु शोध रत

लेखन -कविता , कहानी , लघुकथा , समीक्षा

प्रकाशन =आजकल ,'मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् , लघुकथा डॉटकॉम आदि में

ग्लोबल विलेज की नई परिभाषा -'हिन्दी'

निरुपमा कपूर

छान्दोग्योपनिषत् 7-2 में मानव को वाणी की उपासना करने का संदेश दिया गया है। वाणी के माध्यम से ही धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य प्रिय और अप्रिय का ज्ञान होता है। वाणी के सम्बन्ध में किसी विद्वान ने कहा है कि यह मनुष्य को मनुष्यता प्रदान करती है। वाणी ने हमारे ज्ञान के भंडार को बढ़ाया है; अतैव भाषा की कहानी को सभ्यता की कहानी की संज्ञा भी दी जा सकती है। भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण का माध्यम ही नहीं है, बल्कि वह ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम तथ संस्कृति की वाहिका भी है। हिंदी विश्व में विद्यमान समृद्धतम भाषाओं में से एक है। संरचना की सौंदर्यशाला, भाव भंगिमाओं की गहनता, अभिव्यक्ति की तीव्रता तथा शैलियों की विविधता समेटती हुई हिंदी भाषा अनेक उन्नत रूपों में प्रवहमान है। आधुनिक युग में हिन्दी का व्यापक प्रचार और प्रयोग होने लगा है। आज हिन्दी का रूप सिर्फ़ साहित्यिक नहीं रहा, बल्कि वह प्रशासन, व्यापार, न्याय, शिक्षा, विज्ञान, पत्रकारिता के रूप में जनसम्पर्क की भाषा बनी है। विश्व ग्राम('ग्लोबल विलेज') यथार्थवादी चिंतन से प्रसूत धारणा है। आज अति उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी से फैले व्यापक प्रचार तंत्र की ही देन है कि सम्पूर्ण विश्व एक छोटा - सा ग्राम बन गया है। वैश्वीकरण की स्थिति में भारत एक महत्त्वपूर्ण मंडी के रूप में उभर रहा है। खुली अर्थव्यवस्था की भाषा भले ही अंग्रेजी हो और कुछ समय तक आगे बने भी रहे, लेकिन अंतत: उसे भारत में हिंदी और भारतीय भाषाओं को अपने व्यवसाय का माध्यम बनाना ही होगा । बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने यह कार्य शुरू कर दिया है। भारत में बाजार की केन्द्रीय भाषा हिन्दी है, क्योंकि भारत की बहुसंख्यक आबादी भी गाँवों में रहती है। यदि आप को अपना कोई भी उत्पाद भारत में बेचना है, तो उसका विज्ञापन आपको हिंदी में ही देना होगा। तभी वह लोगों की जबान पर चढ़ सकेगा। हिंदी को बाजार की सशक्त भाषा बनाने में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की विशेष भूमिका रही है। आप कोई भी चैनल खोल कर देख लें, उस पर हिंदी कार्यक्रमों की भरमार है। यही नहीं, इन कार्यक्रमों की संख्या व हिन्दी चैनलों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। मूल अंग्रेजी के चैनल डिस्कवरी, हिस्ट्री चैनल, काटूर्न नेटवर्क, निक्लोडियन, पोगो, सभी ने हिन्दी की बढ़ती माँग के कारण अपने चैनलों का हिंदी संस्करण भारत में प्रस्तुत करना पड़ा। इनके साथ ही गूगल ने हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण अपने सारे सूचना कार्यक्रम को हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में जारी किया है, साथ ही हिंदी व अन्य भाषाओं में अनुवाद की भी सुविधा दी है। हिंदी की लोकप्रियता का ही यह कमाल है कि माइक्रोसॉफ्ट ने भी अपना माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस का नया संस्करण हिंदी में भी निकाला है। इंटरनेट पर हिंदी बेवसाइट्स की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज हिंदी का कोई भी साहित्यकार ऐसा नहीं है जो नेट पर मौजूद न हो। हिंदी में नये नये ब्लाग लिखे जा रहे हैं, नयी ई-पत्रिकाएँ हिंदी को नई व सशक्त पहचान है दे रही हैं। यहाँ पर नये लेखकों के लिये कई मौके उपलब्ध हैं। इन सब प्रक्रियाओं से हिंदी अपनी स्थिति को और मजबूत करती जा रही है, केवल इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में ही नहीं; बल्कि प्रिंट मीडिया में भी हिंदी की बहार छाई हुई हैं। प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्र "द हिन्दुस्तान टाइम्स" ने अपना देशी संस्करण 'हिन्दुस्तान' निकालना शुरू किया है। अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'टाइम्स' भी अपना भारतीय संस्करण शीघ्र निकालने वाली है। अमेरिका की पत्रिका 'स्पैन' भी हिंदी में प्रकाशित हो रही है। हाल में ही में ओबामा ने अमेरिकी वासियों से कहा कि "21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को हिंदी भाषा

सीखनी चाहिए'। कैनेडा और अमेरिका से निकलने वाली त्रैमासिक 'हिन्दी चेतना(मुख्य सम्पादक-श्याम त्रिपाठी, सम्पादक -डॉ सुधा ओम ढींगरा) 14 वें वर्ष में कदम रख चुकी है। हिन्दी टाइम्स (सम्पा-सुमन कुमार घई)। हिन्दी अब्रॉड (सम्पादक-रवि पाण्डेय), साप्ताहिक हिन्दी समाचार, हिन्दी कैनेडियन समय जैसे साप्ताहिक प्रिण्ट और नेट दोनों ही माध्यम से पूरे भारत को विश्व से जोड़ने का काम कर रहे हैं। पुरवाई, हिन्दी पुष्प जैसे पत्र भी अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। आस्ट्रेलिया ने अपने यहाँ के छात्रों को हिन्दी पढ़ने की सुविधा प्रदान की है। न्यू ज़र्सी (यू.एस.) में श्री देवेन्द्र सिंह और श्रीमती रचिता सिंह ने हिन्दी भाषी, हिन्दीतर तथा विदेशी छात्रों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था के अन्तर्गत अपना पाठ्यक्रम भी विकसित एवं प्रकाशित कर लिया है। कई सौ शिक्षकों के माध्यम से ये हज़ारों बच्चों को हिन्दी सिखाने के साथ-साथ भारतीय संस्कारों की शिक्षा भी दे रहे हैं। हिंदी आज भारत के बाहर डेढ़ सौ के करीब विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। विश्वभर में हिंदी को जानने वाले और समझने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज का हिंदी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के संपर्क से 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित संस्कृति का लाभ उठाकर अपने को सशक्त पहचान देने में जुटा हुआ है। अब केवल ज्ञानार्जन के लिये हिंदी का अध्ययन नहीं हो रहा, वरन् इसके पीछे आर्थिक पहलू भी है। विश्व बाजार की दृष्टि से हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। हिंदी अब हर क्षेत्र में विजय पताका फहरा रही है।

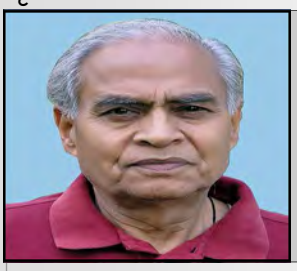

जगदीश चंद्र पंत जी का जन्म 4 दिसंबर 1937 को एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मसूरी में हुई, और फिर इन्होंने प्रयाग से बी.एस.सी और एम.एस.सी. की डिग्रियाँ लीं। अपने युवा काल में इन्हें पर्वतारोहण में काफी रुचि थी, और हिमालय क्षेत्र के बहुत से पर्वतों की इन्होंने चढ़ाई की। इन्होंने यू.पी. सरकार के आई.ए.एस. अफसर के पद से 1996 में अवकाश ग्रहण किया। जब वे इस पद पर थे, तब इन्होंने कृषि, स्वास्थय, तथा गंगा अभियान की अनेक योजनाओं में अद्वितीय योगदान दिया। अपने पद से सेवानिवृत होने के बाद बहुत सी सामाजिक संस्थाओं की अध्यक्षता करके समाज के उत्थान में अपना योगदान दिया। इनके गुरु पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी थे।

धर्म निरपेक्षता किधर?

जगदीश चंद्र पंत

केवल अधर्म ही धर्म-निरपेक्ष हो सकता है! क्या इसी लिये आज भारत में अधर्म का बोल बाला है? वह क्या मजबूरी थी जिसके कारण इंदिरा गाँधी को भारत के संविधान की प्रस्तावना में 1976 के आपातकाल के समय Socialist Secular शब्द जोड़ने पड़े थे? Socialist शब्द तो इंदिरा गाँधी की आपातकाल से पहले की राजनीति के आग्रह से आया और मूलतः secularism की अवधारणा भारत में आज़ादी से लगभग दस वर्ष पूर्व और उसके हासिल होने के समय उपजी, साम्प्रदायिक हिंसा की भावना को दबाने के लिये की गई थी| लेकिन परिणाम इसका उल्टा ही हुआ| मुस्लिम समाज के बड़े नेता सम्पन्न विदेशी मूल की अशरफ जाति के परिवारों से अधिकतर आये हैं, जिन्हें भारतीय मूल की अज्लफ़ जाति के ग़रीबों को ग़रीब ही रहने देना था और उनको, अपनी ग़रीबी भुलाने के लिये और मुस्लिम समाज को, अल्प-संख्यक-वाद पर आधारित वोट की राजनीति के लिये अपनी पहिचान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से, अपने विशिष्ट पहनावे पर और दिन में पांच बार नमाज पढने पर जोर देना पड़ा| दूसरी ओर धर्म-निरपेक्षता की आड़ में और भारत के धार्मिक स्वतंत्रता के वातावरण में, विदेशों से पोषित ईसाई धर्म के प्रचारकों को भारत के विभिन्न भागों में, धर्मांतरण की गतिविधियों को तेज करने के लिये प्रोत्साहन मिला, जिसके साथ-साथ उन्होंने कालांतर में तथाकथित दलित जातियों और जन जातियों में भारत सरकार तथा सनातन आर्य धर्म के विरुद्ध असंतोष पैदा कर, देश के बड़े भूभाग में माओवाद को बढ़ने में सहायता की| इसके साथ-साथ "वसुधैव कुटुम्बकम" की अपनी परम्परागत अवधारणा में दृढ़ विश्वास रखने वाले सनातन आर्य धर्म के बहुसंख्यक समुदाय के लोगों में, धर्म-निरपेक्षता के सिद्धांत के कारण यह भावना पैदा हुई कि धर्म की चर्चा सामान्य समाज में करना अनुचित होगा| जब ऐसी स्थिति समाज में स्थाई हुई, तो स्वाभाविक ही था कि युवा वर्ग में विशेष रूप से, धर्माचरण एवं सदाचरण की बात भी धीरे धीरे समाप्त होती चली गई। इसमें आश्चर्य क्या है? दूरदर्शन पर आज विज्ञापनों और कथानकों के द्वारा अधर्म का जो आचरण परोसा जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरुप अधर्म का जो बोल बाला आज समाज में देखने को मिल रहा है, उसमें आश्चर्य क्यों? क्या यह आवश्यक नहीं कि अब यह प्रश्न उठाया जाय कि आज भारत में आखिर धर्म शब्द का अर्थ क्या माना जा रहा है, अथवा जब भारत स्वतंत्र हुआ था तब क्या माना जा रहा था, जिसकी चर्चा ही करना निषिद्ध समझा जाने लगा है?

2 . भारतीय संस्कृति की संवाहक भाषा संस्कृत के अंतर्गत "धर्म" शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? "धारयते इति धर्मः" - जो हर वस्तु को अपने स्वरुप में स्थिर रखता है वही उसका धर्म है| केवल इंसानों का ही धर्म नहीं होता, हर जीव और हर वस्तु का भी धर्म होता है| "धर्म" शब्द में ही पर्यावरण की सुरक्षा निहित है, जिसका ह्रास भी आज देखने को मिल रहा है| इस शब्द के अन्य सामान्य अर्थ-कर्त्तव्य पालन, सदाचरण, उपयुक्त व्यवहार, न्यायसंगत, पुण्य,

नैतिकता, सत्कर्म आदि, जिनमें जिस अर्थ में religion शब्द का आभास अंग्रेजी भाषा में एक सम्प्रदाय के विश्वासों के रूप में होता है, वह इस संस्कृत शब्द से कतई नहीं होता| secular और sacred की अवधारण यूरोप में सोलहवीं शताब्दी के समय ईसाई धर्म और विज्ञान के परस्पर विवाद पैदा होने के कारण उत्पन्न हुई थी, जिसके कारण दोनों को अलग अलग रखने पर वहां आम सहमती हुई थी, जो भारत के आज़ाद होने के समय बिना भारतीय संस्कृति में प्रचलित "धर्म" शब्द के अर्थ पर विचार किये हुए ही, इस देश पर लागू कर दी गयी थी| धर्म शब्द को सामाजिक व्यवहार से बाहर करने का कालांतर में परिणाम भारत में क्या होगा, इसका अनुमान आज़ादी की खुशियाँ मानते समय देश के बड़े नेता क्यों नहीं लगा पाये, यह भी एक शोध का विषय होना चाहिये| संभवतः, यदि धर्म-निरपेक्ष शब्द के स्थान पर पंथ-निरपेक्ष शब्द का प्रचलन हुआ होता तो परिणाम आज के मुकाबले कम हानिकारक होते अथवा अधिक उपयुक्त रहते| अब तो जो नुकसान देश को होना था सो हो गया है, आज की विषम परिस्थिति से अब कैसे निपटा जाए? इसी बिंदु पर विचार करने के लिये यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है|

3. भारत का स्वतंत्रता संग्राम पूरे विश्व के गुलाम देशों की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करने वाला साबित हुआ| इसके लिये पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों ने भारत को कभी क्षमा नहीं किया और आज़ादी के आरम्भ से ही इस देश को और खंडित करने के षड़यंत्र चालू हो गये| भारत पर अपना कब्ज़ा मजबूत करने के लिये East India Company ने भारत में अपने पांव ज़माने की रणनीति आरम्भ से ही सोचनी शुरू कर दी थी| William Jones और Max Muller जैसे विद्वान वेद और उपनिषदों के आर्ष संस्कृत साहित्य से इतने प्रभावित हुए कि उनके मुँह में पानी आ गया और तभी से उसको हड़पने की योजना बनने लगी| यह सिद्ध करने की योजना यहीं से आरम्भ हुई कि गौर वर्ण की आर्य जाति बाहर से आक्रमण करने के फलस्वरूप भारत में आयी और वे ही इस संस्कृत साहित्य को अपने साथ लाये थे| यह सर्वविदित है कि आर्य न ही गौर वर्ण के थे और न ही यह कोई जाति थी वरन आर्य शब्द, व्यवहार में शालीनता का सूचक था| यहीं से पैदा की गई यह धारणा कि काले वर्ण की द्रविड़ जातियाँ भारत के मूल निवासी थे जिन्हें धकेलकर आर्यों द्वारा दक्षिण भारत में भेज दिया गया था| आज की पुरातात्विक एवं वैज्ञानिक शोध से अब यह सिद्ध हो चुका है कि पूरे भारत के मूल निवासी एक ही थे जो कहीं बाहर से नहीं आये थे और भारतीय संस्कृति की प्राचीनता पर शोध विश्व भर में आज जारी है| सन 1835-36 में Lord Macaulay ने जब यह देखा कि भारतीय संस्कृति की जड़ें ढीली किये बिना इस देश पर आधिपत्य स्थापित करना संभव नहीं है, तब उन्होंने पूरे देश में व्याप्त भारतीय शिक्षा पद्धति को समाप्त कर अंग्रेजी शिक्षा की नई पद्धति लागू कर दी, जिसने शत प्रतिशत साक्षर भारत-वासियों को तत्काल तो निरक्षर बना ही दिया था, साथ ही अंग्रेजियत के भक्तों के एक समुदाय को भी जन्म दे दिया था, जो आज भी इस देश के लिये एक अभिशाप साबित हो रहा है| भारत 1947 में राजनैतिक रूप से आजाद तो हो गया था लेकिन दिमाग़ी स्तर पर वह अब भी पराधीन है| मुग़ल बादशाह जहाँगीर ने जब अपने कार्यकाल में ब्रिटेन की महारानी के विशेष दूत को भारत में व्यापार करने की अनुमति दी थी, तब से अब तक पश्चिम ने भारत के साथ क्या व्यवहार किया है, इस इतिहास को विस्तार से समझने के लिये हर भारतवासी को एक अनिवासी अमरीकी नागरिक, राजीव मल्होत्रा की तीन पुस्तकें - "Invading the Sacred ", "Breaking India " एवं "Being Different " पढ़नी चाहिए| पश्चिमी साम्राज्यवाद का यह खेल अभी भी जारी है, जो अब नये-नये रूपों में भारत में रहने वाले कतिपय तत्वों के माध्यम से अपना विघटनकारी खेल चला रहें हैं|

4. आज भारत पर अमरीका द्वारा प्रायोजित तीन प्रकार के खतरों का साया छाया हुआ है, जिनका उपयोग वह भारत

सरकार की नीतियों को प्रभावित करने से कतई नहीं हिचकिचाता| आज़ाद भारत जैसे विशाल संप्रभुता सम्पन्न राष्ट्र के लिये इससे बड़ी लज्जा की बात क्या हो सकती है? पाकिस्तान के इशारे पर पिछले दो दशकों से देश के लगभग हर भाग में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष को बढ़ाने के उद्देश्य से आतंकवादी वारदातों को अंजाम दिया जा रहा है, जिनका नेतृत्व प्रशिक्षित पाकिस्तानी नागरिक करते हैं, और भारत में निवास करने वाले कुछ उग्रवादी तत्व उन्हें अपना पूरा सहयोग देते हैं| यदि देश के हर नगर के हर मोहल्ले में नागरिकों की सुरक्षा समितियां स्थानीय पुलिस के सहयोग से गठित की जा सकें तो इन वारदातों को रोका जा सकता है| भारत का सामान्य मुस्लिम नागरिक इन घटनाओं से परेशान है| इन घटनाओं से हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष के न बढ़ने से पाकिस्तान परेशान तो रहता है, लेकिन अपनी आदत से बाज़ नहीं आता| दूसरी ओर चीन की शह पर भारत के जन जातीय क्षेत्रों में नक्सल-वाद और माओवाद को पनपाने में विदेशी ईसाई मिशनरी पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से वहां के निवासियों में असंतोष फैला रहे हैं| यह सही है कि भारत सरकार की इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास की योजनाओं में बड़ी कमियां हैं, जिन्हें दूर किया जाना चाहिये, और जिसके लिये भारत सरकार भी इस समस्या को इतना बिगड़ने देने के लिये ज़िम्मेदार है| तीसरा खतरा है अमरीकी विदेश नीति के तहत धर्मान्तरण के लिये विदेशी ईसाई मिशनरी गतिविधियों का देश के हर जिले में तेजी से पिछले दो दशकों से बढ़ना, जिसके विरोध में यदि कहीं हिंसा होती है, तो उसे भारत में अल्प-संख्यक ईसाई धर्मावलम्बियों के मानवाधिकारों का हनन माना जाता है| इसे सभी टीवी चैनल तत्काल बढ़ा चढ़ा कर पेश करने में कोई कुताही नहीं बरतते| President Clinton के कार्यकाल में अमरीकी संसद ने धार्मिक मानवाधिकार हनन के मामलों में किसी भी देश में सीधे हस्तक्षेप तक करने का अधिकार प्राप्त कर लिया था| यद्यपि ईराक में सैन्य हस्तक्षेप का कारण प्रतिबंधित हथियार रखने और तेल की राजनीती था, फिर भी उसका परिणाम क्या हुआ, यह जगजाहिर है| ईराक युद्ध समाप्त होने तक 15 लाख हताहत हुए, 10 लाख से अधिक महिलायें विधवा हुईं, 40 लाख बच्चे निराश्रित हुए, और 50 लाख शरणार्थी आसपास के देशों में आज भी भटक रहे हैं, जिसके अतिरिक्त पूरे ईराक की तबाही भी हुई|

5. पिछले प्रस्तर में उल्लिखित तीन खतरों में से पहले दो खतरों पर देश में कुछ न कुछ तो हो रहा है, यद्यपि वह संतोषजनक नहीं कहलायेगा| इनके इलाज के लिये अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है| लेकिन तीसरे खतरे के लिये तो देश में पर्याप्त जागृति भी नहीं है| वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारण में विश्वास रखने वाले सनातन आर्य धर्मावलम्बी समुदाय के लोग 1000 सालों से अधिक अवधि से विदेशी आक्रमण पर आधारित धर्मान्तरण के शिकार होते आये हैं| फिर भी उनकी उदारता में कोई कमी नहीं आयी है| अमरीका के Denver , Colorado नगर में विख्यात अरबपति Joshua Project का मुख्यालय है, जिसका घोषित उद्देश्य है विश्व भर को इसाई बनाना, जिस काम के लिये कोई भी तरीका उचित है| उनमें से एक तरीका है ईसाई धर्म के आरम्भ से अब तक जितने ईसाईयों ने धर्मान्तरण का काम करने में अपने प्राण गंवाये हैं, उनके नामों एवं कारनामों का देशवार-जिलेवार संकलन और बलिदानी के रूप में उनका प्रचार ("Being Different" पृष्ट 289)| भारत के किसी भी स्थान पर किसी भी ईसाई की धर्मप्रचार और धर्मान्तरण के दौरान यदि मृत्यु हो जाती है, तो उसका व्यापक अतिरंजित प्रचार यह संस्थान बड़ी फुर्ति से करता है, जिसके अंतर्गत उसके काम के तरीके से, चाहे वह कुछ भी हो, उत्पन्न उत्तेजना का कोई उल्लेख नहीं होता, और उसे एक बलिदानी का ख़िताब दे दिया जाता है| दोषारोपण पूरी तरह से बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय पर इस प्रकार किया जाता है, जैसे भारत में अल्पसंख्यक ईसाई समुदाय बिलकुल सुरक्षित नहीं है|

6. धर्मान्तरण करने के नये-नये तरीके अपनाने में इन विदेशी इसाई प्रचारकों की बुद्धि कौशल पर आश्चर्य होता है, और भोले भाले साधनहीन भारतीय उनके चंगुल में फंसते चले जाते हैं| तमिलनाडु के समुद्रतट पर वेलंकन्नी - Velankanni नाम के एक स्थान पर यीशु-माता का प्रसिद्ध गिरजाघर है, जिसे पिछले लगभग 50 वर्षों से भी पहले से एक मंदिर का स्थान प्राप्त हो चुका है, और अपनी मन्नतें मनाने के लिये इसाई समुदाय के साथ हिन्दू भी कुछ दशकों से यहाँ जाने लगे हैं| प्रारंभ में धर्मान्तरण के लिये स्थानीय मंदिरों और परम्पराओं का ही सहारा लिया जाता है, और इन्हीं में प्रभु यीशु और माता मरियम के चित्र अथवा मूर्तियाँ स्थापित कर दी जातीं हैं| एक के बाद दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी तक में स्थानीय देवताओं की मूर्तियाँ हटा दी जातीं हैं, और वह गिरजाघर बन जाता है| सनातन आर्य धर्मावलम्बियों की यह धारणा कि सब धर्म एक सामान हैं, का उपयोग उन्हीं के खिलाफ इस प्रकार किया जाता है, कि तब क्यों नहीं आप ईसाई बन जाते हैं, जिसमें ऊँच-नीच की जातिवादी भावना नहीं है, आदि आदि, जिस दौरान उन्हें तरह तरह के प्रलोभन देना समिलित है| धर्मान्तरण का यह कार्य बड़े व्यवस्थित तरीके से पूरे देश में चल रहा है, और प्रत्येक जिले के लिये निर्धारण है कि कितने व्यक्तियों और परिवारों का धर्मान्तरण किस अवधि में होना है| देशवासी इस योजना से पूरी तरह से बेखबर ही हैं| इसका मुकाबला देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कैसे किया जाय, यह एक जटिल प्रश्न हो गया है| सब धर्मों का सम्मान करते हुए यह प्रयास होना चाहिये कि इन विदेशी भाईयों से शालीनता से अनुरोध किया जाए कि वे अपनी गतिविधियों को इस देश से बाहर ले जाएँ तो ठीक होगा, क्योंकि यहाँ की संमृद्ध धार्मिक परंपरा को किसी विदेशी धर्म की आवश्यकता नहीं है|

7. अप्रैल 2012 में जिस प्रकार दो इतालवी पर्यटकों को छुड़ाने के लिये ओड़िसा में 20 माओवादिओं को कारागार से मुक्त करने की कार्यवाही संपन्न हुई वह जगजाहिर है| क्या यह पर्यटक ही थे अथवा माओवादिओं के मिशनरी मित्र थे? क्या ये पहली बार भारत आये थे, अथवा इनका यहाँ कोई धंधा पहले से चल रहा था? इन प्रश्नों का उत्तर देने वाला आज कोई नहीं है| यह भारत सरकार और ओड़िसा सरकार के लिये जाँच का विषय होना चाहिये| लेकिन यह आज विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह जाँच होगी भी या नहीं और उसका क्या परिणाम होगा| कुछ वर्ष पूर्व स्वामी लक्ष्मणानंद नाम के एक सन्यासी, जो ओड़िसा के जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार आदि का रचनात्मक कार्य बड़े व्यवस्थित तरीके से कर रहे थे, की हत्या विदेशी मिशनरियों के उकसावे पर माओवादियों द्वारा कर दी गई थी, जिसकी प्रतिक्रिया में कुछ विदेशी मिशनरी भी हताहत हुए थे| इस घटना पर जो अतिरंजित प्रचार TV पर, ईसाई धर्मावलम्बियों के मानवाधिकारों के हनन के रूप में हुआ, था वह सर्व विदित है| Joshua Project की website पर यह विदेशी मिशनरी ईसाई धर्म के बलिदानी घोषित कर दिये गये| इस से अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि किस प्रकार विदेशी मिशनरी भारत में बड़े व्यवस्थित तरीके से अपना काम खामोशी से और लगन से कर रहे हैं, परन्तु देशवासी इसके बारे में कुछ नहीं जानते|

8. वोट की राजनीति पर आधारित अल्प-संख्यक-वाद ने जितना नुकसान भारत के मुस्लिम समाज का किया है, वह हैरान करने वाला है, जिसकी ओर हल्का सा इशारा इस लेख के आरंभ में किया गया| लगभग 800 वर्षों के इस्लामी निजाम के अन्त में मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फर के नेतृत्व में लड़ा गया सन 1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम, हिन्दू और मुस्लमान दोनों के संयुक्त मोर्चे में सम्पन्न हुआ था, जो रण-नैतिक चूक के कारण विफल हुआ था| उसके बाद मुसलमानों पर बहुत ज्यादा जुल्म ढाये गये, और तभी से ही आधुनिक काल में हिन्दू-मुस्लिम विभेद का नया सिलसिला आरम्भ हुआ था| अंग्रेजों को मालुम पड़ चुका था कि हिंदुस्तान पर अपनी हुकूमत बनाये रखने के लिये इन दोनों समुदायों को भविष्य में कभी मिलने नहीं देना होगा, और यही सोच कर, 1947 में भारत और पाकिस्तान दो राष्ट्रों को जबरदस्ती जन्म दे दिया गया, जिसके हजारों घाव दोनों देश आज तक सहला रहे हैं| उसके बाद भी यदि पूरा अवसर

होते हुए भी भारत में मुस्लिम समाज पिछले 60 वर्षों में अपने को अलग और तिरस्कृत मानता है, तो इसके लिये उनका नेतृत्व ही ज़िम्मेदार है| भारत में पारसी समाज सबसे छोटा अल्प-संख्यक स्वाभिमानी समाज है जिसे किसी आरक्षण की आवश्यकता नहीं है, लेकिन वे देश के सभी क्षेत्रों के सर्वोच्च पदों को सुशोभित कर चुके हैं, और अब भी कर रहे हैं, पर उनमें किसी प्रकार की हीनता की भावना नहीं है| क्या मुस्लिम समाज का नेतृत्व इस से कोई सबक लेना ठीक नहीं मानता है? क्या आरक्षण का झुनझुना मुस्लिम समाज के स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुंचाएगा? इन नेताओं की जिन नीतियों एवं सोच के कारण मुस्लिम समाज की दशा स्वतंत्र भारत में आज तक ठीक नहीं हुई है, उन्हें यदि सुधारा नहीं गया तो इसके परिणाम उन्हीं को भुगतने पड़ेंगे| क्या प्रदेश में हाल के विधान सभा चुनाओं के बाद उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मंत्री, मुहम्मद आज़म खान और देहली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी के बीच विधान परिषद् के टिकट वितरण से उपजी परस्पर बयानबाज़ी, इस दिशा में भविष्य का कोई संकेत हो सकता है?

9. देश की पंथ-निरपेक्ष सामाजिक और राज्य व्यवस्था के अंतर्गत सभी देशवासियों से यह अनुरोध होना चाहिये कि सभी धर्मों के समुदाय आपसी सद्भाव को ध्यान में रखते हुए इन विदेशी भाइयों से अनुरोध करें कि वे इस देश की सुरक्षा की खातिर इसकी समेकित संस्कृति का सम्मान करना आरम्भ करें, और यहाँ किसी प्रकार का सामाजिक विद्वेष न फैलायें| भारत में पहले से स्थित ईसाई धर्मस्थलों के सञ्चालन में कभी कोई कठिनाई आयी हो, ऐसा सुनने को नहीं मिला है - अतः क्या यह उचित नहीं होगा कि इन ईसाई धर्मस्थलों के प्रमुख पादरी अब यह घोषणा करें, कि भारत में बाहर से धर्मान्तरण करने के लिये कोई विदेशी मिशनरी भारत में नहीं आये - इस काम में उनको भारत के संविधान के अंतर्गत पूरी धार्मिक सवतंत्रता प्राप्त है, और क्या वे अपने इस काम को सही अंजाम देने में किसी विदेशी से कम हैं? भारत के संविधान में सभी नागरिकों को समुचित अधिकार प्राप्त हैं, और उसके भाग IV और भाग IVA के अंतर्गत ऐसे प्रावधान हैं, जिनमें हर नागरिक के क्या कर्तव्य हैं, उनका उल्लेख है| इन दो भागों पर आधारित एक समग्र सामाजिक रचनात्मक अभियान देश में चलाने की आज जरूरत है, जो पंथ और जातियों की सोच से परे, इस देश की पूरी राज्य व्यवस्था को जागरूक रखे, ताकि वह सुशासन की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर इस देश की जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर अपनी व्यवस्था संचालित करे| कई मोर्चों पर काम होना है जैसे - चुनाव सुधार, लोकपाल बिल, प्रशासनिक सुधार, न्याय व्यवस्था में सुधार, शिक्षा व्यस्था में सुधार, आर्थिक व्यस्था में सुधार, आदि| पंचायतों के द्वारा विकेन्द्रित प्रशासन व्यवस्था और वर्षा-जल-संरक्षण पर आधारित टिकाऊ विकेन्द्रित विकास की योजनाओं का सञ्चालन आज की परम आवश्यकता है| विकेन्द्रित प्रशासन व्यवस्था और विकास का अर्थ है, हर ग्राम एवं मोहल्ला स्तर पर स्थानीय निवासियों के माध्यम से एवं उनके सहयोग की समुचित व्यवस्था से इसका सम्पन्न होना| 73 वाँ संविधान संशोधन पंचायत व्यवस्था के साथ एक बड़ा खिलवाड़ था जिसे तत्काल ठीक किया जाना चाहिये, ताकि सही तरीके से पंचायतों का सञ्चालन हो सके| जब से 1986 में, World Bank द्वारा पोषित Ganga Action Plan आरम्भ हुआ है, तब से देश के हर नगर का sewerage - मल की अविरल धारा, उस नगर के समीप नदी में बहाई जा रही है, जहाँ से उस नगर की पेयजल योजना के माध्यम से उस नगर के हर घर को पेयजल की आपूर्ति की जा रही है, और जिस पानी में इस मल के Coliform नाम के कीटाणु भरे रहते हैं| यदि आज देश के हर बच्चे को पेट की बीमारी है तो इसमें आश्चर्य क्यों? गंगा और यमुना समेत देश की हर नदी धीरे-धीरे नष्ट-भ्रष्ट हुई जा रही है| World Bank और विदेशी पूँजी का देश के विकास में इस प्रकार उपयोग होना चाहिये कि विकास के स्थान पर विनाश न हो और देश की संप्रभुता प्रभावित न हो| बिगड़ते हुए पर्यावरण के उपचार के लिये अब यह आवश्यक हो गया है कि महात्मा गाँधी द्वारा

निर्धारित तीन मंत्र - Reduce consumption अर्थात उपभोग में संयम, Reuse material अर्थात वस्तुओं का पुनर्प्रयोग, Recycle waste अर्थात व्यर्थ पदार्थों का पुनर्निर्माण करने को भारत का हर नागरिक अपनाए| अपनी पुस्तक "Being Different" के अन्त में राजीव मल्होत्रा ने यह आशा व्यक्त की है कि आज विश्व में महात्मा गाँधी की सन 1909 में लिखी पुस्तक "हिन्द स्वराज" के विचारों पर आधारित एक विचार क्रांति अभियान चलाना होगा, जो सब देशों को एवं उनमें निवास करनेवाले सभी लोगों को इस बात के लिये राजी करे, कि अब परस्पर सहयोग से ही दुनिया चल सकती है, अन्यथा पूरा विश्व विनाश की ओर बढ़ता जायेगा| स्मरण रहे कि एक सार्वभौमिक "विचार क्रांति अभियान", गायत्री परिवार के प्रणेता पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा भारत में अपनी मासिक पत्रिका "अखंड ज्योति" के माध्यम से सन 1937 से आरम्भ किया गया था| महात्मा गाँधी ने संसार की सात बड़ी गलतियों का उल्लेख किया है - (i) Wealth without work - बिना काम के दौलत; (ii) Pleasure without conscience - बिना विवेक के उपभोग; (iii) Knowledge without character - बिना चरित्र के ज्ञान; (iv) Commerce without morality - बिना नैतिकता के व्यापार; (v) Science without humanity - बिना मानवता के विज्ञान; (vi) worship without sacrifice - बिना त्याग के उपासना and - एवं (vii) Politics without principles - बिना सिद्धांत के राजनीति|

IncredibleIndiaProperty.com

(A real estate investment, management & consulting service)

"I think India has amazing long-term potential. The country is going to be one of the greatest places in the world to buy real estate,"
- Donald Trump

- **NRIs are showing their huge interest in the real estate as rupee falls against US dollar. ****
- **Investment in Retail Shops and Offices is bringing 9% rental income per annum from the builder or tenant from day 1 along with property appreciation in Noida, Gurgaon, Chandigarh, Mumbai, Pune and other places in India. ****
- **Investment in Residential Property, Land, Retail Shops or Office Space has been continuously appreciating. ****

Own a shop at Unitech Garden Galleria, Noida
9% rental income per annum from the builder or the tenant

Incredible India Property

Business Address (USA)
Plainsboro NJ 08536 USA
Contact: +1-609-451-0328
info@IncredibleIndiaProperty.com

Business Address (India)
Globus D Mall, Office No. 35, Sector – 63
Noida – 201301 India
Contact: +91-921-304-1096
info@IncredibleIndiaProperty.com

DELHI	NOIDA	GURGAON	CHANDIGARH	MUMBAI	PUNE	& MORE

****Email or call for the more detail, floor plan, pricing, return, duration and payment plans etc.**

मैं वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला में कनिष्ठ २ की अध्यापिका हूँ| मैं हिंदी यू.स.ए. से चार वर्षों से जुड़ी हुई हूँ| मेरा जन्म व पालन पोषण देहरादून में हुआ था| मैं प्लेंसबोरो, न्यू जर्सी में अपने पति व दो बच्चों के साथ रहती हूँ| मुझे बच्चों को पढ़ाना और उनके साथ समय बिताना अच्छा लगता है| मुझें छोटी कविता और कहानी लिखना पसंद है|

बचपन की यादें

मोनिका मिर्ग

आती हैं याद बचपन की वो यादें
याद करके जिनको आज भी
आंसू ख़ुशी के निकल आते

दिसम्बर की वो ठंडी रातें
मोटी सी रजाई में बैठ कर
करता पूरा परिवार बातें
और फिर हम सब मुस्कराते

नुक्कड़ के ठेली से पिताजी
गरमा गरम मुंगफलिया लाते
गुड़ की ढेली के साथ जिनको
जट पट ख़तम कर जाते

वो छोटी सी रसोई माँ की
जिसमे बैठ कर तवे से उतरी
गरमा गरम सिकीं रोटी खाते
और हस्ते हुए पाठशाला चले जाते

वो पाँच बादाम भीगे हुए
परीक्षा की सुबह-सुबह
बिना नागा जरुर खाते
और परीक्षा में पूरे नंबर लाते

वो सुबह की धूपं का नजारा और
वो खुला खुला सा आंगन हमारा
हाथ में चाय का कप और अख़बार
इत्मीनान से कुर्सी पर बैठ कर
पिता जी हमारे पूरी ख़बरें पढ़ जाते

वो हमारा स्कूटर बजाज का
और परिवार हमारा पाँच का
फिर भी जैसे तैसे ऐसे वैसे बैठ जाते

वो स्कूल की छुट्टी के बाद
स्कूल के बहार टोकरी वाले भईया से
इमली और बेर खरीदकर जरूर खाते

वो गर्मियो की छुटियाँ का आना
और हमारा रिश्तेदारों के घर जाना
तपती भूप में खेलते और
पानी पीकर खाली बोतल फ्रिज में छोड़ जाते

आती हैं याद बचपन की वो यादें
याद करके जिनको आज भी
आंसू ख़ुशी के निकल आते

नाम : प्रीत अरोड़ा, **जन्म** - २७ जनवरी, **शिक्षा**- एम.ए. हिंदी पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में दोनों वर्षों में प्रथम स्थान के साथ और मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श पर शोध-कार्य, **कार्यक्षेत्र:** अध्ययन एवं स्वतंत्र लेखन व अनुवाद, अनेक प्रतियोगिताओं में सफलता ,आकाशवाणी व दूरदर्शन के कार्यक्रमों तथा साहित्य उत्सवों में भागीदारी ,हिंदी से पंजाबी तथा पंजाबी से हिंदी अनुवाद , देश विदेश की अनेक पत्रिकाओं में लेख, संस्मरण, कविताएँ, इत्यादि प्रकाशित

शोषण से लेकर सशक्तीकरण

प्रीत अरोड़ा

पितृसत्तात्मक समाज में नारी, पुरुष की गुलाम और सामाजिक प्रताड़नाओं का शिकार रही है। नारी ही एक मात्र ऐसी जाति है जो कई हजारों वर्षों से पराधीन है। नारी-विमर्श स्त्री उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं की दिशा को उजागर करने में एक साकारात्मक प्रयास है, जो शोषण से लेकर सशक्तीकरण तक के सफर पर प्रकाश ड़ालता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी का प्रत्येक कदम घर से लेकर बाहर तक शोषित होता रहा है। उसे कभी देवी तो कभी दासी बना दिया गया, परन्तु उसे मानवी नहीं समझा गया । समाज में व्याप्त पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा, विधवा-विवाह निषेध, बहुपत्नी विवाह, कन्या जन्म दुर्भाग्यपूर्ण माना जाना, शिक्षा एवं स्वावलंबन के आधारों से वंचित रखना, आजीवन दूसरों के नियंत्रण में रखना आदि मान्यताओं के द्वारा नारी को शोषित किया जाता रहा है। शोषण के अन्तर्गत उसका दैहिक शोषण, आर्थिक, शैक्षणिक व मानसिक शोषण तक किया जाता है, जैसे 'महादेवी वर्मा' ने नारी की आर्थिक स्थिति को उजागर करते हुए कहा है, "समाज ने स्त्री के सम्बन्ध में अर्थ का ऐसा विषम विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर सम्पन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है। वह केवल उत्तराधिकार से ही वंचित नहीं है, वरन् अर्थ के सम्बन्ध में सभी क्षेत्रों में एक प्रकार की विवशता के बन्धन में बंधी हुई है "आर्थिक शोषण के अन्तर्गत दहेज के लिए नारी को सताना, अशिक्षा, परनिर्भरता, घर में पुरुषों के शासन में उसकी अधीनता पारिवारिक व कार्यक्षेत्र में पीड़ित करना आदि कई ऐसे स्तर हैं जिनसे नारी का आर्थिक शोषण किया जाता है।"

शोषण के इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए नारी अथक प्रयास भी करती है, जिसके लिए वह उन परम्परागत रूढ़ियों व बन्धनों से मुक्ति लेने के लिए प्रयास करती है, जिसमें उसे जकड़कर उसके अधिकारों का हनन किया जाता है। पुरातन नारी के मुकाबले में आज की नारी आमूलचूल परिवर्तित हो गई है। अब नारी जीवन में ऐसी लहर आ गई है कि उस पर से सामन्ती बन्धन हट गए हैं, और आज वह घूँघट निकालने, घर से बाहर न निकलने, नौकरी न करने, शिक्षा न ग्रहण करने, प्रेम-विवाह न करने, अविवाहित न रहने आदि किसी भी मान्यताओं के दायरे में बाधित नहीं की जाती है। इस परिवर्तन का कारण यही है कि नारी उस पुरातन मूल्यों को नकारने एवं सामाजिक आग्रहों को तोड़ने की चेष्टा में संघर्षरत हुई है, जिन्होंने उसे मानवीय क्रूरता में जकड़ा है। निश्चित रूप से इन सब रूढ़िग्रस्त बन्धनों व परम्पराओं से मुक्ति लेने के लिए वह निरन्तर संघर्ष करती है, कहने को तो नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिए जाते हैं, किन्तु नारी द्वारा उन अधिकारों को सिर्फ जानना और प्रयोग करने में बहुत अंतर होता है, चूंकि वह सिर्फ अधिकारों से परिचित हो पर उनका प्रयोग न कर पाएं तो ऐसे अधिकारों का उसके जीवन में क्या फायदा।

परिणामस्वरूप चिरकाल से दबती -पिसती आ रही अधिकारों से वंचित नारी द्वारा संघर्ष तभी शुरू होता है जब उसे पुरुष की मात्र आश्रिता मानकर उसके मन-बहलाव एवं विविध विधि सेवा प्रयोजन को पूरा करने का साधन भर माना जाता है, और जहाँ उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व व अस्तित्व नहीं माना जाता। आधुनिक परिस्थितियों ने नारी को बहुत सचेत बना दिया है। आज नारी दो मोर्चों पर मुख्य रूप से संघर्ष करती है। एक मोर्चा तो परम्परागत व्यवस्था में अपनी भूमिका निभाते हुए स्वाधीनता तथा अधिकारों की माँग के लिए योजनाबद्ध प्रयास करने से सम्बन्धित है, जबकि दूसरे मोर्चे द्वारा उस मानसिकता को बदलना है, जो उसे आज भी भोग्या मानकर उसका शोषण करता है।

आज विश्व भर में नारी-पुरुषों के बीच कड़ी प्रतियोगिता होती है। चाहे प्राचीनकाल से ही संसार पर पुरुषों का आधिपत्य रहा है, लेकिन आज नारी जाति ने करवट बदलकर अपनी कमर कस ली है, और वह अपने अधिकारों के लिए गुहार भी लगाती है। मुख्य रूप से आज नारी का संघर्ष उसकी अस्मिता एवं अस्तित्व की पहचान से है जोकि पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध शुरू होता है। इसलिए आधुनिक नारी संघर्षरत होकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व व व्यक्तित्व को आकारित करने वाली शक्ति के रूप में स्थापित हुई है। सच्चाई यह है कि नारी को परवश बनाने में पितृसत्तात्मक धर्म का आदर्श एक अमोघ अस्त्र है, जिसका बार-बार पारायण करवाकर पुरुष-समाज ने नारी को तन-मन से ऐसा पराधीन बनाया कि वह कभी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को महसूस ही नहीं कर पायी चूँकि ,"हमारा समाज हमेशा से ही पुरुष प्रधान रहा है। उसकी हर व्यवस्था पुरुष का ही समर्थन करती रही है।"

पितृसत्तात्मक समाज स्त्री के अधिकारों पर विविध वर्जनाओं व निषेधों का पैहरा बैठाता रहा है। परम्परा जहाँ नारी को पितृसत्ता की प्रभुता में रहने को बाध्य करती है, वहाँ आधुनिक नारी की चेतना उसे पितृसत्ता के सभी बन्धनों को तोड़ ड़ालने को प्रेरित करती है, चाहे पुरुष समाज ने नारी-जीवन, उसकी कार्यशैली व उसकी सत्ता को निधार्रित की चेष्टा की है, लेकिन अब नारी भी पुरुष की तरह एक अलग संवर्ग है। अब उसकी भी एक अलग कोटि व सामाजिक स्थिति है। आज वह उन मिथकों को तोड़ रही है जो उसके विरुद्ध रचे गए। आज नारी अपनी मुक्ति के लिए, पुरुष के समान अधिकार प्राप्ति के लिए, और स्वयं को मनुष्य (पुरुष के समान ही) के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए व्यापक स्तर पर संघर्ष कर रही है। इससे यही ध्वनित होता है कि नारी स्वयं को पराधीन और पुरुष सत्ता के अधीन पा रही है, उसके व्यक्तित्व को पुरुष के समान स्वाभाविक रूप से विकसित होने का अवसर नहीं दिया गया, और आज वह इतनी जागृत हो चुकी है कि वह अपने को किसी भी प्रकार के बन्धन में रखने के विरुद्ध ही नहीं अपितु पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था के हर फंदे को काटने का प्रयास कर रही है। स्त्री-चेतना पितृसत्ता के द्वारा गढ़ी गई और प्रचलित की गई उन धारणाओं या मान्यताओं पर प्रश्नचिन्ह लगाती है जो स्त्रियों को स्वाभाविक रूप से पुरुष से हीन सिद्ध करने के लिए गढ़ी गई है।

आज नारी अस्मिता एवं अस्तित्व का प्रश्न अनेक आयामी है। एक लम्बी पुरानी स्थापित व्यवस्था को तोड़कर जन-संघर्ष से जुड़ना और कदम-कदम पर यथार्थ से मुठभेड़ करना ही अस्तित्व की पहचान का तकाज़ा है। यह नारी समाज की सच्चाई रही है कि परिवार में उसकी आवाज को दबाकर उसकी आकांक्षा को कुचल दिया जाता है। उसकी आवश्यकताओं की भी उपेक्षा की जाती रही है। उसे किसी भी अवस्था में मानवोचित स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त करने की सुविधा नहीं होती है। परन्तु अब आधुनिक नारी ने अपने वर्चस्व के लिए अपना समूचा कौशल दाँव पर लगा दिया है। नारी द्वारा अस्मिता व अस्तित्व की लड़ाई पितृसत्तात्मक समाज, शोषण, परम्पराओं, मान्यताओं, अधिकारों व आर्थिक, राजनैतिक,

सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों की भागीदारी से है। वर्तमान समाज में नारी पुरुष-वर्ग से प्रतिस्पर्धा न कर केवल उसके समकक्ष एक मनुष्य होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकारों की माँग करती है।

निश्चित रुप से जब नारी पितृसत्तात्मक समाज में शोषित होकर विद्रोहात्मक स्वर को प्रस्फुटित करते हैं तो समाज को उसके सशक्त व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। आज नारी ने जीवन की सभी परिभाषाएँ ही बदल दी हैं। चूंकि सशक्तीकरण की प्रक्रिया अधिकार प्राप्त करने, आत्मविकास करने तथा स्वयं निर्णय लेने की है, और यह चेतना का वह मार्ग है जो बृहत्तर भूमिका निभाने की क्षमता प्रदान करता है। इसलिए नारी जीवन में निरर्थक से सार्थक बनकर परीक्षाओं व प्रतियोगिताओं में स्वयं को सशक्त सिद्ध कर रही है। आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत सशक्त नारियों का यही कहना है, "आधा आसमान हमारा, आधी धरती हमारी, आधा इतिहास हमारा है।" आधुनिक नारी यह जान चुकी है कि पुरुष निर्मित पितृसत्तात्मक नैतिक प्रतिमान, नियम, कानून, सिद्धांत, अनुशासन स्त्री को पराधीन, उपेक्षिता,अन्य बनाने के लिए ही सुनियोजित ढ़ंग से गढ़े गये हैं ।

आज सशक्त नारी अपने पाँवों पर खड़ी होकर स्वाभिमानी जीवन व्यतीत कर रही है। वह अपने ज्ञान से गृहव्यवस्था को भी अच्छी तरह सम्भाल रही है, तथा अपने बच्चों को भी सुसंस्कृत बना रही है। इसी कारण वर्ष 2001 को **'नारी सशक्तीकरण** 'के नाम से भी घोषित किया गया था । आज सशक्त नारी वर्षा की बूँदों की तरह विकासोन्मुख होकर बसंत के फूलों की महक को चारों ओर बिखेर रही है, और मर्यादाशील नारी अपनी वरिष्ठता, पवित्रता व अदम्य जिजीविषा के बल पर आसमान में धूमकेतु नक्षत्र की भान्ति टिमटिमा रही है।

श्वेता सिकरी जी कर्मभूमि की एक नियमित लेखिका हैं| कर्मभूमि के पूर्व अंकों में प्रकाशित इनकी दो कहानियां , जीत की मिठास ',' दानवीर कर्ण ,'पाठकों द्वारा अत्यंत सराही गयीं। सुलभ शब्दों में लिखी इनकी रचनाएँ पाठकों तक एक गहरा सन्देश पहुंचाती हैं | श्वेता जी एडिसन, जर्सी में रहती हैं, तथा मर्क फार्मसुटिकल ,'बहुराष्ट्रीय औषधि निर्माण संस्थान में काफी समय से कार्यरत हैं। इनका एक पुत्र एडिसन हिंदी पाठशाला का विद्यार्थी भी है। जीवन की व्यस्तताओं में घिरे होने के उपरान्त भी समय निकाल कर कर्मभूमि हेतु समय पर अपनी मौलिक रचनाएँ प्रेषित करती हैं | अपनी मातृभूमि, मातृभाषा एवं मातृसंस्कृति का पूर्ण सम्मान करते हुए अपने बच्चों में भी ये सभी संस्कार रोपित करने हेतु तत्पर हैं |

भाषा का सही प्रयोग

श्वेता सीकरी

हमारी भाषा ही हमारी पहचान होती है, लेकिन अगर कोई अपनी इसी पहचान से मुँह मोड़ना चाहे तो उसको क्या कहेंगे? ऐसी ही एक कथा है ऐसे इंसान की जिसको अपनी भाषा में कोई रूचि नहीं थी। इसलिए नहीं की उसे भाषा का ज्ञान नहीं था, किन्तु इसलिए क्योंकि उसे लगता था कि यह उच्च श्रेणी की भाषा नहीं है।

रामपुर नामक गाँव में एक आदमी रहता था, जिसका नाम भीरु राम था। बचपन में भीरु बहुत डरपोक था, और इसी कारण से उसके माँ बाप ने उसका नाम भीरु राम रख दिया था। भीरु राम को अपना नाम पसंद नहीं था, इसलिए उसने अपना नाम बदल कर बीर रख दिया था। रखा तो भीरु ने बी. र. था (अंग्रेजी के स्वर), किन्तु वह बीर बन गया था। गाँव में हर कोई उसको अब इसी नाम से जानता था। बीर को अपना नाम पसंद न होने के साथ-साथ अपना गाँव में रहना भी पसंद नहीं था। बीर को पता था की गाँव से निकलने का एक ही रास्ता है, और वह है शिक्षा। इसलिए बीर ने अच्छी शिक्षा लेने का निश्चय किया। बीर अंग्रेजी भाषा से बहुत प्रभावित था, इसलिए उसने इसी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सोची। किन्तु अंग्रेजी भाषा में बीर का हाथ तंग निकला, अत: उसको हिंदी भाषा में ही अपनी शिक्षा जारी रखनी पड़ी। शिक्षा तो किसी तरह से बीर ने प्राप्त कर ली, किन्तु दिमाग में एक ही कीड़ा था, और वह था अंग्रेजी भाषा का। गाँव में बीर सब के साथ टूटी-फूटी अंग्रेजी में बात करने की कोशिश करता, और अपना सीना तान कर चलता था। गाँव में जो लोग वास्तव में अंग्रेजी जानते थे, वह बीर का बहुत मज़ाक उड़ाते थे, और उसकी टांग खींचते थे। रोज़ी रोटी के लिए बीर ने गाँव छोड़ कर शहर में जा कर नौकरी करनी शुरू की, किन्तु अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी के कारण वह कहीं पर नहीं टिक पाया। सबसे ज्यादा दिक्कत की बात यह थी कि बीर हिंदी भाषा का इस्तेमाल नहीं करता था, और अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में जितना समझा पाता था वह काम करने के लिए काफी नहीं था। इसी कारण बीर को वापिस अपने गाँव में आना पड़ा। गाँव में वापिस आ कर बीर ने दृढ़ निश्चय किया के वह अंग्रेजी भाषा को सीख कर रहेगा, अत: उसने दिलोजान से पढ़ना शुरू किया, और अपनी अंग्रेजी भाषा में सुधार लाया। काम काज के लिए बीर ने ज़मींदार के बच्चों को गाँव में पढ़ाना शुरू कर दिया।

इसी तरह समय का पहिया चलता गया। बीर की शादी एक गुणवान लड़की विमला से हो गयी। विमला ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी, किन्तु काफी समझदार थी। दुनियादारी की काफी समझ थी विमला को। शादी के शुरू के दिनों में ही उसे समझते देर नहीं लगी कि उसका पति किस तरह से भाषाओं की जंजाल में फंसा है। उसे यह पसंद नहीं था, किन्तु उसे कुछ समझ नहीं आया की वह क्या करे। किस तरह से अपने पति की आदत को सुधारे?

तभी विमला को एक तरकीब सूझी। उसने अपनी इस तरकीब में बीर के माँ बाप को भी अपनी ओर कर लिया। असल में वे भी बीर की इस आदत से परेशान थे। अगले दिन सुबह जब बीर उठा तो क्या देखता है कि उसके माँ बाप और उसकी बीवी अंग्रेजी भाषा की किताबें उठा कर बैठे हैं, और पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। यह देख कर उसे बहुत खुशी हुई। फटाफट उठ कर, नहा धो कर बीर खाने की लिए रसोई में गया, लेकिन यह क्या, यहाँ तो कुछ नहीं बना हुआ। तब उसे एहसास हुआ की विमला भी तो पढ़ रही है, इस कारण खाना नहीं बना। बीर को बिलकुल भी बुरा नहीं लगा। उसने केला खाया और दूध पिया, और अपने काम पर निकल गया। थोड़ी देर बाद बीर को बहुत भूख लगी, लेकिन वह दोपहर का इंतज़ार करता रहा। लेकिन यह क्या दोपहर भी निकलने वाली हो गयी, और कोई उसको खाना देने नहीं आया घर से। अब तो बीर को गुस्सा आने लगा। इतने में ही उसे विमला दूर से आती हुई नज़र आयी। यह देख कर उसको थोड़ी संतुष्टि हुई। विमला ने आते ही बीर से अंग्रेजी में कुछ इस तरह बात की 'आयी कमिंग फॉर ईटिंग यू आफ्टर दिस आयी गो फॉर ईटिंग अम्मा बाबा', विमला के कहने का मतलब था की मैं तुम्हे खाना खिलने आयी हूँ, उसके बाद मैं अम्मा बाबा को खाना खिलाने जाऊंगी। विमला की अंग्रेजी सुन कर बीर को थोड़ी हंसी आयी, किन्तु वह चुप रहा। रात को जब बीर घर पहुंचा तो घर का नक्क्षा बदला हुआ था। घर में अंग्रेजी गाने चल रहे थे, जो की बीर ने कभी नहीं सुने थे, और खाने में रोटी के बजाये बहार से लाई हुई ब्रेड थी। बीर ने बिना कुछ कहे अपना खाना पीना किया और सोने चला गया।

अगली सुबह जब बीर उठा तो उसने फिर से वही कार्यक्रम देखा। आज यह देख कर बीर को उतनी ख़ुशी नहीं हुई, जितनी कल हुई थी। क्योंकि उसे पता था की इस कार्यक्रम में उसका खाना भी शहीद हो गया है। ऐसा करते अभी विमला और बीर के माँ बाप को चार दिन ही हुए थे कि चौथे दिन बीर को बहुत गुस्सा चढ़ गया और उसने जोर से चिल्ला कर कहा, 'छोड़ो यह अंग्रेजी का भूत और मुझे खाना दो'। उसके ऐसा कहते ही बीर के माँ बाप और विमला उसे घूरने लगे। असल में विमला ने कभी बीर को हिंदी में बात करते नहीं सुना था, इसी कारण उसने बड़ी हैरानगी से बीर को देखा। बीर के माँ बाप भी तरस गए थे अपने बच्चे से हिंदी भाषा में बात करने के लिए, इसलिए उन्होंने भी उसे हैरानी से बीर को देखा। सबको अपनी तरफ इस तरह घूरते हुए देख कर बीर को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर से उसने हिंदी में सबसे बोला 'क्या हो गया है आप सबको। मुझे हिंदी बोलनी आती है। इस पर विमला बोली 'वैरी गुड है जी। यू स्पीकिंग गुड हिंदी'। यह सुन कर बीर विमला से बोला 'हाँ मुझे अच्छे से हिंदी बोलनी आती है। पर मैंने देखा है जो बड़े लोग हैं वे सिर्फ अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। मैं भी उनके जैसा बनना चाहता हूँ, इसलिए मैं सबके साथ अंग्रेजी में ही बात करता हूँ।' अब विमला से नहीं रहा गया और उसने बीर से कहा 'देखिये, भाषा से कोई बड़ा या ऊंचा नहीं होता। ऊँचाई तो ज्ञान से प्राप्त होती है। मुझे गर्व है कि आपको ज्यादा भाषाओं का ज्ञान है, लेकिन इस भाषाओं के जंजाल में फँस कर आप भूल गए कि आप क्या कर रहे हैं। आप बैठ कर अपने माँ बाप से बात नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें यह भाषा का ज्ञान नहीं है, आप मुझसे बात नहीं करते, क्योंकि मैं भी इतनी पढ़ी लिखी नहीं हूँ। आपसे बात करने के लिए ही हमने अंग्रेजी सीखने की योजना बनाई, लेकिन आप उसे सहन नहीं कर सके। कभी आपने सोचा है कि आपकी इस आदत से हमें कितने तकलीफ होती है? हम जिस भाषा में सबके साथ अपने विचार पेश कर सकते हैं, उसे बोलने में शर्म कैसी? हाँ में मानती हूँ कि अगर हम किसी और देश में होते जहाँ अंग्रेजी भाषा के बिना गुज़ारा नहीं हो सकता, वहाँ आप इसका हर रोज इस्तेमाल करते तो हम में से किसी को कोई दिक्कत नहीं होती। लेकिन अपने देश में रह कर अपने देश की भाषा के साथ ऐसी नाइंसाफी तो ठीक नहीं है न। देखिये मुझे ज्यादा तो नहीं पता पर इतना मैं ज़रूर कह सकती हूँ कि जैसा देश वैसा भेष और वैसी भाषा। यही शोभित होता है जी। बीर चुप-चाप खड़ा विमला की बातें सुनता रहा, और उसे एहसास हुआ कि उससे कितनी बड़ी गलती हो गयी। धीरे धीरे वह अपने माँ -बाप के पास गया और उनके पाँव छूकर उसने क्षमा मांगी। विमला से भी उसने माफ़ी मांगी और सबको यकीन दिलाया की वह हर भाषा का इस्तेमाल सही ढंग से करेगा। उसे पता चल गया था कि जिस तरह से उसने अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल किया उससे उस भाषा की हंसी ही उडी थी। उसने कसम खाई कि वह यह गलती दोबारा नहीं दोहराएगा, और बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते वक़्त ही उस भाषा का सही इस्तेमाल करेगा। यह सुन कर विमला और बीर के माँ बाप को बड़ी प्रसन्नता हुई।

नाम: रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', **शिक्षा**: एम. ए-हिन्दी (मेरठ विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में), बी. एड., जन्म: 19 मार्च,1949 (हरिपुर , जिला -सहारनपुर), www.laghukatha.com (40 देशों में देखी जाने वाली लघुकथा की एकमात्र वेब साइट), http://patang-ki-udan.blogspot.com/ (बच्चों के लिए ब्लॉगर) सेवा : 7 वर्षों तक उत्तरप्रदेश के विद्यालयों तथा 32 वर्षों तक केन्द्रीय विद्यालय संगठन में कार्य । केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य पद (19 फ़रवरी 1994- 31 अगस्त 2008) से सेवा निवृत्ति।

शृंगार है हिन्दी

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

खुसरो के हृदय का उदगार है हिन्दी ।

कबीर के दोहों का संसार है हिन्दी ।।

मीरा के मन की पीर बनकर गूँजती घर-घर ।

सूर के सागर- सा विस्तार है हिन्दी ।।

जन-जन के मानस में, बस गई जो गहरे तक ।

तुलसी के 'मानस' का विस्तार है हिन्दी ।।

दादू और रैदास ने गाया है झूमकर ।

छू गई है मन के सभी तार है हिन्दी ।।

'सत्यार्थप्रकाश' बन अँधेरा मिटा दिया ।

टंकारा के दयानन्द की टंकार है हिन्दी ।।

गाँधी की वाणी बन भारत जगा दिया ।

आज़ादी के गीतों की ललकार है हिन्दी ।।

'कामायनी' का 'उर्वशी' का रूप है इसमें ।

'आँसू' की करुण, सहज जलधार है हिन्दी ।।

प्रसाद ने हिमाद्रि से ऊँचा उठा दिया।

निराला की वीणा वादिनी झंकार है हिन्दी।।

पीड़ित की पीर घुलकर यह 'गोदान' बन गई ।

भारत का है गौरव, शृंगार है हिन्दी ।।

'मधुशाला' की मधुरता है इसमें घुली हुई ।

दिनकर के 'द्वापर' की हुंकार है हिन्दी ।।

भारत को समझना है तो जानिए इसको ।

दुनिया भर में पा रही विस्तार है हिन्दी ।।

सबके दिलों को जोड़ने का काम कर रही ।

देश का स्वाभिमान है, आधार है हिन्दी ।।

समग्रता से इस सृष्टि को स्वीकारो।
सुख-दुख, मान-अपमान, लाभ-हानि,
जन्म और मृत्यु कोई चुनाव नहीं। फिर
देखिए आनंद बरसता है या नहीं....

हरप्रीत कलसी संगीत अध्यापिका हैं। इन्होंने संगीत की उच्च शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय से पूरी करके शिक्षण के क्षेत्र में कदम रखा। 6 वर्ष चंडीगढ़ में संगीत अध्यापिका के रूप में कार्य करके न्यू जर्सी में 'सुरभाषा' नमक संगीत अकादमी की स्थापना की, जो सुर और भाषा का मिश्रण है।

संगीत का महत्व

हरप्रीत कलसी

"संगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है, जिसके द्वारा मानव मन के भावों को व्यक्त कर सकता है"

मेरा सौभाग्य है कि आज आप से संगीत जगत से संबंधित विचार बाँटने का अवसर मिला है। संगीत जगत से मेरा संपर्क स्कूल के समय से रहा है। ईश्वर ने मुझे समृद्ध और संगीतमयी आवाज देकर जीवन के हर मोड़ पर अपनी पहचान बनाने का अवसर दिया। विद्यालय में सुरीली गायिका के रूप में सम्मान मिला, जिसने मुझे संगीत को एक विषय के रूप में चुनने के लिए प्रोत्साहित किया। यही शौक और सम्मान विश्वविद्यालय तक जागृत रहा, और संगीत मेरे मुख्य विषयों में से एक बन गया। प्रारंभ से ही अध्यापिका बनने का सपना था तो सोचा क्यूँ न संगीत अध्यापिका बना जाए। माता-पिता ने भी भरपूर साथ दिया। लोग अपने व्यवसाय से राहत पाने के लिए मनोरंजन के साधन अपनाते हैं। मैंने मनोरंजन को ही अपना व्यवसाय बना लिया, और यह सिलसिला आज तक जारी है।

भारत से विदेश आते समय लगा कि शायद यहाँ की जीवन शैली में यह संगीत खो जाएगा, परंतु यहाँ आकर पाया कि भारतीय संगीत को अपना कर मैंने जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय लिया जो आज विदेश में भी मुझे अपने देश और संस्कृति से जोड़े हुए है। यहाँ आकर देखा कि अपने देश को छोड़े हुए चाहे कितने वर्ष ही क्यों न हो जाएँ, आज भी हम अपनी जड़ें वहीं ढूंढ़ते हैं, और प्रयास करते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी भी उन जड़ों से जुड़ी रहे। उसका रास्ता चाहे हम अपने बच्चों को भारतीय संगीत से जोड़ कर ढूंढे या उन्हें अपनी मातृभाषा सिखा कर।

मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं इस प्रयास को पूरा करने में कुछ सहायता कर पाई हूँ। अपनी छोटी सी संगीत अकादमी 'सुरभाषा' जो सुरों और भाषा का संगम है, में बच्चों और बड़ों को भारतीय संगीत की शिक्षा देने का प्रयत्न करती हूँ, और ऐसा करने से जो आत्मसंतोष मुझे मिलता है उसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

प्राय: लोग मुझ से प्रश्न करते हैं कि भारतीय संगीत और पश्चिमी संगीत में से कौन सा संगीत उत्तम है? मेरा यह मानना है कि संगीत वही है जिसे सीखने का मन बिना किसी उलझन के करे, जिसे एकांत में गुनगुनाने का मन करे, जिसे आप अपने परिवार के साथ बाँट पाएँ। अपने घर की पूजा में अपने बच्चों को आध्यात्मिक गीत गाते सुन कर जो जीत मुझे महसूस होती है उसकी तुलना किसी धन-दौलत से नहीं की जा सकती।

कई बार हम अपने बच्चों से ज्यादा अपेक्षाएँ करते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि उन पर अपनी संस्कृति संभालने के साथ-साथ यहाँ की संस्कृति में घुलने-मिलने और साथ चलने की भी जिम्मेदारी है। आवश्यकता है उन्हें इस लायक बनाने की कि वे दोनों संस्कृतियोंमें से उत्तम चुन सकें। हमें ईश्वर ने भारतीय बना कर कुछ जिम्मेदारी सौंपी है, तो हमारा कर्त्तव्य बनता है कि मरते दम तक उस पहचान को बनाए रखें, और यही प्रेरणा आने वाली पीढ़ी को भी दें।

एक विचार– हम विश्वास करते हैं कि नई पीढ़ी में हिंदी बोलने, लिखने, और पढ़ने का प्रचार करना चाहिए। हिंदी हमारी मातृभाषा है, और इसे बोलने से हमारी जड़ें सुदृढ़ होती हैं। विदेश में रहते हुए यह आवश्यक है कि हम नई पीढ़ी में अपनी भाषा का स्थानांतरण करें, जिससे वे उसे और आगे बढ़ा सकें। आइये हम सब मिल कर हिंदी यू.एस.ए. के इस अभियान में जुड़ जाएँ, और अपनी प्राचीन सभ्यता को सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर करें।

सर्वेश एवं छवि धारयन - Apex Technology

सुधा अग्रवाल जी हिन्दी यू.एस.ए. से 11 वर्षों से जुड़ी हुई है। ये अपने पति शिव अग्रवाल जी के साथ मिलकर मॉटगोमरी पाठशाला का संचालन भी करती हैं। इन्हें हिन्दू धर्मग्रंथों रामायण और महाभारत में काफी रुचि है, और ये बच्चों के लिए रामायण और महाभारत की प्रश्नावलियाँ नियमित रूप से कर्मभूमि के लिए तैयार करती रहती हैं।

महाभारत के प्रश्न एवं उत्तर

महाभारत के पिछले अंक में प्रश्नावली के माध्यम से आपने "**भीम और हिडिम्बा के पुत्र का नाम क्या था**" तक की कथा की जानकारी प्राप्त की। अब आप महाभारत की कथा की आगे की जानकारी प्रश्नोत्तर के माध्यम से प्राप्ति करिये। सभी प्रश्नों का सही उत्तर" कर्मभूमि "के पिछले पन्ने में देखिएगा।

प्रश्न -१ जब पाण्डवों की सहयता से दुर्योधन द्वैत वन के दैत्यों से छूट कर हस्तिनापुर आए तब पितामह भीष्म ने उन्हें क्या समझाया?

उत्तर - **अ - पितामह भीष्म ने दुर्योधन से कहा तुम्हारी सहायता के लिए पाण्डव हर समय तैयार रहते हैं। वे ही तुम्हें द्वैत वन के दैत्यों से छुड़ा कर लाये हैं। तुम्हारे मित्र कर्ण और शकुनी मामा किसी ने भी सहायता नहीं की।**

ब - पितामह भीष्म ने दुर्योधन से कहा तुम्हारी सहायता के लिए पाण्डव कभी भी तैयार नहीं रहते हैं।

स- पितामह भीष्म ने दुर्योधन से कहा तुम्हारी सहायता के लिए मित्र कर्ण ,शकुनी मामा हर समय तैयार रहते हैं।

प्रश्न -२ पितामह भीष्म कर्ण को दुर्योधन का हितैषी क्यों नहीं समझते थे?

उत्तर - अ - **पितामह भीष्म कर्ण को दुर्योधन का हितैषी इसलिए नहीं समझते थे क्योंकि कर्ण छल कपट का साथ दे रहा था। कर्ण के मन में पाण्डवों के प्रति द्वेष था।**

ब- पितामह भीष्म कर्ण को दुर्योधन का सच्चा हितैषी ही समझते थे।

स- पितामह भीष्म कर्ण को दुर्योधन का शत्रु समझते थे।

प्रश्न -३- महाराजा द्रुपद की राजधानी को किसने घेरा और अपना आश्रित बना लिया?

उत्तर - ३ **अ - कर्ण** ब - दुर्योधन स- शकुनी मामा

प्रश्न -४ दुर्योधन को पुरोहित जी ने राजसूर्य यज्ञ करने को क्यों मना किया ?किस यज्ञ को पुरोहित जी ने दुर्योधन को करने की सलाह दी?

उत्तर - ४ **अ - पुरोहित जी ने कहा कि ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर ही राजसूर्य को कर सकता है। दुर्योधन को पुरोहितजी ने कहा कि तुम वैष्णव यज्ञ कर सकते हो।**

ब- पुर्हन यज्ञ कर सकते हो।

स- महायज्ञ कर सकते हो।

प्रश्न - ६ - पाण्डवों ने ११ वर्षो तक वन में क्या खाया था?

उत्तर - ६ - अ पाण्डवों ने फल मूल खा कर ११ वर्षों तक जीवन बिताया।

ब - पाण्डवों ने रोटी चावल खा कर ११ वर्षों तक जीवन बिताया।

स- पाण्डवों ने दाल खा कर ११ वर्षों तक जीवन बिताया।

प्रश्न - ७ - सत्यवती नन्दन व्यास जी वन में पाण्डवों से क्यों मिलने आये थे ?व्यास जी ने पांडवों से क्या कहा और उन्हें दुःख क्यों हुआ?

उत्तर - अ - सत्यवती नन्दन व्यास जी पाण्डवों को देखने के लिए वन में आए। पाण्डवों को जंगली फल मूल खाते देख कर व्यास जी को बहुत दुःख हुआ। व्यास जी ने पाण्डवों से कहा संसार में तपस्या के बिना किसी को भी उच्च कोटि का सुख नहीं मिलता। तप से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है तुम्हें तप से ही जीवन में ख्याति मिलेगी।

ब - पाण्डवों से सत्यवती नन्दन व्यास जी वन में मिलने यह कहने गए थे कि तुम्हारी माता सत्यवती ने तुम्हें याद किया है।

स- सत्यवती नन्दन व्यास जी वन में पाण्डवों को शकुनी मामा से सावधान करने के लिए गए।

प्रश्न - ८ पाण्डवों ने व्यास जी से यह क्यों पूछा कि दान एवं तपस्या में से किसका अधिक फल है और इन दोनों में से कौन सा अधिक कठिन है?

उत्तर - अ - व्यास जी ने बताया दान से बड़ कर कठिन कार्य पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं है। इसीलिए दान का अधिक फलदायी है। केवल ईमानदारी से कमाया हुआ धन दान के लिए सबसे श्रेष्ठ है।

ब- व्यास जी ने बताया दान कोई आवश्यक नहीं है।

स - व्यास जी ने बताया दान चोरी का कमाया हुआ धन भी हो सकता है।

प्रश्न -९ दुर्योधन ने दुर्वासा ऋषि से क्या वरदान माँगा?

उत्तर - अ - दुर्योधन ने दुर्वासा ऋषि से पाण्डवों के अतिथि बनने का वरदान माँगा जो पास के वन में रह रहे थे।

ब- दुर्योधन ने दुर्वासा ऋषि से वरदान माँगा कि मेरे भाई पाण्डवों को वन से ले आइये।

स -दुर्योधन ने दुर्वासा ऋषि से वरदान माँगा कि मेरे भाई पाण्डवों को आप श्राप दीजिये।

प्रश्न -९ जब दुर्योधन के कहने पर दुर्वासा ऋषि अपने १० हजार शिष्यों को ले कर पाण्डवों के पास वन में गए वहाँ उनका कैसा सत्कार हुआ?

उत्तर - अ - जिस समय दुर्वासा ऋषि अपने १० हजार शिष्यों को ले कर पाण्डवों के पास वन में पहुचे . उस समय पांडव एवं द्रोपदी भोजन कर चुके थे उनके घर में अन्न का एक दाना तक नहीं था द्रौपदी चिंतित हो गई और भगवान श्री कृष्ण को हृदय से याद किया। भगवान श्री कृष्ण ने द्रौपदी की रसोई की बटलोई में लगा थोड़ा सा साग खाया हुआ था उसे खाया और आशीर्वाद दिया कि इस साग के द्वारा सम्पूर्ण जगत की आत्मा यज्ञ भोक्ता परमेश्वर तृप्त एवं संतुष्ट हो। इस तरह से भगवान श्री कृष्ण के आशीर्वाद से दुर्वासा ऋषि एवं उनके १० हजार शिष्यों की आत्मा तृप्त हो गई उन सबका पेट बहुत ही भर गया। वे सब पाण्डवों के अतिथि बनने से पहले ही जहाँ शरण मिली वे जाकर छुप गए ताकि उन्हें दोबारा खाना ना खाना पड़े। इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने पाण्डवों एवं द्रौपदी की रक्षा की।

ब- दुर्वासा ऋषि अपने १० हजार शिष्यों को ले कर जब पाण्डवों के पास वन में पहुँचे उन सब का सत्कार अच्छा नहीं हुआ।

स- दुर्वासा ऋषि अपने १० हजार शिष्यों को ले कर पाण्डवों के पास वन में पहुँचे ही नहीं।

प्रश्न - १० जयद्रथ किसका पुत्र था ?

उत्तर - १० अ - वृद्धक्षत्र का पुत्र ब - बाल्मीकि का पुत्र स – सिन्धु देश का पुत्र

अगले अंक में महाभारत के आगे के प्रश्न एवं उत्तर दिए जाएँगे।

रामायण के प्रश्न एवं उत्तर

रामायण के प्रश्न एवं उत्तर रामचरित मानस (गीताप्रैस) से लिए गए है। सभी को प्रश्नवली के माध्यम से केवट की कथा तक की जानकारी प्राप्त होगी। अब आप को रामायण के आगे की कथा को प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से जानकारी अगले अंक में मिलेगी।

प्रश्न - 1 सबसे पहले तुलसीदास जी ने किसको रामचरित मानस सुनाई ?

उत्तर - 1 तुलसी दास ने सबसे पहले रामचरितमानस भगवान विश्वनाथ जी और अन्नपूर्णाजी को सुनाई थी।

प्रश्न -2 तुलसीदास जी को किसने आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में रामचरितमानस की रचना करो?

उत्तर -2 भगवान शिव जी ने आदेश दिया था।

प्रश्न -3 किस भगवान की प्रेरणा से तुलसीदास जी ने रामचरित भगवान की रचना अयोध्या में की थी?

उत्तर -3 भगवान शिव जी के आशीर्वाद (प्रेरणा) से अयोध्या में रामचरित मानस की रचना की थी।

प्रश्न 4– तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना किस संवत् में की थी?

उत्तर -4 तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना संवत् १६३१ में रामनवमी के दिन की थी।

प्रश्न -5 रामचरित मानस की रचना कितने दिन में पूरी हुई थी?

उत्तर -5 रामचरित मानस की रचना दो वर्ष, सात महीने, छब्बीस दिन में पूरी हुई थी।

प्रश्न -6 रामचरित मानस किस दिन अयोध्या में प्रकाशित हुआ था।

उत्तर -6 चैत्र मास की नवमी को तिथि मंगलवार श्री अयोध्या जी में यह चरित प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न –7 रामचरित मानस के प्रत्येक काण्ड में कितने दोहे हैं एवं पूरी रामचरित मानस में कितने दोहे हैं?

उत्तर –7 तुलसी दास जी द्वारा रचित रामचरित मानस के अनुसार जो गिनती दी हुई है उसी के अनुसार सातों काण्डों के दोहे की गिनती नीचे लिखी हुई है।

बाल काण्ड - ३६१ दोहे

अयोध्या काण्ड - ३२६ दोहे

अरण्य काण्ड - ४६ दोहे

किष्किन्धा काण्ड - ३० दोहे

सुन्दर काण्ड - ६० दोहे

लंका काण्ड - १२१ दोहे

उत्तर काण्ड - १३० दोहे

रामचरित मानस में १०७४ दोहे हैं।

प्रश्न - 8 शिव जी ने सबसे पहले किसको रामायण सुनाई ?

उत्तर -8 पार्वती जी को सुनाई थी।

प्रश्न - 9 शिव जी की पहली पत्नी का नाम क्या था।

उत्तर -9 शिव जी की पहली पत्नी का नाम सती था।

प्रश्न - 10 कागभुसंडी जी को किसने कथा सुनाई थी।

उत्तर- 10 शिव जी ने कागभुसंडी जी को कथा सुनाई थी।

प्रश्न - 11 कागभुसंडी जी ने किसको रामायण सुने थी ?

उत्तर- 11 कागभुसंडी जी ने पक्षी राज गरुड़ जी को रामायण सुनाई थी।

प्रश्न -12 मुनि याज्ञवल्क्य जी किसको रामायण सुनाई थी?

उत्तर - 12 मुनि भरद्वाज जी को रामायण सुनाई थी।

प्रश्न –13 भगवन राम का जन्म कब हुआ था?

उत्तर –13 भगवान राम का जन्म चैत्र के महीने में नवमी तिथि व शुक्ल पक्ष था और दोपहर का समय था।

प्रश्न –14 राम जी ने जन्म होते ही किस माता ने राम जी स्तुति की थी।

उत्तर –14 कौशल्या माता जी ने राम जी स्तुति की थी।

प्रश्न –15 तुलसीदास जी ने बालकाण्ड में सबसे पहले किस देवता वंदना की थी?

उत्तर - 15 तुलसी दास जी ने सबसे पहले सरस्वती जी फिर गणेश जी की वन्दना की है।

प्रश्न –16 तुलसी दास जी ने अयोध्या काण्ड में सबसे पहले किस देवता वंदना की थी ?

उत्तर – 16 तुलसी दास जी ने सबसे पहले शिव जी की वंदना की गई है।

प्रश्न –17 तुलसी दास जी ने अरण्य काण्ड में सबसे पहले किस देवता वंदना की थी?

उत्तर – 17 तुलसी दास जी ने सबसे पहले शिव जी की वंदना की थी।

प्रश्न – 18 अरण्य काण्ड में किस ऋषि ने सबसे पहले राम जी की स्तुति की थी?

उत्तर –18 अत्री मुनि जी ने भगवान राम जी की स्तुति की थी।

प्रश्न – 19 अत्री मुनि जी की पत्नी का नाम क्या था?

उत्तर –19 अत्री मुनि जी की पत्नी का नाम अनुसूया जी था।

प्रश्न –20 तुलसी दास जी द्वारा किष्किन्धा काण्ड में सबसे पहले किस देवता वंदना की गई है?

उत्तर- 20 तुलसी दास जी द्वारा प्रभु राम एवं लक्ष्मण जी की वंदना की गई है।

प्रश्न –21 तुलसी दास जी ने सुन्दर काण्ड में सबसे पहले किस देवता की वंदना की है?

उत्तर- 21 तुलसी दास जी ने प्रभु राम एवं लक्ष्मण जी की वंदना की है।

प्रश्न –22 तुलसी दास जी ने लंका काण्ड में सबसे पहले किस देवता वंदना की है?

उत्तर- 22 तुलसी दास जी ने लंका काण्ड में प्रभु राम एवं लक्ष्मण जी की वंदना की है।

प्रश्न – 23 तुलसी दास जी ने उत्तर काण्ड में सबसे पहले किस देवता की वंदना की है?

उत्तर- 23 तुलसी दास जी ने प्रभु राम एवं लक्ष्मण जी की वंदना की है।

प्रश्न -24 रामायण का नाम रामचरित मानस क्यों पड़ा?

उत्तर - 24 शिव जी ने राम जी की कथा को रच कर अपने मन में रखा और सुअवसर पाकर पार्वती जी को सुनाई थी इसीलिए रामायण का नाम राम चरित मानस पड़ा।

प्रश्न -25 रामायण में तुलसी दास जी ने सबसे पहले किसकी वंदना की है?

उत्तर -25 सबसे पहले सरस्वती जी फिर गणेश जी की वन्दना की है।

प्रश्न 26 – रामायण में सबसे पहले किसके विवाह का वर्णन है?

उत्तर -26 शिव जी के विवाह का वर्णन है।

प्रश्न 27– शिव जी पत्नी का क्या नाम था ,जिन्होंने श्री राम जी पर संदेह किया था ?

उत्तर -27 सती जी।

प्रश्न 28– दशरथ जी ने पुत्र प्राप्ति के लिए किस यज्ञ को किया और किस ऋषि ने किया?

उत्तर -28 दशरथ जी ने पुत्र कामेष्ठी यज्ञ ऋषि श्रृंगी जी से करवाया।

प्रश्न 29– राम जी की माता का क्या नाम था ?

उत्तर -29 कौशल्या

प्रश्न -30 सुमित्रा जी के पुत्रों का नाम क्या था?

उत्तर 30– लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

प्रश्न 31– भरत जी की माता का नाम क्या था ?

उत्तर 31– कैकेयी

प्रश्न 32 – राम ,लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को किसने विद्या सिखाई?

उत्तर -32 इन्हें मुनि वसिष्ठ जी ने विद्या सिखाई थी।

प्रश्न 33– किस महा ऋषि ने दशरथ जी से राम एवं लक्ष्मण जी को राक्षसों के संहार करने के उद्देश्य से माँगा?

उत्तर 33– महा ऋषि विश्वामित्र जी।

Special savings for Hindi USA members!

Members of Hindi USA receive a special 5% discount on auto insurance coverage with Plymouth Rock Assurance of NJ. In addition, our other discounts could save you up to 50% on your New Jersey car insurance.

To see how much members and employees can save with Plymouth Rock, call me today for your free auto quote.

Vijay Singhal
Prudential Financial Professional
(732) 790 0542 x 101
1506 Stelton Road, 2nd Floor
Piscataway, NJ 08854
vijay.singhal@prudential.com
www.prudential.com/us/vijay.singhal

Plymouth Rock assurance

Discount only applies to new and renewal policies originally written on or after 06/04/07 in High Point Property and Casualty Insurance Company. If the discount is not currently applied, it may be added upon request. May not be combined with any other group discounts. Other restrictions may apply. Offer available to New Jersey residents only. High Point Auto Insurance underwritten by High Point Property and Casualty Insurance Company, Prudential Insurance Agency, LLC (Prudential), Newark, NJ distributes auto and other property and casualty products that are offered by Plymouth Rock Management Company of New Jersey under the brand name of Plymouth Rock Assurance. These products are underwritten by High Point Property and Casualty Insurance Company (High Point). Prudential is not affiliated with Plymouth Rock or High Point.
0206487-00001-00

With Best Compliments

Alternative Abstract, LLC

A Full Service Title Insurance and Settlement/Closing agency for residential and commercial properties in NJ and PA.
Rated as one among the top 8 New Jersey title agencies of First American Title Insurance Company for its qualitative production and settlement, offers free quote and consultation on title issues.

Contact

Dev R Singh
3146 Route 27, Suite 203-204
Kendall Park, NJ 08824
www.altabstract.com
Ph 732-422-1100
Fax 732-422-1101

अनीता दाणी जी भारत में इंदौर की निवासी हैं| एक कुशल गृहिणी, माँ, एवं पत्नी होने के साथ-साथ ही लेखन एवं चिंतन का भी शौक रखती हैं| कर्मभूमि के पूर्व अंक में भी इनका एक लेख प्रकाशित हुआ था| अनीता जी की सोच का विषय विशिष्ट एवं कुछ लीक से हटकर है| प्रस्तुत लघु आलेख में इन्होने भारत के किसानों के समर्पण एवं इनकी दयनीय स्थिति का उल्लेख किया है, जो की एक शोचनीय विषय है। आशा है पाठक इस विषय में जागरूक होंगे|

भारतीय किसान

अनीता दाणी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे जीवन का मूल आधार किसान है। उनकी हमारे जीवन में अहम् भूमिका है। इसलिए किसानों को संसार का अन्नदाता कहा जाता है। किसान अपने परिश्रम, बलिदान, त्याग, सेवा के आदर्श द्वारा संसार पर उपकार करता है। किसान धरती माँ का उपासक होने के साथ-साथ ईश्वर के प्रति आस्थावान होता है। वह ईश्वर प्रदत प्रकृति को ईश्वर का वरदान मानकर सम्पूर्ण जीवन उस पर न्योछावर कर देता है।

हमारी भारतीय संस्कृति में कठिन परिश्रम का एक अनूठा उदाहरण भारतीय किसान है। वह सूर्योदय से सूर्यास्त तक कठिन परिश्रम करता है। खेतों की उर्वक क्षमता को बढ़ाकर बीज बोने से लेकर लहराती फसलों को देखने की चाह में वह रात दिन एक कर देता है। वैसे आजकल कई नए-नए आधुनिक उपकरणों ने किसानों का काम थोड़ा आसान कर दिया है। अच्छी फसल होने पर पैदावार का बाजारों में उचित दाम मिलने पर किसानों को कितनी ख़ुशी मिलती होगी, उसका अनुमान हम नहीं लगा सकते। "घोर अन्धकार आने वाली सुहानी भोर का सूचक है" इसी आशा के साथ वह जीता है। गाय,बैल आदि पशुओं की सेवा करके वह खेतों की उर्वक शक्ति का संतुलन बनाये रखता है। इतनी मेहनत करने के बाद भी उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। किसानों को अच्छी पैदावार के लिय उन्नत बीज, खाद, कुएँ खुदवाना, ट्रेक्टर, थ्रेषर आदि के लिए जमीदारों और साहूकारों से पैसा उधार लेना पड़ता है। कभी प्रकृति का योगदान किसान के साथ रहा तो उधार चुका पाते हैं। लेकिन अधिकांशत: वर्षा कम होने पर या किसी प्राकृतिक प्रकोप के कारण अच्छी फसल नहीं हो पाती जिससे वे उधार नहीं चुका पाते, और ब्याज पर ब्याज यानि चक्रवृद्धि ब्याज के तले फंसते जाते हैं। जिसका प्रभाव उनके पूरे परिवार पर पड़ता है। और उसका बुरा परिणाम परिवार को भुगतना पड़ता है। वह जमीदारों और साहूकारों के चुंगुल में फंस कर उनके शोषण का शिकार बन जाता है, और दम तोड़ देता है। मुंशी प्रेमचन्द्र ने अपने उपन्यास "गोदान" में किसानों की शोचनीय दशा का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। अधिकांशत: किसान अपने परिवारों को इस स्थिति से ऊपर लाने में असमर्थ और लाचार समझ कर आत्महत्या को ही एकमात्र इस शोषण से छुटकारा पाने का उपाय समझते हैं। हमारे देश में इस प्रकार बढ़ते शोषण और आत्महत्या के शिकार होते किसानों को आर्थिक सहयोग देकर उनके परिवारों की रक्षा के लिए कदम उठाना चाहिए, जिससे उनका और उनके परिवारों का जीवन सुखमय व्यतीत हो, क्योंकि हमारे देश में लगभग ६०%लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है। "काले मेघा काले मेघा पानी तो बरसाओ" ऐसी पंक्तियों में भी किसानों को प्रकृति का पुजारी, ईश्वर के प्रति आस्थावान और धरती माँ का उपासक बताया है। भारतीय किसान धन का गरीब होने पर भी मन का अमीर है। उसके सुख ही देश की सुख समृद्धि है। इसीलिए मुझे अपने भारत के किसान पर गर्व है।

हनुमान चालीसा चौपाई

स्वाभी रामकमल दास जी वेदांती

संकलन: अर्चना कुमार

लाय संजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाए॥११॥

भावार्थ - मेघनाद की शक्ति से जब लक्ष्मण मूर्छित हुए और सम्पूर्ण बानरी सेना ब्रह्मास्त्र द्वारा मर चुकी थी, उस समय रात्रि में विभीषण और हनुमान जी दोनों मिलकर ढूँढने लगे कि राम-लक्ष्मण कहाँ हैं। उन्होंने जामवंत जी को जमीन पर पड़े हुए देखा तब विभीषण जी ने पूछा कि "आप जीवित हैं?" जामवंत जी ने कहा, "मैं जीवित हूँ पर मुझे नजर कुछ नहीं आता और न ही मैं बैठ सकता हूँ।" फिर हनुमान जी की कुशल पूछी। तब विभीषण ने कहा - "आपने राम, लक्ष्मण, सुग्रीव को न पूछ कर हनुमान जी की कुशल क्यों पूछी?" जामवंत ने कहा - "अगर हनुमान जीवित है तो हमारी सम्पूर्ण सेना जीवित है। हनुमान जी ने उनकी चरण वंदना करी और कहा - "मैं हनुमान आपकी सेवा में हाजिर हूँ।" जामवन्त जी ने कहा - "वत्स! जाओ द्रोणगिरि से शीघ्र संजीवनी बूटी ले आओ।" हनुमान जी ने संजीवनी बूटी जो लंका से लाख योजन दूर थी, लाकर, सब बानर सेना को जीवित कर दिया। तब श्री रघुनाथ जी ने हनुमान जी को गले लगा कर कहा - "मैं मुक्ति-भुक्ति और भक्ति भी देता हूँ, किंतु हृदय किसी को नहीं देता, सो वह मैं तुम्हें देता हूँ।" ॥११॥

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२॥

अर्थ - तुलसीदास जी कहते हैं कि रघुनाथ जी ने उस समय मुक्त कंठ से हनुमान जी की प्रशंसा की कि भरत के समान ही तुम मुझे प्रिय हो। ॥१२॥

भावार्थ - शास्त्रों में आता है - "तस्य विघ्न करोह हम्" रामजी ने हनुमान जी से कहा कि जो व्यक्ति तुम्हारे से विमुख रहेगा वह चाहे मेरा परम भक्त ही क्यों न हो मैं उसके काम में विघ्न उत्पन्न करूँगा। अर्थात् तुम्हारी कृपा के बिना मैं प्राप्त नहीं हो सकता हूँ।

यहाँ तुलसीदास जी ने भरत के समान प्रिय कहा है -

"प्राज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसम्भवः"

ब्रह्मा के ओम् में जो 'म' है वह सम्पूर्ण (जो अपने को ज्ञानवान समझते हैं, ब्रह्मा से चींटी पर्यंत) ज्ञान के समुद्र की एक बूँद मात्र ही है॥

तुलसीदास जी ने कहा है - "सिक्ता ते त्रैलोक सुपासी" तुलसीदास जी ने तो हनुमान जी को पहले ही 'ज्ञान गुण सागर' कहा है। भरत जी भी ज्ञान के समुद्र हैं। इसलिए 'भरत सम' कहकर दोनों का समावेश कर दिया है। वेदांत में कहा है - 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' - बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं। इसलिए हनुमान जी ही ज्ञान के समुद्र हैं। इधर उपासना पर "ज्ञानमिच्छत् शंकरात्" अर्थात् ज्ञान के लिए शंकर जी की उपासना करो। हनुमान जी शंकर सुवन हैं ही - रुद्र अवतार हैं। ॥१२॥

जन्म तिथि व जन्म वर्ष ---05-12-1967, जन्म स्थान -जिला पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड); शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.; लेखन की विधाएँ- कविताएँ, लघुकथा, कहानी ,संस्मरण, हाइकु, ताँका, चोका आदि। सम्प्रति -कार्य -क्षेत्र -पी.जी.टी. हिन्दी, केन्द्रीय विद्यालय वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून। पता-कमलानिखुर्पा, हिन्दी -प्रवक्ता, केन्द्रीयविद्यालय फ़ॉरेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट, देहरादून

हिन्दी

कमला निखुर्पा

हिन्दी! ना बनना तुम केवल माथे की बिन्दी,
जब चाहा सजाया माथे पर,
जब चाहा उतारा फ़ेंक दिया।
हिन्दी! तुम बनना हाथों की कलम,
और जनना ऐसे मानस पुत्रों को,
जो कबीर बन फ़टकारे,
जाति धर्म की दीवारें तोड़ हमें उबारे।
जो सूर बन कान्हा की नटखट केलियां दिखलाए,
जीवन के मधुवन में मुरली की तान सुनाए।
जो मीरा बन हृदय की पीर बताए,
दीवानी हो कृष्ण की और कृष्णमय हो जाए।

हिन्दी! मत बनना तुम केवल माथे की बिन्दी,
जन-जन की पुकार बनना तुम ।
छा जाना तुम सरकारी कार्यालयों में भी,
सभाओं में, बैठकों में, गोष्ठियों में
वार्तालाप का माध्यम बनना तुम्।
हर पत्र-परिपत्र पर अपना प्यारा रूप दिखाना तुम्।

हिन्दी! छा जाना तुम मोबाइल के स्क्रीनों पर
रोमन के रंग में न रंगना
देवनागरी के संग ही आना।
केवल रोज डे या फ़्रेंडशिप डे पर ही नहीं
ईद, होली और बैशाखी पर भी,
शुभकामनाएं देना तुम,
भावों की सरिता बहाना तुम्।

हिन्दी! तुम बनना
देवनागरी में लिखती उंगलियां
अंतरजाल के अनगिनत पृष्ठ बनना तुम,
रुपहले पर्दे को अपना स्नेहिल स्पर्श देना तुम,
उदघोषिका के चेहरे की मुसकान में
संवाददाता के संवाद में
पत्रकार की पत्रकारिता में
छा जाना तुम
रुपहले पर्दे को छूकर सुनहरा बना देना तुम्।

हिन्दी! तुम कभी ना बनना केवल माथे की बिन्दी,
तुम बनना जन गण मन की आवाज,
पंख फ़ैलाना अपने
देना सपनों को परवाज।

गजलें

सूबे सिंह 'सुजान'

आजकल आस्था इतनी बीमार है
हर तरफ सिर्फ बाजार बाजार है
भावनायें अगर शुष्क हो जायेंगी,
आदमी का न फिर कोई उपचार है
आदमी आज मिलता है इस वेश में,
हाथ में फूल आँखों में तलवार है
एक बेघर को लोगों ने घर दे दिया,
लगता है ये पुराना समाचार है
ठण्ड भी हादसा गर्मी भी हादसा,
आजकल आदमी कितना लाचार है

हर सडक में जो खड्डा हुआ आजकल
ये तरक्की हुई हादसा आजकल
हर घडी सपनों में आता-जाता है जो,
वो मुझे लगता है फूल सा आजकल

मैं अगर बच्चा होता किसी गाँव का,
खूब बरसात में खेलता आजकल
प्यार को इस तरह वो जताने लगे,
हर कोई फोन पर खेलता आजकल
सबकी जेबों में अब फोन रहने लगे,
कोई चिट्ठी नहीं भेजता आजकल
बात सुनकर पुरानी नई सीख ले,
आदमी तेज है दौडता आजकल
टाँग पतली,धंसी आँखें,लम्बे हैं बाल,
कहने को रह गये बस युवा आजकल
मान लो बात मेरी पिता जी कभी,
सच को कोई नहीं पूछता आजकल
झूठ की हर परत को उतारो "सुजान"
सच तो कोई नहीं बोलता आजकल

कुरुक्षेत्र, हरियाणा

परवरिश.... संस्कार.... परिष्कार....
यही हमारी संस्कृति का आधार....

संपादक: यह एक ऐतिहासिक पुस्तक है, जो हिन्दुओं को अंग्रेजों द्वारा दी गई मानसिक दासता से मुक्ति देगी। इसका पढ़ना उतना ही आवश्यक है, जितना रामायण या भगवत गीता का। राहुल उपाध्याय द्वारा अंग्रेजी में की गई समीक्षा का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत है।

यह पुस्तक उन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के युग की भारतीय राजनीति और समाज के छात्र हैं। यह पश्चिम के लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से अमेरिकियों के लिए, जो भारतीय राजनीति के संरक्षण में उसे और मजबूत बनाने के पक्ष में रुचि रखते हो। यदि पश्चिमी राजधानियों (जिनमें वाशिंग्टन डी-सी भी शामिल है) में नीति निर्माता, भारत को संगठित और सशक्त रूप में चीन के खिलाफ़ उभारने के लिए काम कर रहे हैं, तो उन्हें यह पुस्तक ध्यान से पढ़नी चाहिए, जिसमें प्रचुर मात्रा में अकाट्य सबूत दिये गए हैं कि कैसे उनके अपने नागरिकों का एक वर्ग विपरीत उद्देश्यों के लिए - यानि भारत को तोड़ने के लिए - कार्यरत है। अंग्रेज़ों ने एक अरसे तक भारतीय उप महाद्वीप पर फूट डाल कर शासन किया। मल्होत्रा जी के शोध कार्य के अनुसार, अमरीकी ईसाई धर्मप्रचारकों के ईरादे अंग्रेज़ो से कम नापाक नहीं है - जो कि कुछ समय से भारत को तोड़ने में लगे हुए हैं - झूठ और अपार धन का सहारा ले कर जनता को फ़ुसला रहे हैं, बहका रहे हैं, और धर्म परिवर्तित कर रहे हैं।

हर समाज में कमजोरियाँ होती हैं, चाहे वह ईसाई, इस्लामी, हिंदू या बौद्ध समाज हो। अंग्रेज़ सरकार अपनी एक सदी के शासन के दौरान, अपना सारा दम लगाने के बावजूद 2 प्रतिशत से अधिक हिंदूओं का धर्मपरिवर्तन करने में असफल रही। पिछले दो दशक से, अमरीकी धर्मप्रचारकों की निगाहें दो क्षेत्रों पर है - द्रविड़ और दलित - जहाँ वे ज्यादातर कृत्रिम तथ्यों के सहारे यह दिखा रहे हैं कि कैसे उत्तरी आर्यों ने द्रविड़ों को और उच्च जाति के ब्राह्मणों ने दलितों को - जिन्हें पहले अछूत कहा जाता था, और गाँधी जी ने जिन्हें हरिजन (भगवान की संतान) कहा, और जिनके लिए भारत के संविधान में खास प्रावधान बनाया गया ताकि उन्हें शिक्षा, सिविल सर्विस, विधानसभा और लोकसभा में में अवसर मिल सके - नुकसान पहुँचाया है। यह प्रावधान शुरू में दस साल के लिए बनाया गया था, लेकिन तब से अब तक चला आ रहा है और भारतीय राजनीति का एक आवश्यक हिस्सा बन चुका है जिसे कोई भी दल या राजनेता चुनौती नहीं दे सकता है। अंग्रेज़ों ने आर्यों के हमले की कहानी गढ़ी थी, कि कैसे उन्होंने घोड़े, लोहा और संस्कृत भाषा के सहारे उपमहाद्वीप पर अपनी धाक जमा ली थी, और अधिकांश रूप से काली चमड़ी वाले द्रविड़ों को दक्षिण - मुख्य रूप से तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश - की और खदेड़ कर सैन्य, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीत हासिल कर ली थी।

इन धर्मप्रचारकों ने अब इस मृत कथा को अपना लिया है, और तीन या चार हज़ार साल से द्रविडों के उपर आर्यों का प्रभुत्व बता रहे हैं। ऐसा लगता है कि इन धर्मप्रचारकों ने धर्मपरिवर्तन की लालसा में सच को त्याग ही दिया है।

मल्होत्रा जी धर्मप्रचारकों और माओवादियों के बीच की साँठ-गाँठ को उजागर करते हैं कि कैसे अल्पकालिक लाभ के लिए लाखों द्रविडों, दलितों और आदिवासियों को ईसाई बनाया जा रहा है।

पिछले कुछ महीनों से, जब से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है, शिक्षक, समाज सेवक और राजनीतिज्ञ और कई बुद्धिजीवी और उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीय-अमरीकी व्यक्तियों ने इस बात पर गौर देना शुरू कर दिया है कि कैसे बाहरी धार्मिक संगठन भारत को तोड़ने में एकजुट हो रहे हैं। वे देख रहे हैं कि 1990 के दशक से U.S. International Commission for Religious Freedom की मार्फ़त अमरीकी धर्म संगठन भारतीय सरकार पर दबाव डाल रहे हैं कि वह उन लोगों के खिलाफ़ कार्यवाही करें, जो कि धर्मपरिवर्तन में बाधा बन रहे हैं। इस कमीशन की वार्षिक रिपोर्टों में द्रविड़ और दलितों के कथित उत्पीड़कों के खिलाफ़ अपर्याप्त कार्यवाही करने के लिए भारत की केन्द्रिय एवं राज्य सरकारों की काफ़ी आलोचना की गई है। इन कथित कारनामों की सामग्री भारत में धर्मप्रचारकों और उनके सहायकों द्वारा एकत्रित की जाती है, और फिर उन्हें अमरीका के राष्ट्रपति और कांग्रेस के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। इससे भारत को और भारत के प्रति अमरीका की विदेश नीति को गहरा नुकसान पहुँचता है। इन सबको देखते हुए, यह पुस्तक सामयिक है, और इसे व्यापक रूप से भारत और अमरीका के विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं द्वारा पढ़ा जाना चाहिए।

आम तौर पर हिंदुओं को सहनशील लोग समझा जाता है, जो यह मानते हैं कि सब धर्मों के भगवान को पाने के तरीके सही हैं। जैसे-जैसे ईसाई धर्मप्रचारकों की धर्मपरिवर्तन की गतिविधिया बढ़ती जा रही हैं, वैसे-वैसे उन हिंदुओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है जो इनका विरोध करते हैं। फिर भी मल्होत्रा जी की यह पुस्तक धार्मिक और सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं की आँखें खोल देंगी, जिन्हें हर उन बातों से चिंता होती है जिनका उद्देश्य देश को विभाजित करना हो।

अपनी भाषा का महत्त्व– गीता टंडन

आकाश की दादी माँ छत से गिर गईं, उनके हाथ एवं पैरों की हड्डियाँ टूट गई थीं| अस्तपताल के बिस्तर पर वह अपने बेटे व उसके परिवार का अमेरिका से आने का इंतज़ार कर रही थीं| आकाश के माता-पिता उसे लेकर हवाई जहाज़ से भारत पहुंचे| नन्हा आकाश अपनी भाषा हिंदी नहीं बोलना जानता था, परन्तु उसे अपनी प्यारी दादी माँ के साथ रहना बहुत अच्छा लगता था| इसलिए दादी माँ का दुलारा अपना अधिक से अधिक समय अपनी प्यार करने वाली दादी माँ के साथ ही व्यतीत करना चाहता था| अतः उसके माता-पिता उसे दादी माँ के पास छोड़ कर फल एवं दवाइयां लेने बाज़ार चले गए।

अचानक दादी की तबीयत बिगड़ने लगी, और उन्होंने आकाश से कहा "जाओ बेटा डॉक्टर या नर्स को बुलाकर ले आओ" पर नन्हा आकाश अपनी भाषा को समझ पाने के कारण वहीँ बैठा रहा| और थोड़ी ही देर में उसकी दादी माँ ने दम तोड़ दिया| जब उसकी समझ में आया तो वह बहुत जोर जोर से चिल्लाया "दादी माँ दादी माँ ..."सब लोग उसकी चीख सुनकर वहां पहुंचे पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी| उसकी दादी माँ उसे छोड़ कर जा चुकी थीं| उसे अपनी भाषा न जानने का बहुत दुःख हुआ| परन्तु अब उसने भाषा का महत्त्व भी अच्छी तरह से जान लिया था कि वह अपनी दादी के प्राणों की रक्षा कर सकता था| अतःउसने उसी दिन अपनी मातृ भाषा को सीखने का प्रण ले लिया|

पुनीता वोहरा साऊथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-2 स्तर की शिक्षिका हैं। आप पिछले चार वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हैं। आपको संगीत एवं चित्रकारी में विशेष रुचि है। आप हिंदी की कविताओं को गाने और लिखने में भी रुचि रखती हैं।

कर्मभूमि है छपने को तैयार, मन में आए बार-बार ये विचार।

लिखूँ कविता या फिर कहानी, या फिर करुँ कोई व्यंग्य तैयार।

मन में घूमे इस तरह का सवाल, कैसी होगी मेरे लेख की चाल।

फिर सोचा लूँ किसी की मदद, या करुँ खुद अपना काम।

ऐसे सोचते-सोचते हो गई सुबह से शाम।

इन्हीं टूटे-फूटे शब्दों की एक मेल बनाई, देखते ही देखते यह कविता अपने सामने पाई।

अमूल्य बातें:

1. सबसे बड़ा धन - संतोष
2. सबसे उत्तम दिन - आज
3. सबसे उपयुक्त समय - अभी
4. सबसे अच्छी भावना - नम्रता
5. सबसे बड़ी आवश्यकता - सामन्य ज्ञान
6. सबसे बड़ी भूल - समय की बर्बादी
7. सबसे बड़ा शिक्षक - सीखने की प्रेरणा
8. सबसे अच्छा मित्र - अपने हाथ-पाँव

श्रीमति शमा अरोड़ा जी भारत में हरियाणा राज्य के गुड़गाँव शहर में रहती है। आपको बचपन से ही धार्मिक और भारतीय संस्कृति से जुड़ी पुस्तकें पढ़ने में विशेष रुचि है। आप बैंक की रिटायर्ड कर्मचारी रह चुकी हैं, और खाली समय में हिंदी के लेख और कविताएँ लिखने में विशेष रुचि रखती हैं।

बच्चों को देना हिंदी का ज्ञान, यह काम न था कोई इतना आसान।
मन में आया एक विचार, क्यूँ न करें यू.एस.ए. में हिंदी का प्रचार।
कुछ लोगों ने यह बीड़ा उठाया, बीड़ा उठाकर उसे पूरा कर दिखाया।
शिक्षक बच्चों को ये भी बताते, कैसे भारत में त्यौहार हैं मनाते।
कैसे मनाई जाती है होली दिवाली, करते हैं लक्ष्मी की पूजा रहे न जेबें खाली।
होली के दिन इक दूजे को रंग लगाते, शिकवे, गिले भूलकर सभी गले मिल जाते।
बच्चों के मुख से सुन हिंदी, नानी-दादी भी खुश हो जाती।
कभी परियों की कहानी तो कभी लोरी सुनाती।
बच्चो करती हूँ तुमसे आशा, कभी मत भूलना हिंदी है अपनी भाषा।
देश की हमेशा बनना तुम शान, अगर देश पर आए मुश्किल तो दे देना जान।

न्यू ब्रंस्विक्क पुस्कालय द्वारा आयोजित होली कार्यक्रम में हिंदी यू.एस. ए के इस्ट ब्रंस्विक्क के मध्यमा २ के क्षात्रों ने भाग लिया, और उस्त्साह-पूर्वक एक नृत्य एवं गान प्रस्तुत किया|

उनके इस कार्य की सरहाना के लिए न्यू ब्रंस्विक्क पुस्कालय ने बच्चों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया, और आगामी भविष्य में इसी प्रकार और अधिक प्रस्तुतियों के लिए प्रेरित किया|

New Brunswick Free Public Library
60 Livingston Avenue
New Brunswick NJ 08901-2597
732-745-5108 Fax 732-846-0226
nbfpl@lmxac.org

April 5th, 2012

To,
Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

Dear Mrs. Tandon,

On behalf of the New Brunswick Free Public Library, I would like to take this opportunity to express our sincerest appreciation for your generous contribution of time and knowledge to make Holi festival a success. Members of our library are deeply grateful for your support and generosity. Despite being busy with your hectic schedule you spent lot of time and energy in planning and preparation for this event.

It is through the support of individuals like yourselves that we are able to continually strengthen the quality of the library's programming, and to develop new and innovative projects to serve our community.

Again, thank you for making Indian Holi Festival a success. We received rave reviews from the audience. Everyone enjoyed your Music and Dance performances. Your wit and charm captivated the audience. We look forward to working with you again in the future.

Sincerely,

Kavita Pandey
Librarian
New Brunswick Free Public Library

शानू सिन्हा सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में शिकागो में काम करती हैं, और इन्हें हिन्दी लेखन में बहुत रुचि है। इन्होंने 10 वर्ष पहले हिन्दी में कविताएँ लिखना प्रारंभ किया था। इनकी कविताएँ रोजमर्रा के विषयों पर, देशभक्ति पर, एवं प्रेम-प्रसंगों के संदर्भ पर होती हैं। भारत में इनकी कविताएँ रेडियो पर भी प्रसारित की गईं और सुनने वालों द्वारा सराही गईं। ये अपने मित्रों के जन्मदिन और विवाह के अवसरों पर भी कविताएँ सुनाती हैं।

शहर

शहर की भाग-दौड की जिंदगी में

हम यूं खोते जा रहे हैं

कि अपने साये से भी अन्जान हो रहे हैं हम

इन् शोर-शराबों के बीच

सड़क पे लोगों के भरमारों के बीच

ऊँचे मकानो के बीच, कहीं खोते जा रहे हैं हम

भीड में खुद को ढूंढे जा रहे हैं हम

कोई पहचानता नही किसी को यहाँ

घर से चले थे जब शहर की ओर

अहसास ये की साथ् में चले कोई

यूं तो मिले बहुत साथ् चलने वाले

फिर भी अलग-थलग रहने वाले

रह गए तलाशते हम अनेको में एक

इस भागते शहर में

सबकी है दौड़ बराबर

अब तो सोच में भी शोर है बहुत

हरसू हर जोर है बहुत

चैन की ज़िन्दगी बड़ी बेचैन हो गयी है

शान्ति इधर सब भंग हो गयी है

शहर का ढूंढ मारा कोना-कोना

नामुमकिन दिखता है इधर चैन का होना

कभी सुबह भी सुबह सी लगे एक दिन

शाम की तरह शहर भी ढले एक दिन

मेरी तरह शहर भी थके कभी

पल दो पल ही सही शहर भी सोये कभी

सोचती हूँ ये शोर-शराबा रुके कभी

चैन थोड़ी सी तो मिले कभी.

मैं सोचूं ये

इस बार बारिश बहुत ज्यादा हुई

पिछले साल जो सुखा था

सभी पानी को तरसे थे

मन्नतें जितनी हुयीं, खुदा की मेहरबानी भी उतनी

की इस साल पानी ही पानी नज़र आता है हर तरफ

पानी ने दोनों ही दफा मार डाला मेरी फसलों को

मेरे घर से खेतों तक का सफ़र

जो आरियों से बंधा था कल तक

आज उसमें नावें चल रही हैं

समंदर में लहरें इस कदर उठ रही हैं

मैं सोचूं ये गर तूफान बढ़ा

तो मेरा गाँव कट बह निकलेगा

एक आशियाँ जो खड़ा किया था

कहाँ तूफ़ान के थपेड़े सहेगा

रेत के संग सागर में दूर कहीं खो जाएगा

ये छत जो सर पे ओढा है

कल समंदर की गोद में समां जाएगा

कल्पना मात्र ही काफी है

एक ख्याल रूह को तड़पाने को.

बस आँख मूँद मैं सोचूं ये

ख्वाब ही था ये शायद, एक खौफनाक सा ख़याल

जो अभी अभी मैंने देखा था

झरोखों से बाहर देखा तो

थोड़ी आस की किरन बंधी

बादल खुल से रहे हैं

और सूरज भी बादलों को चीरता हुआ धरती तक आ पंहुचा है

ये बारिश थम सा रहा है,

पानी भी अब धीरे से सिमटता जा रहा है

उम्मीदों का काफिला फिर से चला है

फिर उसी बुलंदी को

जहाँ बसता है एक सुन्दर जहां

नहीं डरते

ये तेज हवायें हमें ना डराएँ

हम आँधियों से नहीं डरते

शोलों पे चलने वाले

चिंगारियों से नहीं डरते

ये काली रातें हमें ना डराएँ

हम भूतों से नहीं डरते

रास्ते खुद बनाने वाले

काटों से नहीं डरते

ये बारिशें हमें ना भिगायें

हम झोकों से नहीं डरते

पहारों पे बसने वाले

घाटियों से नहीं डरते

ये तेज रौशनी हमें ना झुलायें

हम तीरों से नहीं डरते

लहरों को चीरने वाले

तुफानो से नहीं डरते

वहाँ मेरा बचपन बसता है

इन गलियों-चौराहों से जो राह निकलती है,

वहाँ मेरा बचपन बसता है.

वो नदी जो मुड़ते हुए गुज़रती है

पानी कितना शांत और ठहरा हुआ है

ये आज भी यूँ ही फैला हुआ है

दोस्तों के संग दौड़ते-भागते

यहाँ हमने तैरना सीखा था

ये खेतों की मिटटी की सोंधी सी खुशबू

और लहलाहते फसलों के बीच,

कोयल की गूंज रही कूक,

वो पुराना नीम का पेड़,

जो बलखा के अब भी रहा झूम

यहाँ हमने गाना सीखा था

उस मोड़ पे जो चबूतरा नज़र आता है

थोडा टूटा-फूटा और बिखरा नज़र आता है

यहाँ हमारी बैठकी लगती थी

और फूटते थे हँसी के फव्वारे

यहाँ हमने जीना सीखा था

अनगिनत यादें है बिखरी हुयी यहाँ

जो आज भी तरो-ताज़ा है

ठीक उस खिलें हुए गुलाब की तरह

मेरे साँसों को महका जाता है

यादों के फूल खिलते हैं जहाँ

वहाँ मेरा बचपन बसता है

दिलों से दिल मिलते है जहाँ

वहाँ मेरा बचपन बसता है.

लोगों की बातें, बैंड बाजे का संगीत, और खुशियों का वातावरण, सब मौजूद था उस शादी में। ये मेरे मामा की शादी थी। उस शादी पर अच्छा भोजन, खूबसूरत सजावट और बहुत सारी मस्ती थी। मैं और मेरे परिवार ने शादी में बहुत मजा किया। हम खूब नाचे, गाये, खाए और पिए। खाने में पानीपूरी, चाट नूडल और बहुत प्रकार के चाट थे। फिर पनीर, गोभी, आलू और कई सब्जी भी थी। आइसक्रीम, गुलाब जामुन, लड्डू, रसमलाई और रसगुल्ला भी था। इस शादी में मैं अपने बहुत सारे रिश्तेदारों से भी मिली। मुझे सब से मिल कर बहुत अच्छा लगा। ये हमारी संस्कृति का बहुत अनूठा अनुभव था।

अपूर्वा, पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला

जन्म: अक्टूबर 16, 1946; शिक्षा: एम.ए. (अंग्रेजी) सागर विश्वविद्यालय; **प्रकाशित कृतियाँ**: सौंदर्यलहरी काव्यानुवाद -वर्ष 1990, दी गीता फार आल -1994, सबके लिए गीता-1996, उत्तर पथ 1998, मैत्रेयी 1999, वेद की कविता (वैदिक सूक्तों का काव्यान्तर) 2001, दी होली वेदाज फार आल-2003, मध्यप्रदेश स्वायत्त सहकारिता अधिनियम 1999 की गवेषणात्मक समीक्षा 2003 (अंग्रेजी और हिन्दी); **सम्मान:** मध्य प्रदश संस्कृत अकादमी द्वारा व्यास पुरस्कार 1997, मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा पुष्कर सम्मान 2004, भारत एक्सीलेन्सी एवार्ड, नईदिल्ली 2006, महाकवि केशव सम्मान, टीकमगढ़ 2009, प्रणाम-हिन्दी भवन, भोपाल 2011

तीन वैदिक कवितायें

प्रभु मिश्रा

कस्मै देवाय हविषा विधेम

वेद ही है कविता
क्योंकि कविता है वेद
अपरिमित, अप्रमेय
अक्षय-कोष ज्ञान का
प्रशान्त और निर्वेद

साक्षात्कार के क्षणों में
जब गृत्समद, विश्वामित्र
या आंगिरस वशिष्ठ
अर्यमा, मित्र, अग्नि, इन्द्र अथवा अदिति
का करते है आवाहन
वे उनके बाहर नहीं होते
देवता का ऋषि द्वारा सम्मोहन
छान्दस कविता का बन्धन नहीं है केवल
वार्णिक, त्रिष्टुप, अनुष्टुप अथवा वृहती में
देव-काव्य का यह दृश्य विधान
कभी क्षीण नहीं हो सकता
मरता नहीं है यह कभी
कविता का यह प्रथम स्वर
अनादि है और अनन्त
इसने देखा था पहले-पहल
सत्-असत् के परे स्थित
श्रेष्ठतम
-तब नहीं था असत् अथवा सत्
नहीं था रजस भू पाताल
नहीं था कुछ भी परे इस व्योम के
तमस अथवा ज्योति
निविड़तम निर्वात से अस्तित्व में-
तभी कवि ने कहा था

न ममार न जीर्यते

कविता में खोजते हैं हम अक्सर
उत्तर उन प्रश्नों के
जो रहते हैं प्रायः अनुत्तरित
जीवन में सदा ही

यह बात और है
कि हल जो हम खोजते हैं
जीवन भर अनेक माध्यमों से
यंत्र, इन्द्रिय और अतीन्द्रिय भी
प्रश्न के उत्तर में
प्रश्न ही आ खडा होता है
हमारे सामने
और हम विकल्पों की
और मुड़ जाते है
एक बार फिर हर बार की तरह

कविता शायद है
इन्द्रिय और अतीन्द्रिय
की एक सीमा-रेखा
किसी भी यंत्र और यांत्रिकीकरण
से बहुत आगे
इसलिये इसमें
ठहरे रहते हैं कुछ लोग
बाउम्मीद कि
आज नहीं तो कल
उत्तर आयेगा जरूर

जरूरी नहीं कि
एक ही कविता
दे देती हो पूरा उत्तर
और कभी कभी
तो पूरी श्रंखला ही पाती है
अपने आपको असमर्थ

कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः

जीवन में कभी
यदि साधना तप और ध्यान
से नहीं मिली मुक्ति
तो क्या कविता से मिल सकती है!
क्या कविता है मुक्ति का
अंतिम उपाय
समाधि जैसा
निर्बीज!
सीधी सपाट सडक
अथवा तरतीब से रखे
उपहारों से अलहदा
किसी अनाम दिशा में
निकल पड़ना
बिना यह तय किये
कि पहुंचना कहं है
बावजूद इसके
साकार और निराकार
की परिभाषा लांघ
सत्- चित् और आनन्द
को छोड़
रहस्य को रहस्य
और पहेली को पहेली कहना
और किसकी खूबी हो सकती है!

प्रार्थना में जिसकी भर्राती नहीं है
आवाज
और जिसका क्रन्दन
बादल बन कर फूटता नहीं
जिसका उल्लास
हो सकता है लोगों का निपट हास
पर जिसकी बिछाई चादर
में सिमटे सात आसमान
मानवीय अनुसंधान की कतारें
-एक परमाध्यक्ष वह जो व्योम में
स्थित
जानता होगा हमारा छोर
किंवा अंगवेद
किन्तु उसने भी नहीं जाना
-यदि सो न वेद-
यह सम्प्रश्न सा अन्तिम
नहीं उत्तर
परम संधान था

द्विपद, चौपाए सभी जो दृष्टि वाले
प्राणियों का एक वह ईश्वर
भूमि व द्युलोक को धारण किए
आत्मदा, बलदा, अमृत व मृत्यु
आदि में गर्भस्थ
स्वfर्णम-शून्य
सदा सम्पूज्य
प्रश्निम प्रश्न आहुति योग्य है
वह देव
हविष पहले पहल कवि ने दिया
जिसको
सम्प्रश्न की संज्ञा
कस्मै देवाय हविषा विधेम!
पर आप कविता
तब भी नहीं छोड़ते
आपका तब भी नहीं होता है
मोह भंग
अपनी इस विधा से
क्यांकि शून्य नहीं होती
इसकी संभावनायें
समाप्त नहीं होती
रह रहकर उठ रही अभ्यर्थनायें

कविता यह भी बताती है
शायद
कि उत्तर के पीछे पड़े ही क्यो हो
आखिर
और यह भी कि
उत्तर तुम पहचान ही लोगे
मिलने पर
इसकी कहां गारंटी है!

यश मिर्ग (उम्र ९ साल)	यश मिर्ग टाउन सेण्टर स्कूल में तीसरी कक्षा के विद्यार्थी हैं, और वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल में प्रथमा २ में पढ़ते हैं।

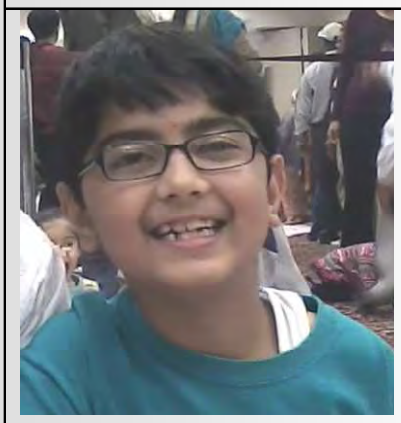

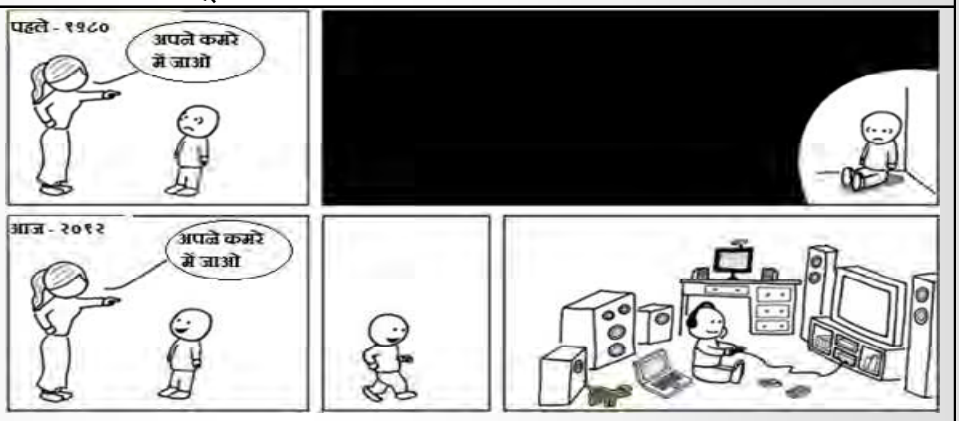

शब्द पहेली

नीचे बनी शब्द पहेली को नीचे दिए गए संकेतों की सहायता से पूर्ण कीजिए। ध्यान रहे शब्द केवल अमात्रिक हों अर्थात् बिना मात्रा के शब्द।

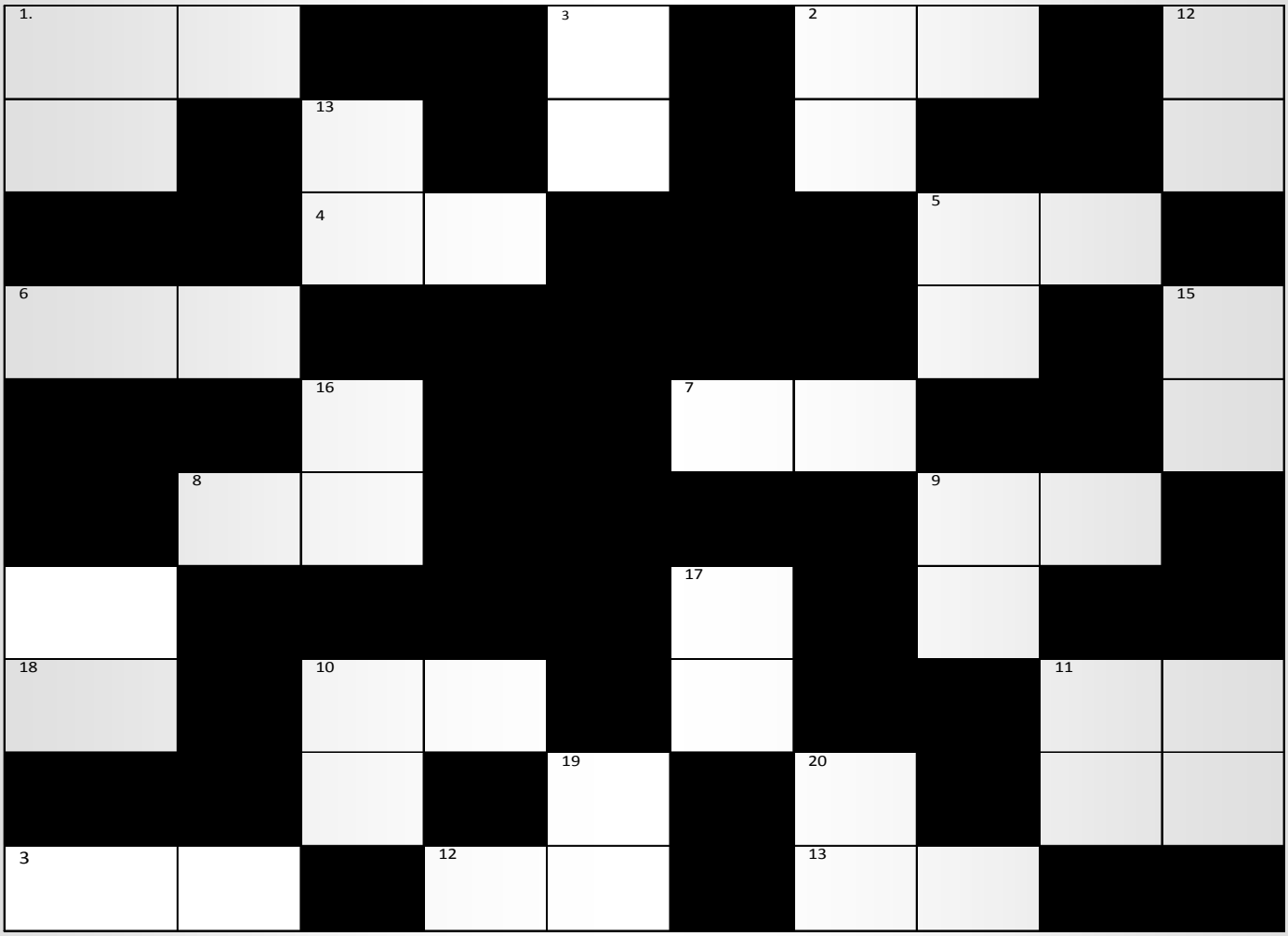

बाएँ से दाएँ :

1.You

2. Faucet

3. Fear

4. Engrave

5. Mango

6. Ten

7. Particle

ऊपर से नीचे :

8. Tomorrow

9. Water

10. Number

11. All

12. That

13. Cheater

1. Eight

2. New

3. Juice

5. Come

9. Jug

10. Part

11. Truth

12. Body

13. Gem

15. Fire

16. Strength

17. Letter

18. Roof

19. This

20. Lip

शब्द पहेली

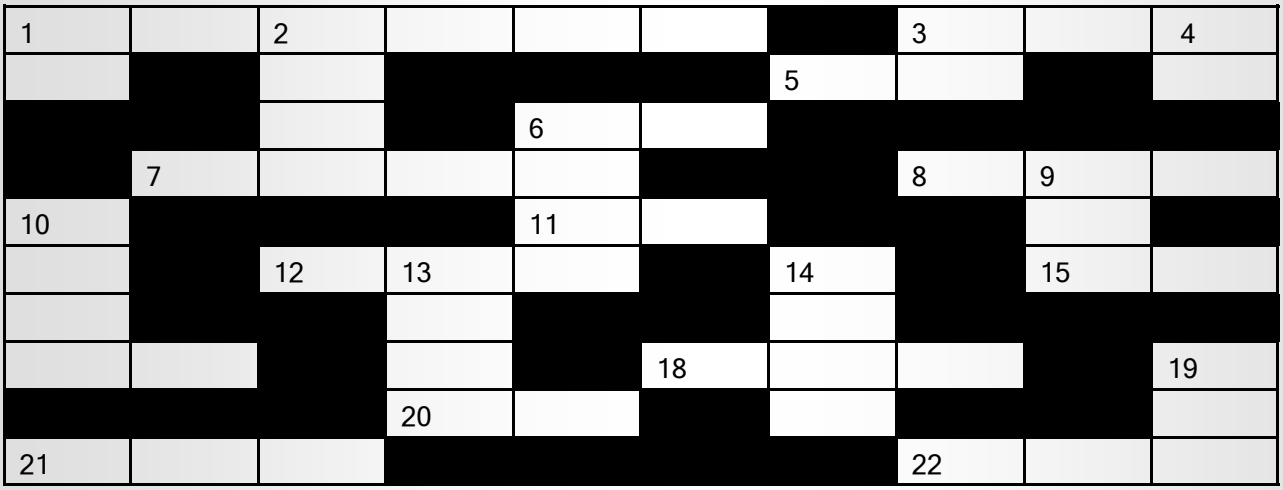

ऊपर से नीचे

1. एक स्थान जहाँ पुस्तकें रखी जाती हैं।
3. यह शब्द लड़की के लिए प्रयोग होता है।
5. केला, आम इत्यादि क्या हैं?
6. शरीर का अंग जो सूँघने का काम करता है।
7. इससे मेज को ढका जाता है।
8. एक ऋतु का नाम।
11. जल का दूसरा नाम।
12. जमीन जहाँ हम रहते हैं।
15. जो प्रजा की देखभाल करता है।
16. एक रंग
18. हमारे शरीर का अंग जो सोचने का काम करता है।
20. जो यात्रा करते हैं।
21. जो न्यायालय में हमारी ओर से लड़ता है।
22. जिससे हम गीले तन को पोछते हैं।

बाएँ से दाएँ

2. एक बड़ा फल जो अंडाकार/गोल होता है।
3. जिसमें हम कंघा करते हैं।
4. एक रंग
6. फल जो तिकोने आकार व हरे रंग का होता है।
9. नारंगी रंग का गोल-गोल फल।
10. स्थान जहाँ हम पढ़ने जाते हैं।
13. जो हमारे लिए होटल में खाना पकाता है।
14. वह जगह जहाँ बादल उड़ते हैं।
19. एक खिलौना जिसके साथ लड़कियाँ खेलती हैं।
1. जिसके ऊपर चलकर हम नदी पार करते हैं।

श्रेया केम्भवी, कनिष्ठ 2, ईस्ट ब्रुंस्विक

उम्र: 9 वर्ष, तीसरी कक्षा की छात्रा

New Jersey Family's Favorite Kids' Docs™ 2009-2011

BOSONAC Orthodontics

Our orthodontic care is tailored to your unique needs using the most advanced techniques available. We provide each individual with personalized professional attention in a fun and comfortable atmosphere.

- Both doctors trained at Columbia University in NYC
- Top Invisalign® providers • Easy payment plan • Most insurances

FREE: 2 x-rays, study models, digital pictures, exam & consult a $400 value with ad

979 Raritan Road, Clark **732-388-4144** • 515 Brick Blvd., Brick **732-920-0888**
bosonacortho.com

Dr. Stephen Bosonac
NJ Specialty License #2680
Dr. Brian Bosonac
NJ Specialty License #5372

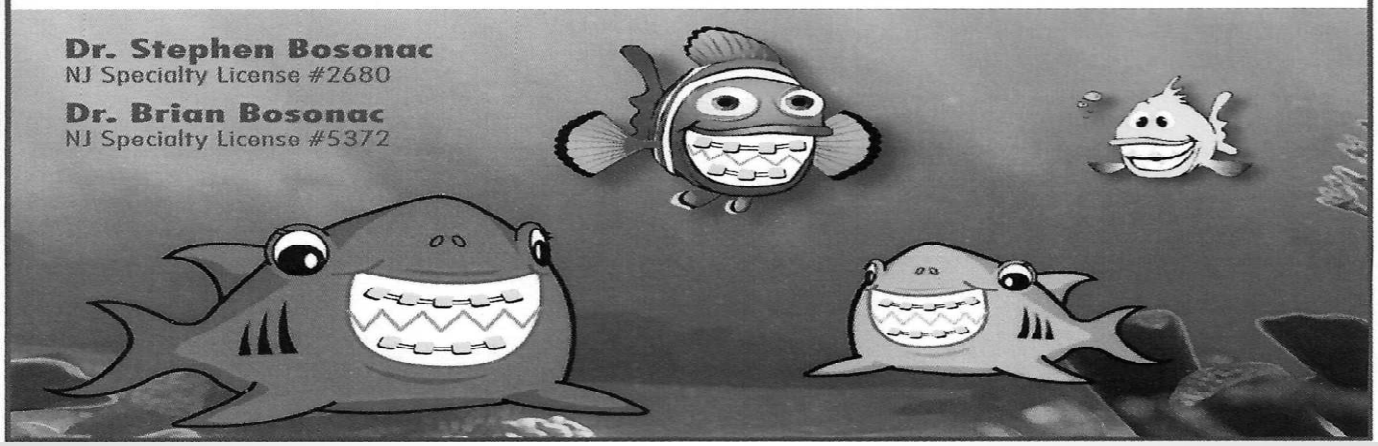

1075 Easton Avenue,

Somerset, New Jersey 08873

Tel: 732 220-0051

Fax: 732 220-0535

For Directions and more information: www.poojacuisine.com

BUFFET: Special 16 course Lunch Buffet 7 days a week. Weekdays lunch buffet $8.95 only!

CATERING: Exclusive economical catering packages available for all occasions. Contact us to know about our various catering packages we offer!

Pooja Cuisine enjoys a great reputation among all ethnic foods in the world. It has an uncanny charm, and those who try it find it rich in taste and flavor.

A common ingredient in the Indian food is a wide range of spices. The secret of Pooja cuisine is in proper use of selected spices to bring out rich flavor, aroma and character in food. By proper use of different techniques such as roasting or frying the spices whole, or grinding them to make a paste, it is possible to draw different flavors from the same spice. The popular belief that the Indian food is generally hot is not current. By correct use of spices and ingredients, the food can be prepared to suit one's taste.

DISCOUNT COUPON: 15 % off on Dine in or Take out. Please bring this coupon at our restaurant. Not valid at Hindi Mahotsav concession stand.

Not valid on Buffet. **Coupon expires 12-31-2012.** . Only one coupon on one table. This offer cannot be combined with any other offers.

Best Regards:

Pawan Kumar: Pooja Cuisine, Somerset, NJ

ग्यारहवें हिंदी महोत्सव की सफलता के लिए पूजा भोजनालय की ओर से हार्दिक शुभकामनायें |

मेरा नाम रुचित पालरेचा है| मैं ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला की मध्यमा २ कक्षा में पढ़ता हूँ| मैं ओल्ड ब्रिज सौल्क मिडल स्कूल की छटी कक्षा में हूँ| मैं वहाँ टैलेंटेड किड्स के साथ-साथ ओरिगामी क्लब और एकेडेमिक कविज़ चैलेंज टीम का हिस्सा हूँ| मुझे बहुत जल्द ब्लैक बेल्ट भी मिलनेवाला है| मुझे एनिमेटेड चित्र बनाने का बड़ा शौक है| मुझे चित्र बनाने में रूचि है, इसलिए मैंने बापू से प्रेरित हो कर उनके बारे में लिखने और चित्र बनाने की सोचा|

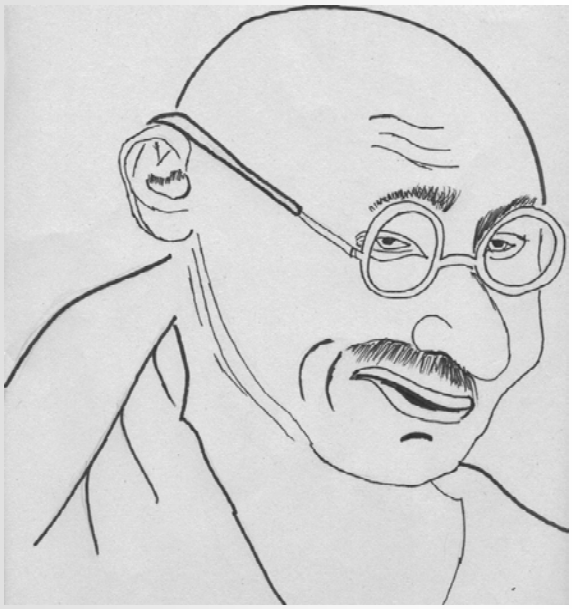

बापू भारत देश के राष्ट्र पिता माने जाते हैं| वे अहिंसा और शांति में विश्वास करते थे| उन्होंने सारे देश को सत्य और अंहिंसा के मार्ग पर चलने की राह बताई, और अंग्रेजों से भारत को आज़ादी दिलाई| उन्होंने दांढी मार्च जैसे पदयात्रा और कई सत्याग्रह कर के भारत देश को अंग्रेजो से मुक्ति दिलाई|

पर मुझे बड़ा दुःख है की उनको नोबल पुरस्कार के साथ सम्मानित नहीं किया जा सका| मैं आशा करता हूँ कि आप सभी को मेरा चित्र एवं कहानी पसंद आयेगी|

धन्यवाद्
रुचित पालरेचा|

निखिल सिंह

उम्र: 6 वर्ष, ईस्ट ब्रुंस्विक हिन्दी पाठशाला में कनिष्ठ स्तर के विद्यार्थी हैं। अच्छे विद्यार्थी होने के साथ-साथ चित्रकारी, प्रतियोगिताओं में भाग लेने, पढ़ने, एवं फुटबॉल खेलने में रुचि है।

परिचय: मोक्षा 13 वर्ष की हैं। आठवीं कक्षा में पढ़ती हैं। मोक्षा को संगीत में रुचि है, व हिंदी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता में बहुत ही उत्साह से सफल विजेता के रूप में भाग लेती आई हैं। वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में पढ़ती हैं।

हिंदुस्तानी कौन कहलाता है? बहुत लोग हिंदुस्तान में रहते हैं, हिंदुस्तानी मूवी देखते हैं, हिंदुस्तानी कपड़े पहनते हैं, और हिंदुस्तानी खाना खा सकते हैं, परंतु यह सच्चा हिंदुस्तानी नहीं है। सच्चा हिंदुस्तानी उसकी भाषा समझता है। वह उसके रीति-रिवाज समझता है, और समझ कर वह उसके रहन-सहन को अपनाता है। एक हिंदुस्तानी भारत का इतिहास जानता है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि एक हिंदुस्तानी भारत माँ को माँ समझता है। हम भारतवासी हैं और भारत हमारा देश है। हमें गर्व से बोलना चाहिए कि हम हिंदुस्तानी हैं और रहेंगे।

जब मैं एक साल की थी मैंने मेरा पहला शब्द बोला "माँ"। माँ एक हिंदी शब्द है। तो हाँ मेरा पहला शब्द हिंदी में था। उसके बाद मैंने हर शब्द हिंदी में ही सीखा। जब मैं छः साल की थी तो अमेरिका आई और घर में केवल हिंदी ही बोलती थी, लेकिन विद्यालय में आवश्यक था कि हम अंग्रेजी जानें। इसीलिए साथ-साथ पाठशाला में अंग्रेजी भी सीख रही थी। दो साल बाद मैंने हिंदी लिखना और पढ़ना सीखा। पहले मैंने व्यंजन और स्वर सीखे फिर मैंने गिनती सीखी; उसके बाद व्यंजन शब्द बने, शब्द वाक्य बने और बहुत से वाक्य जुड़ते-जुड़ते लेख बन गए। आज हिंदी लिखना, पढ़ना और बोलना हर दिन की एक आवश्यक बात हो गई है।

वैसे आज मैं हिंदी यू.एस.ए. की वुडब्रिज पाठशाला में उच्च स्तर-1 में पढ़ती हूँ, और इसी पाठशाला में मैंने हिंदी लिखना सीखा।

हिंदी सीखने के बाद मैं अपने दोस्तों में सबसे अलग हूँ। अगर कोई पूछे कि क्या कोई हिंदी जानता है तो मैं मेरा हाथ सबसे पहले उठाकर बोल सकती हूँ कि हाँ मैं हिंदी जानती हूँ। लोग चौंक जाते हैं जब वे देखते हैं कि मैं अच्छे से हिंदी लिखना, पढ़ना व बोलना जानती हूँ।

मुझे हिंदी सीखने से बहुत फायदा हुआ है जैसे कि मैं हिंदी में लिखी पूजा की पुस्तक पढ़ सकती हूँ। और भारत में अपने सभी रिश्तेदारों से हिंदी में बात भी कर सकती हूँ। हिंदी मूवी देख सकती हूँ। आज ही नहीं पर हमेशा हिंदी हमारे काम आएगी।

पदार्थ कुछ कम ही सही

पर पगों का नृत्य कम न हो....

आदित्य कुमार हिंदी यू.एस.ए. के स्नातक उत्तीर्ण छात्र होने के साथ-साथ हिंदी यू.एस.ए. के युवा कार्यकर्ता भी हैं। एडिसन हाई स्कूल में 10वीं कक्षा के मेधावी छात्र हैं व हिंदी ऑनर के विद्यार्थी हैं। शांत स्वभाव के आदित्य को भारतीय कथा कहानी सुनने में विशेष रुचि है। आदित्य का पूरा परिवार हिन्दी की सेवा में लगा हुआ है, और इन्हें स्वयंसेवक बनने की प्रेरणा अपने माता-पिता से ही मिली है।

एडिसन हाई स्कूल की हिंदी की शिक्षिका ने हिंदी दिवस पर हमें गृहकार्य में एक कहानी लिखने को कहा। तभी मैंने यह कहानी हिंदी दिवस पर ऑनर की कक्षा के लिए इसे लिखी। मेरी शिक्षिका को बहुत पसंद आयी, आशा है आपको भी पसंद आएगी।

एक हाऊसिंग सोसायटी में 15-20 बहुभाषी परिवार रहते थे। कोई बंगाली में बात करता तो कोई गुजराती में पूछता "केम छो?" कोई तमिल भाषी पोंगल मनाता तो कहीं पंजाबी भाषी लोहड़ी। ऐसा जान पड़ता था मानो साक्षात् भारत माता ही वास करती हों, इन परिवारों के रूप में। बहुत ही अच्छे से अपनी-अपनी भाषाओं में बात करते। अरे! यह क्या यहाँ कोई लड़ रहा है। यह क्या हो रहा है? ये दो अलग-अलग भाषी लोग एक-दूसरे की भाषा को नीचा देखाते हुए अपशब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। बंगाली बाबू चेन्नई से आए परिवार को तमिल भाषा का अनादर करते हुए उन की नकल कर रहे हैं। तो मराठी भाषी बंगाली भाषी परिवार के पहनावे व खान-पान पर ऊँगलियाँ उठा रहे हैं। "दूर के ढोल सुहावने" कहावत इस बस्ती में बसने वाले सभी 10 परिवारों पर बहुत अच्छे से लागू होती हुई दिखाई दे रही थी। आपस में लड़ते-लड़ते व एक-दूसरे पर ऊँगलियाँ उठाते-उठाते जब ये लोग थक गए तो रविवार की छुट्टी बिताने अपने-अपने घरों में चले गए।

लगता है, बिहारी बाबू के घर से कुछ उथल-पुथल की आवाजें आ रही हैं। लगता है, कुछ अच्छा घटित नहीं हो रहा। उनकी पत्नी बाहर आ कर जोर-जोर से रो रही हैं, व अपनी ही भाषा में कुछ कह रही हैं। बाकि सभी लोगों को लग रहा है शायद फिर किसी की लड़ाई हो रही है। परन्तु कुछ देर उनकी पत्नी का रूदन सुनकर एक-दो परिवारों के लोग बाहर आए व बिहारी बाबू की पत्नी से कारण पूछने लगे। परंतु अच्छे से समझ नहीं पाए क्योंकि वे अपनी ही भाषा में बता रही थीं। अंदर जाकर पता चला बिहारी बाबू को दिल का दौरा पड़ा है। 2-3 लोग उन्हें अस्पताल ले गए व समय पर उनका इलाज हो पाया। सभी पड़ोसियों ने बिहारी बाबू के परिवार की बहुत सहायता की। आज बिहारी बाबू अस्पताल से स्वस्थ अवस्था में घर लौटे हैं। सोसायटी के सभी लोग बहुत प्रसन्न हैं व रविवार की छुट्टी को जलसे का रूप देना चाहते हैं।

बिहारी बाबू के पूर्ण रूप से स्वस्थ होने के उपलक्ष में रविवार को सभी ने बहुत उत्साह से जलसे की तैयारियाँ कीं व अपने-अपने राज्य के मुख्य व्यंजन भी बनाए। परंतु यह क्या खाना खाते समय फिर वही, एक-दूसरे के भोजन, रहन-सहन व भाषा को नीचा दिखाने का सिलसिला आरम्भ हो गया। 10 मिनट तक इस प्रकार लड़ते हुए सभी को ध्यान आया कि वे लोग आज क्यों एकत्रित हुए हैं। तभी सभी ने प्रण लिया कि वे अब कभी भी भाषा व रहन-सहन पर एक-दूसरे को नीचा नहीं दिखाएंगे। आज से सभी लोग आपस में हिंदी भाषा में ही बात करेंगे। यदि क्षेत्रीय भाषा बोलेंगे भी तो एक-दूसरे को सिखाने के लिए। क्योंकि हिंदी भाषा राष्ट्र भाषा है इसीलिए सभी को आपस में बोलनी चाहिए व एक ऐसी भाषा जो सभी बोल समझ पाएँ ताकि बिहारी बाबू की पत्नी को जो परेशानी हुई वह कभी किसी के सामने दोबारा न आए व सभी अनेकता में एकता बनाए रखें।

अभिसार देव मुर्मु, ईस्ट ब्रुंस्विक की संचालिका मायनो मुर्मु और देवेन्द्र मुर्मु जी के सुपुत्र हैं। ये पाँचवीं कक्षा में पढ़ते हैं, और इन्हें तैरने, फुटबॉल खेलने, वॉयलिन बजाने, एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखना अच्छा लगता है। इन्हें अच्छा साहित्य पढ़ने और गणित विषय में भी रुचि है।

मेरी भारत यात्रा

अभिसार देव मुर्मु

नमस्ते, मेरा नाम अभिसारदेव मुर्मू है| मैं ईस्ट ब्रंसविक, न्यू जर्सी में रहता हूँ| मैं दस साल का हूँ| मै मध्यमा-२ का छात्र हूँ| मैं पहली बार नौ साल के बाद, अपने पिताजी के साथ भारत गया।

जब मैं और मेरे पिताजी दिल्ली (भारत की राजधानी) पहुंचे, मेरे बड़े पिताजी, मेरी बड़ी माँ और मेरे मामाजी हमें हवाई अड्डे पर लेने आए| हवाई जहाज की यात्रा सोलह घंटे की थी| मेरे बड़े पिताजी के घर में एक कुत्ता है| उनके कुत्ते का नाम दोंनोर है| मुझे मेरे चचेरे भाई और बहनों से मिलकर बहुत अच्छा लगा| मैंने मेरे चचेरे भाई के साथ क्रिकेट और फूटबाल खेली| हमने पतंगे भी उड़ाई और पटाखे फोड़े |

फिर मैं, मेरे पिताजी और मेरे बड़े पिताजी जमशेदपुर गए| सब परिवार के लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे| परिवार के सारे सदस्यों ने हमारा स्वागत किया| मैंने संगणक और क्रिकेट खेला| उस परिवार में बहुत सारे बच्चे हैं| मैंने पतंग उड़ाई और कारों से खेला| फिर हम रेल से भुबनेश्वर गए| वहाँ मैं नानी, मामा, मामी, मौसा, मौसी और ममेरे भाई तथा मौसेरे भाई-बहन से भी मिला| मैंने फिर से क्रिकेट खेली और दूरदर्शन देखा| एक दिन हम पुरी के तट पर भी गए|

फिर हम ताज महल देखने भी गए| मेरे पिताजी ने बहुत सारी चीज़ें खरीदीं, और मैंने ताज महल के बारे में और जानकारी प्राप्त की| मुझे हिंदी पढ़ते देखकर मेरे परिवार के सदस्य बहुत हैरान थे। मैंने उन्हे हिंदी USA के बारे में बताया तो सब लोग बहुत खुश हुए| फिर हम दादी को अमेरिका लेकर वापिस लौट आये|

लालित्या कर्रा, आयु: 16 वर्ष, वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो स्कूल, हाईस्कूल साउथ में ग्यारवीं कक्षा में पढ़ती है और वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल में उच्च स्तर की छात्रा है।

भगवान, मुझे शक्ति दो|	बाल बच्चों को दया कर दो|
कई सारे कष्ट मिटाने को आलस मत कर दो|	फूल और फलों से धरती को सुन्दर दिखला दो|
किसी को सहायता देने में साहस दो|	विश्व को प्रगति पथ पर चला दो|
सारी दुनिया सुबको सुन्दर दिखा दो|	सभी लोग को सच्ची भावना से जीवन बिताने दो|
सभी लोग को शान्ति दो|	सारी दुष्ट कामना हटा दो|
भगवान, मुझे शक्ति दो|	भगवान, मुझे शक्ति दो|

बहादुर श्याम

आशिमा शर्मा

बहुत समय पहले एक बड़ी चिड़िया थी। उसका घोसला एक पुराने, छोटे और कमजोर पुल पर था। चिड़िया का नाम मीना था। मीना ने एक अंडा दिया। वह अंडा भी बहुत बड़ा था। एक दिन बहुत तूफ़ान आया और वह पुल गिर गया। पुल के नीचे कुछ घर थे। मिल्ली, फिल्ली और तिल्ली ने अंडा गिरते हुए देखा। उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया। सब लोग बाहर आये और उन्होंने भी अंडा गिरता देखा। सब लोग जितनी तेजी से भाग सकते थे, भागने लगे। अचानक बहादुर श्याम आया। सब लोग रुक गये और उसे देखने लगे। बहादुर श्याम ने अंडे को बीच हवा में पकड़ लिया। सब खुश हो गये। उसने अंडे को जमीन पर रखा। उसने फुर्ती से टूटे पुल के टुकड़े-टुकड़े इकट्ठे किये। उसने एक हथौड़ी ली और एक पक्षी का विशाल घर बनाया। श्याम ने अंडा उठाकर उसके अन्दर रखा।

जब मीना आसमान से उतरी तो उसने बहदुर श्याम को धन्यवाद कहा, और बोली, "तुम बहुत बहादुर हो।" और वह खुशी से उस घर में रहने लगी।

"कोई बात नहीं" बहादुर श्याम बोला और गाँव वालों को घर जाने के लिए कहा।

"आप सच में वीर हो!" मिल्ली, फिल्ली और तिल्ली बोलीं।

मेरा नाम अर्नव शिवांश है| मैं साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला में उच्चत्तर स्तर का छात्र हूँ| जब मैंने हिंदी सीखना शुरू किया था तो सोचता था कि हिंदी पढ़ने का क्या फायदा, क्योंकि हम लोग अमेरिका में तो हिंदी नहीं बोलते हैं| लेकिन अब मैं हिंदी पढ़, लिख और बोल सकता हूँ| इसकी वजह से मुझे अपने दादा, दादी, नाना, नानी तथा भारत में सभी लोगो से बात-चीत करने में आसानी होती है| अब मुझे हिंदी पढ़ने में अच्छा लगता है, और मैं अगले साल से हिंदी पाठशाला में स्वयंसेवक के रूप में काम करूँगा|

आइये अब मैं आपको भारत के बारे में कुछ मुख्य तथ्य बताता हूँ ----

१- भारत का राष्ट्रीय गान --- जन गन मन २- भारत का राष्ट्रीय गीत --- वन्दे मातरम
३- भारत का राष्ट्रीय पंछी --- मोर ४- भारत का राष्ट्रीय पशु ---- चीता
५- भारत का राष्ट्रीय फूल - कमल ६- भारत का राष्ट्रीय झंडा --- तिरंगा (केसरिया, सफ़ेद और हरा बीच मे नीले रंग का चक्र)
७- भारत का राष्ट्रीय खेल --- हॉकी ८- भारत का राष्ट्रीय फल --- आम
९- भारत का राष्ट्रीय पेड़ -- बरगद १०-भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर -- सका एरा और चैत्र के महीने से शुरू होता है
११-राष्ट्रीय गान किसने लिखा ---- श्री रबिन्द्रनाथ टैगोरे १२- राष्ट्रीय गीत किसने लिखा --- श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी
१३-भारत के चार वेद -- ऋगवेद ,सामवेद , यजुर्वेद और अथर्ववेद
१४- कुम्भ मेला स्थान -- प्रयाग(इलाहाबाद), नासिक , उज्जैन और हरिद्वार

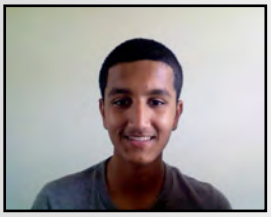

मेरी हिंदी विद्यार्थी से हिंदी सहायक शिक्षक तक की यात्रा

अंकुर पोद्दार

अंकुर नौवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं, और हिन्दी यू.एस. की वुडब्रिज पाठशाला में पढ़ते हैं। शांत स्वभाव के अंकुर को हिंदी की पुस्तकें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। अंकुर बॉस्केट बॉल के बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं।

बात उस समय की है जब मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ता था। मेरे माता-पिता ने मुझे हिंदी पाठशाला में भेजने का निर्णय लिया। पहले मुझे उनका निर्णय पसंद नहीं आया क्योंकि मैंने सोचा मैं तो घर पर हिंदी बोलता हूँ, तो फिर हिंदी पाठशाला जाने की क्या आवश्यकता है? इससे तो मेरा समय ही नष्ट होगा। परंतु फिर भी जब मैं पाठशाला जाने लगा तो मुझे अच्छा लगा। हिंदी कक्षा में मेरी शिक्षिका बड़े प्यार से मुझे हिंदी पढ़ाती थीं। मुझे हिंदी सीखने में आनंद आने लगा। खेल-खेल में मैंने बहुत हिंदी सीख ली। अब मुझे पता चला कि बोलना ही नहीं, हिंदी पढ़ना और लिखना भी आवश्यक है। जब मैंने हिंदी कक्षा में जाना आरम्भ किया, तब मैंने हिंदी महोत्सव में नाटक और कविता प्रतियोगिता में भाग लिया। वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में निरंतर तीन वर्षों तक मैंने नाटक में भाग लिया जिसमें मेरा मुख्य रोल हुआ करता था। कविता प्रतियोगिता में भी मैं फाईनल तक पहुँच जाता था। इसी कारण मेरे में आत्मविश्वास और बढ़ा। रेडियो पर भी हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थी होने के कारण मुझे अपने विद्यालय के साथ एक कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिला जिससे मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ। महोत्सव में भाग लेने से मेरा आत्मबल भी बढ़ा। जब मैं हिंदी सीखते-सीखते विशिष्ठ कक्षा में पहुँचा, तब मैंने हिंदी में मुहावरे और पत्र लेखन भी सीखा। किसको पता था कि हिंदी में इतने मुहावरे होते हैं? अब मैं कभी-कभी बातचीत में मुहावरे का प्रयोग करता हूँ तो मुझे अच्छा लगता है। अब जब भी मैं हिंदी फिल्म देखता हूँ तो मुझे सबटाईटल की आवश्यक नहीं पड़ती है। जब मैं भारत जाता हूँ तो सबसे हिंदी में बात कर सकता हूँ। अब मैं बिना किसी झिझक के फोन पर भी हिंदी में वार्तालाप कर सकता हूँ। मैं हिंदी पुस्तकें पढ़ सकता हूँ। मुझे हिंदी सीखने से बहुत लाभ हुआ है। जब मैं हिंदी पाठशाला से ग्रेजुएट हो गया तब मैंने सोचा कि मैं कैसे हिंदी से जुड़ा रह सकता हूँ। तब मैंने निश्चय किया कि मैं पाठशाला में जाकर बच्चों को हिंदी पढ़ाने में सहायता कर सकता हूँ। अब मैं हिंदी पाठशाला में प्रथमा-1 के सहायक शिक्षक के रूप में काम कर रहा हूँ। मेरे लिए यह बहुत ही गर्व की बात है कि जिस पाठशाला से मैंने हिंदी सीखी उसी पाठशाला में मैं हिंदी पढ़ा रहा हूँ। अभी मैं हिंदी महोत्सव के लिए अपनी कक्षा के बच्चों की सहायता कर रहा हूँ। यह एक बहुत ही अलग और अच्छा अनुभव है मेरे लिए। मुझे हिंदी पढ़ाने में सीखने से भी अधिक आनंद आ रहा है।

जब तक शक्ति और संगठन तुम्हारा सूत्र नहीं बनता

तब तक शांति तुम्हारे लिए सपना ही सिद्ध होगा....

Apex Technology Group, Inc. is a USA based global provider of IT Services and Solutions. Apex Technology Group is doing business since 2001, in New Jersey. Apex Technology Group's headquarters are located in Edison, New Jersey with global branch offices in USA, Canada, and India. The company has grown from strength to strength in the past few years and has been the recipient of very prestigious awards, namely:

"Award Winner in NJBIZ 2012 & 2011 & 2010 for Best Place to Work in New Jersey"
"Award Winner of 2011 & 2010 & 2009 INC 5000 for Fastest Growing Companies in US"
"Award Winner in NJBIZ 2009 & 2008 & 2007 Fifty Fastest Growing Companies"
"Award Winner in Business Defense and Advisory Council as 2009 Entrepreneur of the Year at Washington D.C by Newt Gingrich"
"Recognition from New Jersey Governor Jon S. Corzine in 2008"
"Award Winner by NJBIA 2007 Award for Excellence in the Job Creation Category"
"Citation from Frank R. Lautenberg, U.S Senator, State of NJ from constant growth of workforce in the U.S and overseas through smart planning in 2007"
"Special Senate Recognition from Robert Menendez, U.S Senator, State of NJ for outstanding and invaluable contribution to the business community"

Welcoming all candidates with US Citizenship, Green Card, OPT, CPT/F-1 students, H-1B/H4, L1/L2, and EAD for our consulting needs!

Apex Technology Group Inc. requires experienced and fresher's with B.S/M.S/MIS/MBA Degree for various openings in ***Business Analysis, UI/Web Developer, Programmer Analyst, Software Engineer, PL/SQL & Crystal Reports, PeopleSoft, Visual Basic, .Net, Java/J2EE, Data Warehousing Informatica, Business Intelligence - Reporting tools (Business objects/COGNOS), Modeling tools (ERWIN), Databases (Oracle/Sybase/SQL Server) Developer/DBA, Network Engineer etc***.

Upgrade your skills while looking for new job opportunities.

Useful Information

- Training batches are held every month which contains no more than 10 students.
- Training Batches run both on weekends and weekdays; walking distance from the NJ Transit Edison train station at: 2 Kilmer Road, Suite# C., Edison, NJ 08817.

For more information or email your resume at info@apextgi.com
Or
For more information call **Mr. Sarvesh** at (732) 964-1301 or email at Sarvesh@apextgi.com
Or
For more information call **Mr. Alok** at (732) 964-1303 or email at akumar@apextgi.com
Or
For more information call **Mr. Shankar** at (732) 964-1306 or email at Shankar@apextgi.com

मेरा नाम पूजा अग्रवाल है। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ और छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे पढ़ने का और तैराकी का शौक है। मैं तैक्वांडो की कक्षाएँ भी लेती हूँ। पिछले वर्ष मुझे ब्लैक बेल्ट की डिग्री भी मिली।

राजस्थान

स्तुति तिवारी,पूजा अग्रवाल

दिल थाम कर बैठिये, हम आपको राजस्थान की सैर कराने वाले हैं। राजस्थान बहुत विशेष स्थान है, और हम आपको यह दिखाना चाहते हैं। हम आपको राजस्थान के बारे मे बता सकते हैं, पर सचमुच का अनुभव करने के लिये आपको टिकट खरीदनी पड़ेगी। इस लेख को पढ़ने के बाद आपको राजस्थान जाने की एक लालसा बनेगी।

राजस्थान भारत के उत्तरपूर्व भाग में स्थित है। राजस्थान के उत्तर की ओर में पंजाब है। हरियाणा और उत्तर प्रदेश राजस्थान के उत्तरपूर्व में है। मध्य प्रदेश राजस्थान के पूर्व में है और गुजरात राजस्थान के दक्षिण में है। पश्चिम में पाकिस्तान है। राजस्थान दो भागों में विभाजित है। एक पहाड़ी है और दूसरा भाग बीहड़ है।

राजस्थान का इतिहास पाँच हज़ार साल पुराना है। राजस्थान १९५६ में एक राज्य बना था। राजपूत, नाथ, मीना, भील, अहीर, गुजर और जाट ने राजस्थान को ऐसे बनाने में बहुत योगदान दिया था। उन सभी लोगों ने अपनी ज़मीन और अपनी संस्कृति को बचाने के लिए बहुत मुसीबतें सही थीं। बहुत लोगों ने इस ज़मीन के लिए लड़ाई की थी। ये कुछ प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण शासक थे। **महाराजा सवाई जय सिंघ** अंबेर के शासक थे। अब अंबेर जयपुर कहलाता है। यह महाराजा का जन्म दिन नवम्बर १ पर है। महाराजा सवाइ जय सिंघ ११ की उम्र पर शासक बने थे। **माहाराजा राओ जोधा** का जन्म का दिन मार्च २८, १४१६। वह मंदोर के शासक थे। उन्होंने मंदोर, जालोर, बुंदि, अजमेर, और सखर पर कब्जा किया था। **पृथ्वी राज चौहन** का जन्म ११६० में हुआ था। वह १३ साल के ही थे जब वे शासक बने।

राजस्थान में दुनिया की बेहतरीन स्थापनाएँ हैं। ये कुछ जगह हैं जिनकी हमने सुन्दरता अपनी आँखों से देखी है। हम चाहते हैं कि जब भी आप राजस्थान जाएँ, आप इन स्थानों को ज़रुर से देखे। आप बिलकुल मंत्रमुग्ध हो जाएंगे। **नहाग्रा किला:** आरावाली पहाड़ पर है। इसके ऊपर से आपको पूरा शहर दिख सकता है। इस किले का नाम प्रिंस से आता है। **मोती डूंगरी:**मोती डूंगरी एक पहाड़ी किला है। पहले यह एक छोटा किला था जिसका नाम शंकरगढ़ था। फिर सवाई मान सिंह २ ने इसे स्कॉटिश कास्ल के तरह बनाया। **अम्बेर किला:** १५९२ में राजा मान सिंह ने इसको बनाना शुरू किया था। राजा जय सिंह ने इसका काम ख़तम किया.**हवा महल:** ये सिटी पेलेस के पास में स्थित है। महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने १७७९ बनाया था। इसमें ९५३ छोटी सी खिड़कियाँ हैं। **सिटी पैलस:** यह एक बहुत बड़ी जगह घेरती है। यह किला शहर का प्रतिकृति है। एक छोटे भाग में शाही परिवार रहेता है। बाकि सब एक संग्रहालय है।
राजस्थानी खाना युद्ध जैसी जीवन शैली से आता है। राजस्थानी खाने में विविधता है। जब हमने खाना बनाने वाले को राजस्थनी व्यंजन बनाते देखा तो हमने सोचा कि राजस्थानी खाना बनाना बहुत कठिन है। राजस्थानी खाना, पानी और हरी सब्जी की कमी से प्रभावित हुआ है। पानी की जगह औरतें दूध, छाछ और घी का प्रयोग करती थीं। सूखी दाल और फली स्वदेशी पौधों से उदारतापूर्वक प्रयोग किया जाता था। पर हमें दाल बाटी सबसे स्वादिष्ट लगी। बेसन एक बहुत प्रमुख घटक है और वो "खट्टा", "गट्टा की सब्जी", और "पकौड़ी" बनाने में प्रयोग करते है। चटनी हल्दी, धनिया, पोदीना और लहसुन से बनती है। सबसे जाना-माना राजस्थानी खाना दाल-बाटी और चूरमा का संयोजन है। लस्सी प्राकृतिक दही से मंथन होकर बनती है।

चपाती तरह-तरह के आटे से बनती है। मसालेदार खाना के अलावा राजस्थानी लोग मिठाई भी खाते हैं। राजस्थानी लोगों को जलेबी के साथ गरम दूध अच्छा लगता है। हर क्षेत्र की अपनी खास मिठाई है। जोधपुर और जैसलमेर के लड्डू प्रसिद्ध है। पुष्कर के मालपुवा, बीकानेर के रसगुल्ला, जयपुर के मिश्रीमावा और घेवर, जोधपुर की मावा कचोरी अजमेर का सोहन हलवा, अलवर से मावा बहुत ही प्रसिद्ध है।

राजस्थान अपने रंग-बिरंगे कपड़ों के कारण प्रसिद्ध है। सिर से पाँव तक पगड़ी, कपड़े, गहने और चप्पल सब आपके पहचान और आपके धर्म को स्थापित करता है। गाँवों मे हमने लोगों को ख़ास तरह के कपड़ों में नाचते हुए देखा। हमने राजस्थान के कुछ लहंगे खरीदे थे क्योंकि वह बहुत ख़ास है। हमने राजस्थानी कपड़े पहनकर देखे थे, और तस्वीर भी खिंचवाई थी। आदमी और महिला मौसम के अनुरूप कपड़े बनाते हैं। पगड़ी, अंगरखा, धोती या पायजामा कमरबंद या पटका आदमी का ज़रूरी भाग है। औरतें घाघरा, कुर्ती या चोली और ओढ़नी पहनती हैं। राजस्थान के आदमी बहुत अलग-अलग कपड़े पहनते हैं। जो हम भारत के दूसरे भागों में नहीं देख सकते हैं। उनके पगड़ी के रंग, शैली, और बाँधने का तरीका सब लोगों से अलग है। उत्सव के समय में धोती या पायजामा पहनते हैं। कभी कभार लोग रेशम धोती पहनते हैं, जिसमें जरी का तार होता है।राजस्थानी औरतें टखने तक की लम्बाई का घाघरा पहनती हैं। फिर भी वे थोड़ा छोटा होता है ताकि उनके पाँवों के गहने दिख सके। सबसे प्रसिद्द घाघरा लहेरिया, मोथ्रा और चुनरी के डिजाईन होते हैं। राजस्थानी गहने सब गहनों से अलग हैं। वह अनमोल हीरे, पन्ने और पत्थर से बनते हैं। यह तलवार के उपरी हिस्से में भी लगे होते हैं। राजस्थानी लोग मोचड़ी या जूती पहनते हैं । जूते खास कढाई से बनते हैं, जैसे वेलवेट और ब्रोकेड। जैसलमेर, जोधपुर, रामजीपुर और जोब्रे अपने जूतों के लिए प्रसिद्ध है। इस तरह हमने अलग-अलग तरह के लहंगे और जेवर वहाँ से ख़रीदे।

क्या आपको हमारी सैर पसंद आयी? राजस्थान हमारे लिये बहुत विशेष है। हम सब के लिये राजस्थान हमारा घर जैसा है। आप राजस्थान जाने के लिये अब टिकट खरीदने वाले हैं क्या?

श्रेयस भिसे, आयु: १२ वर्ष, मैं छटी कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं पिस्कैटवे Quibbletown पाठशाला में पढ़ता हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना, गिटार बजाना और गाना सुनना अच्छा लगता है।

भारत के त्यौहार (श्रेयस भिसे, ईशान आर्य, अभिषेक आर्य)

भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ पर सभी त्यौहार धूम-धाम से मनाये जाते हैं। यहाँ पर बीस (२०) से भी ज्यादा मुख्य त्यौहार हैं और हरेक त्यौहार की अपनी-अपनी विशेषता है।

दीपावली भारत की सबसे प्रमुख त्यौहार है। दीपावली शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। दीप + अवली, दीप यानि दिया और अवली का अर्थ है पंक्ति। दिपावली कार्तिक महीने की अमावस्या को मनाई जाती है। इसी दिन भगवन श्री राम चौदह वर्ष के वनवास की बाद अयोध्या वापस आये थे और लोगों ने अपने घरों को दीप जलाकर सजाया और अपनी ख़ुशी दिखाई।

दिपावली पाँच दिनों का त्यौहार है। पहला दिन धनतेरस, इस दिन लोग सोना-चांदी या घर में काम आने वाले बरतन खरीदते हैं।

दूसरा दिन नरकचतुर्दशी कहलाता है। इस दिन श्री कृष्ण भगवन ने नरक नाम की राक्षस को मारकर १६,००० औरतों को बचाया था।

तीसरा दिन दीपावली, इस दिन लक्ष्मीजी की पूजा करते है और घरों में दिए जलाकर रोशनी करते हैं।

चौथे दिन नया साल मनाया जाता है। इस दिन लोग आपस में मिलकर नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं।

पाँचवा दिन भाईदूज की रूप में भाई-बहन के प्यार के रूप में मानते हैं।
दिपावली पर घर की सफाई करते हैं, घर सजाते हैं, दिए जलाते हैं और मिठाइयाँ खाते हैं। बाजारों में दुकानें रोशनी और पटाखों से सजी रहती हैं। बच्चे भी पटाखे जलाकर खुश हो जाते हैं।

होली रंगों का त्यौहार है। घर-घर में गुजिया और तरह-तरह के पकवान बनाते हैं, सभी लोग एक-दूसरे को रंग लगते है और सभी खूब खुश होते हैं।

एक राजा था हिरण्यकश्यप, वह अपने आपको भगवान समझता था, इसलिए उसने आदेश दिया कि विष्णु भगवान की पूजा कोई नहीं करेगा लेकिन उसके बेटे प्रह्लाद ने फिर भी विष्णु भगवान की पूजा की, तो हिरण्यकश्यप की बहन होलिका ने अपनी गोद में लेकर प्रह्लाद को जलने की कोशिश की, लेकिन विष्णु भगवान ने प्रह्लाद को बचाया और होलिका जल गई। इसलिए हम लोग होली को बुरे पर अच्छाई की विजय के रूप में मानते हैं।

दशहरा हिन्दुओं का एक बड़ा त्यौहार है, इस त्यौहार को लगभग सभी लोग मानते हैं। इस दिन श्री राम ने रावण को मारा था, तब से हर साल लोग यह त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मानते हैं। न्यूजर्सी के एडिसन में दशहरा मेला हर साल होता है, वहाँ रामलीला भी होती है और बाद में रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के पुतले भी जलाते हैं और अंत में आतिशबाजी भी होती है। लगभग पूरे न्यूजर्सी से लोग इस मेले में आते हैं। इस साल दशहरा २४ अक्तूबर को होगा। सभी लोगों को इस मेले में घूमने जाना चाहिए।

रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र प्यार का त्यौहार है। यह त्यौहार श्रावण महीने की पूर्णिमा के दिन मनाते हैं। इस दिन बहाने अपने भाइयों को राखी बाँधती हैं और भाई अपनी बहनों की रक्षा का वचन देते हैं।

भारत का एक अन्य त्यौहार मकर संक्रांति है, इस त्यौहार पर तिल-गुड़ और खिचड़ी भी खाते हैं। इस दिन सभी के स्वस्थ होने के लिए पूजा करते हैं। इस त्यौहार को हम लोग नयी फसल का मौसम शुरू होने के रूप में भी मानते हैं। इस त्यौहार पर लोग रंग-बिरंगी पतंगें भी उड़ाते हैं।

जन्माष्टमी श्रावण महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन मानते हैं। इस दिन भगवान् श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। सभी लोग इस दिन पूजा और भजन करके श्री कृष्ण का जन्मदिन मानते हैं।

भरत में अलग-अलग जाति और भाषा के लोग अपनी विभिन्नता भूलकर बड़े उत्साह से हर त्यौहार मिलकर मनाते हैं, और खुशियाँ बढ़ाते हैं।

हिंदी यू.एस.ए. मध्यमा-२

हिंदी यू.एस.ए. का सदा ही यही उद्देश्य रहा है कि अमेरिका में पले-बड़े भारतीय बच्चे हिंदी भाषा सीख पाएँ। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से कर्मभूमि पत्रिका छापने का निर्णय एक सफल प्रयास रहा। हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में हिंदी सीख रहे बच्चों को इस पत्रिका के लिए लेख लिखने के लिए प्रोत्साहित करने से बड़ा कार्य कोई नहीं। इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों में हिंदी लिखने के लिए जागरुकता लाना ही मुख्य उद्देश्य है।

यहाँ हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों (मध्यमा-२ स्तर में पढ़ने वाले) द्वारा लिखी गई पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं। आप सभी पाठक इन्हें पढ़ने के बाद बच्चों का उत्साह वर्धन करने के लिए अपने विचार व प्रशंसनीय पत्र अवश्य भेजें, जो बच्चों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सकें। धन्यवाद

वुडब्रिज हिंदी पाठशाला: इस पाठशाला के विद्यार्थियों ने व्यवसायों के विषय को मुख्य रूप से चुना।

दिविज गुप्ता छठी कक्षा में पढ़ते हैं। ३ वर्षों से हिंदी यूएस.ए. की पाठशाला में पढ़ रहे हैं व निरंतर कविता प्रतियोगिता व हिंदी महोत्सव में भाग ले रहे हैं। हिंदी बहुत अच्छे से बोलते हैं। बॉस्केटबॉल में विशेष रुचि है। तैराकी भी करते हैं।

मेरे पड़ोस में मेरे मित्र का परिवार रहता है। उसके पिताजी कर्मचारी हैं। वे एक दफ्तर में काम करते हैं। हर रोज वे दफ्तर जाते हैं। उनका अधिकतर काम संगणक (कम्प्यूटर) पर होता है। वे संगणक से व्यवसाय सम्बंधी प्रगति-पत्र (report chart) निकाल कर अपने अफसर को देते हैं। उनका कार्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

१२ वर्ष की रिया सावला एडिसन में ७ कक्षा में पढ़ती हैं। रिया नृत्य, तैराकी व वायलिन सीखती हैं। शांत स्वभाव की रिया बहुत अच्छी हिंदी बोलती हैं व हिंदी की कक्षा में बहुत रुचि लेती हैं।

चिकित्सक: चिकित्सक सब लोगों की सहायता करते हैं। वे बहुत परिश्रम करते हैं। मेरी माँ भी एक चिकित्सक हैं। वे जर्सी सिटी के एक अस्पताल में कार्य करती हैं और बच्चों की सेहत का ध्यान रखती हैं। मेरी माँ घर पर मेरा, मेरे भाई का और मेरे पिताजी का भी बहुत ध्यान रखती हैं। मैं चिकित्सक का बहुत आदर करती हूँ। मैं भी बड़ी होकर चिकित्सक बनना चाहती हूँ।

यश जैन ८ वर्ष के हैं। तीसरी कक्षा में पढ़ते हैं। यश कविता प्रतियोगिता में भी एक विजेता के रूप में भाग लेते आए हैं व हिंदी महोत्सव में भी विशेष रुचि से भाग लेते हैं। एक होनहार विद्यार्थी हैं।

किसान :

मैंने कर्मभूमि में लिखने के लिए किसान का व्यवसाय चुना है। मैंने इसको चुना है क्योंकि मेरे पापा के दोस्त के पापा किसान हैं।

किसान बहुत मेहनत करता है। वह सभी ऋतुओं में काम करता है| वह हल जोतता है, अनाज उगाता है और वही अनाज हम खाते हैं। जब हम पढ़-लिख जाते हैं और शहरों में आ जाते हैं, तो हम किसान का

आदर नहीं करते क्योंकि हमें लगता है हम आधुनिक हो गए हैं और किसान तो गाँव में रहता है। अगर किसान अनाज नहीं उगाएगा तो हम खाना कैसे खाएँगे?
इसलिए किसान का व्यवसाय बहुत अच्छा है। और मैं किसान का बहुत आदर करता हूँ। मैं अपने पापा के दोस्त से बहुत बात भी करता हूँ और जब भारत जाता हूँ उनके पापा से भी मिलता हूँ।

मछुआरा :
मछुआरा मछली पकड़ता है। वह अपने साथ जल और हुक लेकर जाता है। और फिर मछली पकडकर बेचता है। पर हमें शाकाहारी होना चाहिए। मैं यह व्यवसाय पसंद नहीं करता। भारत में समुद्र के किनारे यह व्यापार बहुत होता है।

लॉरेंसविल्ल हिंदी पाठशाला: २०११ जून में लॉरेंसविल्ल के पुस्तकालय में हिंदी यू.एस.ए. द्वारा एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। मध्यमा-२ के बच्चों ने इसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं।

लॉरेंसविल्ल हिंदी पाठशाला: २०११ जून में लॉरेंसविल्ल के पुस्तकालय में हिंदी यू.एस.ए. द्वारा एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। मध्यमा-२ के बच्चों ने इसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं।

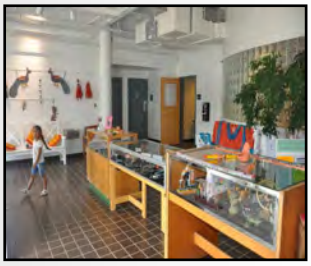

पिछले साल मैंने मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में रहने वाले आदिवासी लोगों द्वारा बनायी गयीं पीतल की मूर्तियों का प्रदर्शन किया था। उस कला को ढोकरा कहा जाता है। - चारू जैन

संजना और मैंने मिलकर बालीवुड के बारे में पोस्टर बनाया था। हमने मिलकर सभी परियोजनाओं को देखा। हमें बहुत आनंद आया। - नेहा वासुदेवन

पिछले साल गर्मियों के दौरान मैंने लॉरेंसविल्ल पुस्तकालय में हिन्दी यू.एस.ए. की प्रदर्शनी में भाग लिया था। मैंने एक भारतीय झोपड़ी का एक चित्र बनाया था। वहाँ कई अलग-अलग पोस्टर, कपड़े और भारतीय संस्कृति से जुड़ी, खेल, अभिनेताओं और त्योहारों की तस्वीरें थीं। मेरी पसंदीदा परियोजना थी, एक हाथ से बना मोर का पोस्टर। मुझे सच में बहुत मज़ा आया मेरी माँ के साथ भारतीय झोपड़ी बनाने में और अन्य परियोजनाओं को देखने में। - सत्या रेड्डी

जून २०११ में मैंने हिंदी यू.एस.ए. लॉरेंसविल्ल,न्यू जर्सी द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया था। यह प्रदर्शनी लॉरेंसविल्ल के पुस्तकालय में थी। मैंने भारत के लोकप्रिय खेल क्रिकेट पर एक चित्र बनाया था, जिसमें क्रिकेट का मैदान बनाकर इस खेल के नियम और अन्य जानकारी दी गई थी। प्रदर्शनी बहुत ही सुन्दर थी, दीवारों पर रंगीन चित्र, चुन्नियाँ और भारतीय पोशाकें लगी हुयी थीं। नीचे जमीन पर रंगोली बनी हुई थी। मुझे बहुत मजा आया। - नित्या कलापतापू

साऊथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला: साऊथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला के मध्यमा-२ के छात्रों ने हिंदू कैलेंडर के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखीं।

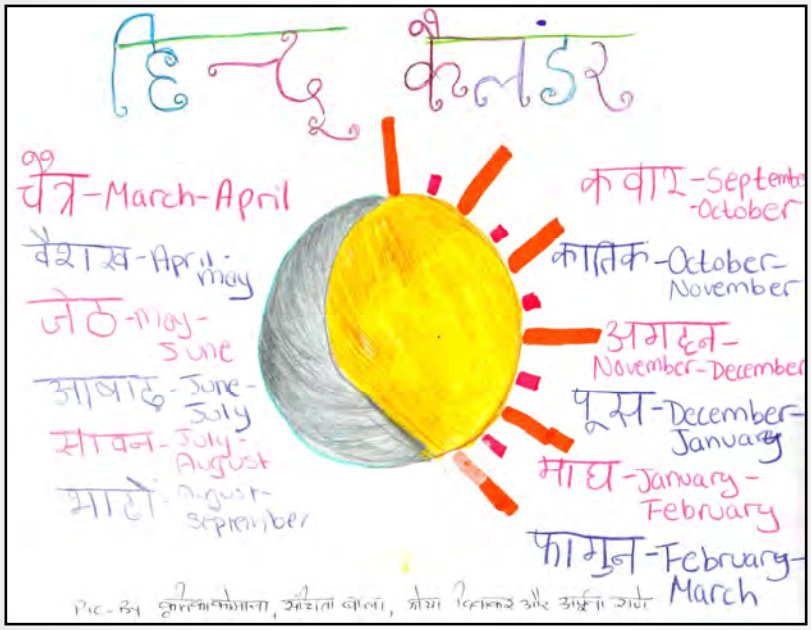

हिंदू कैलेंडर सूर्य और चाँद की स्थिति बताता है। हिंदू कैलेंडर को हम पंचांग भी कहते हैं। इसमें बारह महीनों को अलग-अलग नाम दिए गए हैं। नए चाँद के साथ हर नए महीने का आरम्भ होता है। - नील बंसल

चैत्र: मार्च-अप्रैल

हिंदू कैलेंडर का पहला महीना चैत्र कहलाता है। इस महीने में नया साल मनाया जाता है। गुड़ी पड़वा, उगादी ये अलग-अलग राज्यों में नए साल के नाम हैं। मार्च-अप्रैल में चैत्र की शुरुआत होती है। चैत्र में नवरात्रे भी होते हैं व राम नवमी वाले दिन भगवान रामचंद्र जी का जन्मदिन भी मनाया जाता है। - रोमा बोर्डवेकर

बैसाख: अप्रैल-मई

बैसाख के माह में बैसाखी का त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार उत्तर भारत के पंजाब राज्य की विशेषता है। बैसाख के महीने में पकी हुई फसल कटती है। गौतम बुद्ध का जन्मदिन भी इसी मास में आता है। - अर्नव गुट्टा

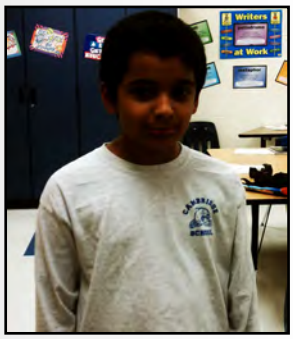

जेठ : मई-जून

जेठ गर्मी के माह को कहते हैं। गर्मी में भारत में मीठे-मीठे आम खाने को मिलते हैं। भारत में जेठ के महीने में पाठशाला में छुट्टियाँ हो जाती हैं और सभी छुट्टियाँ बिताने बाहर घूमने के लिए जाते हैं। - तनिश तित्रकाल और नरेश राव

आषाढ़: जून-जुलाई

हमारे यहाँ अमेरिका में छुट्टियाँ आषाढ़ के महीने में होती हैं। अमेरिका में वाटर पार्क और समुद्र के किनारे घूमने जाने इसी माह में सबसे ज्यादा अच्छा लगता है। - अपूर्वा राणे

सावन: जुलाई-अगस्त

भारत में सावन माह को मानसून भी कहा जाता है। इस माह में गर्मी के बाद बारिश की प्रतीक्षा होती है। रक्षाबंधन, तीज और जन्माष्टमी जैसे त्यौहार सावन माह में आते हैं। रक्षाबंधन से सभी त्यौहारों की शुरुआत होती है। - नेहा वडैपल्ली

भाद्रपद अगस्त-सितम्बर

हिंदू कैलेंडर के छठे महीने को भाद्रपद/भादों कहते हैं। यह मास अगस्त-सितम्बर में आता है। बारिश से भरपूर इस माह में गणेश चतुर्थी और ईद जैसे त्यौहार मनाए जाते हैं। - सृष्टि शाह

आश्विन: सितम्बर-अक्टूबर

आश्विन के माह में दशहरा मनाया जाता है। दशहरे के दिन रावण को जलाते हैं। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। अमेरिका में इस माह में पतझड़ (फॉल) की ऋतु होती है। - वैश्नवी मोरे

कार्तिक: अक्टूबर-नवम्बर

कार्तिक माह में गुजरात में नया साल मनाया जाता है। दिवाली का त्यौहार व भाई दूज भी इसी माह मनाया जाता है। दिवाली कार्तिक की अमावस्या (न्यू मून) को मनाते हैं। बहुत सी मिठाइयाँ खाते हैं और पटाखे भी जलाते हैं। भाई दूज के दिन बहन अपने भाई को टीका करती है और नारियल, मेवे देती है। - रोमा बोर्डवेकर

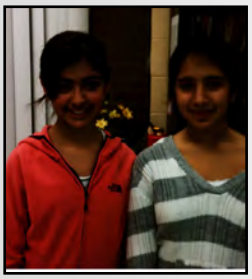

मार्गशीष: नवम्बर-दिसम्बर

नवम्बर से दिसम्बर के महीने को मार्गशीर्ष कहते हैं। इस महीने ठंड शुरु हो जाती है और क्रिसमस भी मनाया जाता है। - आरुषी भारद्वाज

पौष : दिसम्बर-जनवरी

पौष के माह में बहुत ठंड पड़ती है। अमेरिकन नया साल एक जनवरी पौष के माह में ही आता है। लोहड़ी का त्यौहार भी इसी माह में आता है। यह त्यौहार उतरी भारत में बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है। - प्रियंका शाह

माघ: जनवरी-फरवरी

माघ के महीने में महा शिवरात्रि मनाई जाती है। शिवजी के भक्त बड़ी धूम-धाम से शिवजी का जन्मदिन पूजा करके व व्रत करके मनाते हैं। - एशनी पंडिता

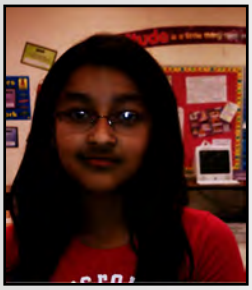

फागुन : फरवरी-मार्च

फागुन में होली का त्यौहार मनाते हैं। होली में आपस में मिलकर रंग लगाते हैं। फागुन हिंदू कैलेंडर के अनुसार साल का अंतिम महीना होता है। फगुन में बसंत ऋतु भी शुरु हो जाती है। - युक्ता चंद

सेवा बताई नहीं जाती

सेवा ढूँढी जाती है....

संकल्प जब विकल्पों से रहित होता है

तभी सिध्दी के द्वार तक पहुँचता है....

आओ एक प्रण करें

जिया जोशी

जिया जोशी आयु: ७ वर्ष, प्लेंसबोरो टाउन सेंटर ए लेमेंट्री स्कूल में दूसरी कक्षा की छात्रा हैं और वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल में पढ़ती हैं|

जय जोशी - आयु - 13, प्लेंसबोरो कम्युनिटी मिडिल स्कूल में सातवीं कक्षा के छात्र हैं और वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल में पढ़ते हैं|

जय जोशी

हिंदी के लिये रण करें
रण भूमि में चारों ओर
घोर शंखनाद हो
हिंदी हिंदी और हिंदी में
बस हिंदी का संवाद हो
हिंदी के शत्रुओं की
निद्रा हम हरण करें
हिंदी के लिये रण करें
आओ एक प्रण करें

विजय संग्राम के इस पथ पर
हिंदी ध्वज ही लहराये
राजतिलक कर दो हिंदी का
हिंदी जग में छा जाये
देश के कोने कोने में
हिंदी रथ का परिक्रमण करें
हिंदी के लिये रण करें
आओ एक प्रण करें

जिसने छीना हिंदी का पद
उसको न हम माफ करेंगे
हिंदुस्तान की गली गली से
यह कचरा हम साफ करेंगे

बने हुए इन भवनों का
चलो आज अतिक्रमण करें
आओ एक प्रण करें
हिंदी के लिये रण करें
हिंदी का रवि जब
आसमान में छायेगा
जग में फैला अंधियारा
पल में ही मिट जायेगा
हिंदी को लग गया है जो
अमावस्या का ग्रहण हरें
आओ एक प्रण करें
हिंदी के लिये रण करें
हे हिंदी की सेना तुम जागो
शत्रुओं को दूर भगा दो
मद से चूर हुए शत्रु पर
भाषा का अंकुश लगा दो
नतमस्तक हो शत्रु
हिंदी के चरणों में शरण धरें
आओ एक प्रण करें
हिंदी के लिये रण करें

- रवीन्द्र कुमार खरे

हिन्दी पाठशालाओं की सूची

पाठशाला	सम्पर्क
चेरी हिल हिन्दी पाठशाला, साउथ जर्सी	रचिता सिंह, 609-248-5966
प्लेंसबोरो/वेस्टविंडसर हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	गुल्शन मिर्ग, 609-662-0614
एडीसन हिन्दी पाठशाला, नार्थ-सेंट्रल जर्सी	राज/सुमन मित्तल, 732-382-8635 मानक काबरा, 732-662-1179 गोपाल चतुर्वेदी, 908-720-7596
लावरेंसविल हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	रत्ना पाराशर, 609-481-7003 मीना राठी, 609-273-8737
फ्रेंकलिन (सोमरसेट) हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	दलवीर राजपूत, 732-422-7828
ईस्ट ब्रुंसविक हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	मैनो मुर्मो, 732-763-2337
वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	अर्चना कुमार, 732-623-9918
साउथ ब्रुंसविक हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	उमेश महाजन, 732-274-2733
मोनरो टाउनशिप हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	सुनीता गुलाटी, 732-762-2692
पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	दीपक/नूतन लाल, 732-428-7340
ब्रिजवाटर हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	राज बंसल, 732-947-4369
जर्सी सिटी हिन्दी पाठशाला, नार्थ जर्सी	मुरलीधर तुल्सियान, 201-892-7898
मोंटगोमरी हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	शिव/सुधा अग्रवाल, 908-359-8352
होल्मडेल हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	सुषमा कुमार, 732-264-3304
चैस्टरफील्ड हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	शिप्रा सूद, 609-920-0177
नॉर्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	गीता टंडन, 732-789-8036
नॉरवॉक हिन्दी पाठशाला, कनैक्टिकट	बलराज सुनेजा, 203-613-9257 विक्रम भंडारी, 203-434-7463
इजलिन हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	वन्दना गुलियानी, 732-777-2027
माउंट ओलिव हिन्दी पाठशाला, नॉर्थ जर्सी	अलामेलू अन्नामलाई, 973-527-4859
फ्लशिंग बेसाइड़ हिन्दी पाठशाला, न्यू यार्क ब्रुकलिन हिन्दू मंदिर, न्यू यार्क	सुमन गुप्ता, 718-539-5053
ऐलनटॉउन हिन्दी पाठशाला, पेंनसिलवेनिया	अशोक खंडेलवाल, 610-351-0071
नॉर्थ पोटोमैक हिन्दी पाठशाला, मैरीलैंड	मीनू गुप्ता, 301-605-7939
जैक्सनविल हिन्दी पाठशाला, फ्लोरिडा	ज्योति चतुर्वेदी, 904-363-3609
चिनमया मिशन हिन्दी पाठशाला, जुपीटर, फ्लोरिडा	उदय वाघरे, 561-281-6857
केनेसाव हिन्दी पाठशाला, जार्जिया	राधा अग्रवाल, 770-420-4124
रोचेस्टर हिन्दी पाठशाला, मिनेसोटा	सविता कटारिया, 507-289-2580
जैन हिन्दी पाठशाला, मिशीगन	विनीता पारेख, 248-790-2527
जैन हिन्दी पाठशाला, कैलीफोर्निया	सेल्स जैन, 714-529-5874

यदि आप अपने क्षेत्र में एक नई हिन्दी पाठशाला शुरु करना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. को 1-877-HINDIUSA पर सम्पर्क करें।

There Can be Relief

from:

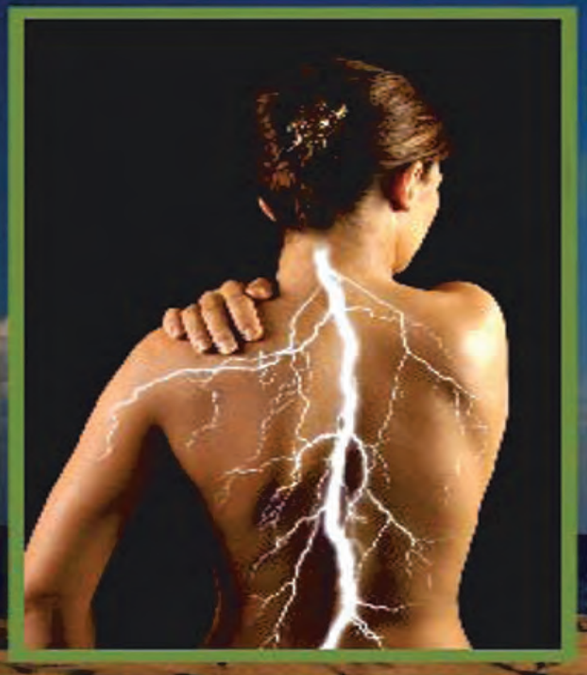

- Arthritis
- Back Pain
- Cancer Pain
- Compression Fractures
- Diabetic Neuropathy
- Failed Back Surgery
- Fibromyalsia
- Herniated Discs
- Muscular Pain
- Neck Pain
- Osteoporosis
- Post Herpetic Neuralgia
- RSD
- Sciatica
- Shoulder Pain
- Spinal Stenosis

UDAY N BHATT, MD | pain management

Interventional Pain Fellowship Trained

Diplomat American Board of Pain Medicine, Diplomat American Board of Interventional Pain.

NJSAPC Spine & Pain Center

Specializing in Interventional Pain Management Procedures

Professional Center

Hamilton Square, NJ 08690 • 2109 Klockner Road

Monroe, NJ 08831 • 2 Research Way, Suite 206 • behind CVS on Applegarth Road

Flemington, NJ 08822 • 5 Walter E. Foran Blvd, Suite 2005

Call Toll Free: 1-877-SPINE-81 • 1-609-587-6070 • Fax: 1-609-587-7080 • www.njsapc.com

ttnjspine0412

Announcing... **A PROVOCATIVE NEW BOOK**

BEING DIFFERENT

An Indian Challenge to Western Universalism

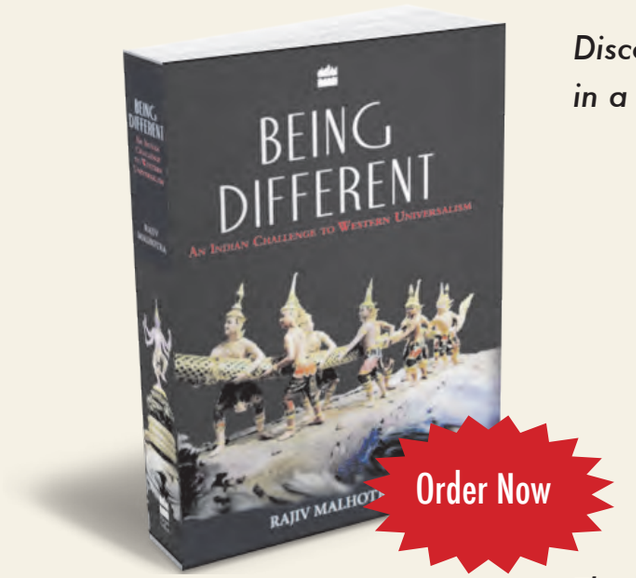

HarperCollins Publishers India

Price: $19

Discover how our cultural proclivities give us an "Indian advantage" in a competitive world:

- Know our proven ability to manage profound differences and complexities, engage creatively.
- Appreciate our peaceful integration of many diverse cultures, religions and philosophies.
- Harness our cultural and philosophical capital for competitive advantages in order to lead rather than follow in global affairs.
- Be clear about defining Indian identity and soft power.
- Learn how dharma teaches us to overcome age-old conflicts between religion & science, believers & atheists, insiders & outsiders.

The best-selling author shows how to reverse the gaze to look at the West, repositioning Indian civilization from being the observed to the observer.

"BEING DIFFERENT provides intriguing answers to some of the questions that perplex both Indians and other India watchers. How are Indian businesses able to thrive despite our country's weak infrastructure? What accounts for the instinctive environmentalism observed in Indian culture or the prolific and creative outpourings of Bollywood? How have jatis served as a structure of business self-organization and decentralized governance? Are there cultural factors that help our competitiveness in certain industries, such as IT, and that do not apply to other industries?" - ***R. Vaidyanathan, Professor of Finance, Indian Institute of Management, Bangalore.***

"A fitting and major response to Samuel Huntington's position on 'who are we?' as the West." - ***John M. Hobson, Univ. of Sheffield, UK***

"This work commands an amazingly wide scholarship across Indian civilization, Western civilization, and comparative philosophy and religion." - ***R. Puligandla, Univ. of Toledo***

"Much reflection and many a good argument should follow upon Malhotra's unique achievement." - ***Francis Clooney, Jesuit and Harvard Professor***

Buy at Hindi Mahotsav on May 19-20, 2012

Order From: www.BeingDifferentBook.com

Author contact: rajivmalhotra2007@gmail.com